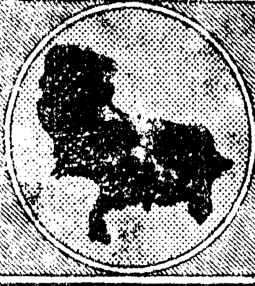
संयुक्त प्रान्त



अङ्क
'भूगोल'
वर्ष—२०
षष्ठ खण्ड
संख्या १०
फर्वरी १९४४

वार्षिक मूल्य 3)
इस प्रति का ।।)

इस विशेषाङ्क का
मूल्य ३)

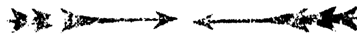
सम्पादकः—रामनारायण मिश्र, बी० ए०
प्रकाशकः—
'भूगोल'-कार्यालय,
इलाहाबाद

भूगोल के बीसवें वर्ष का विशेषांक

इस (फर्वरी) अङ्क में संयुक्तप्रान्त के जिलों का संक्षिप्त परिचय समाप्त हो जाता है। केवल कुछ नक़शे और चित्र शेष रह जाते हैं। वे मार्च मास के अंक के साथ प्रकाशित होंगे और अप्रैल मास के प्रथम सप्ताह में पाठकों की सेवा में पहुँच जायँगे। जो पाठक प्रान्त के सब खण्डों की जिल्द एक साथ बँधाना चाहते हैं वे सप्तम खण्ड की प्रतीक्षा अवश्य करें।

भवदीय कृपाकांक्षी
रामनारायण मिश्र
"भूगोल"-सम्पादक

विषय-सूची



बहरायच

बहरायच का जिला अवध की फैजाबाद कमिश्नरी का अंग है। यह घाघरा के पार वाला जिला है। ८० मील तक इसकी उत्तरी सीमा नैपाल से बनी हुई है। यह २७.४ और २८.२४ उत्तरी अक्षांशों और ८१.३ और ८२.१३ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। बहरायच एक त्रिभुजाकार जिला है। इसका शीर्ष उत्तर की ओर है। इसकी एक भुजा दक्षिण की ओर है। एक भुजा उत्तर-पूर्व और दूसरी भुजा दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ९४ मील और चौड़ाई ६२ मील है। इसका क्षेत्रफल २६२७ वर्गमील है। बहरायच के उत्तर और उत्तर-पूर्व में नैपाल राज्य है। यह सीमा कृत्रिम है। सीमा के पास खाईं और नियत दूरी पर पत्थर के खम्भों की पंक्ति बना दी गई है। इनके दोनों ओर काफी चौड़ाई में जंगल साफ कर दिया गया है। तुलसीपुर परगने में खम्भों की पंक्ति हिमालय की बाहरी निचली पहाड़ियों की तलहटी के पास है। शेष भाग में यह सीमा कछारी जंगल में होकर जाती है। नानपारा और धर्मपुर की सीमा के पास मुर्तिहा से चितलहुआ तक सरजू नदी सीमा बनाती है। सरजू की गहरी धारा की सीमा मानी जाती है। दूसरे भागों में सीमा के दोनों ओर ३० फुट चौड़ी तटस्थ पेटी छोड़ दी गई है। अवध को अँग्रेजी राज्य में मिलाने के समय यह सीमा हिमालय के पास थी। लेकिन नैपाल राज्य ने गदर में अँग्रेजों की सहायता की उसके उपलक्ष में सारदा नदी और गोरखपुर जिलों के बीच का वह सारा निचला प्रदेश नैपाल राज्य को लौटा दिया गया जो सिगौली की संधि से १८१५ में नैपाल से ले लिया था। १८७५ में बघौरा ताल से आरा नदी तक निचली पहाड़ियां नैपाल को दे दी गई। पुरानी सीमा इनकी चोटियों से बनती थी। नई सीमा इन पहाड़ियों की तहटी से मानी जाने लगी। बहरायच के पश्चिम में कौरियाला नदी सीमा बनाती है। पहरवार (जो चौका नदी का अधिकांशजल अपने साथ लाती है) के संगम के बाद निचले मार्ग में यह घाघरा कहलाती है। नैपाल से पहरवार तक कौरियाला नदी खीरी और बहरायच के बीच में सीमा बनाती है खीरी के दक्षिण में दक्षिणी सिरे तक सीतापुर का जिला बहरायच की पश्चिमी सीमा बनाता है। दक्षिण में बाराबंकी का जिला है। दक्षिण-पूर्व में गोंडा जिला है। १८६५ में सीमा को सीधा और ठीक रखने के लिये इस जिले के कुछ भाग गोंडा में मिला दिये गये। गोंडा जिले का तुलसीपुर परगना बहरायच में मिला दिया गया। बहरायच का भिटौली परगना बाराबंकी जिले में मिला दिया गया। यह परगना घाघरा के दक्षिण में स्थित है। बाराबंकी से इसका प्रबन्ध करना अधिक सुगम था।

बहरायच जिले में तीन प्राकृतिक विभाग हैं। उत्तर-पूर्व में राप्ती नदी का प्रवाह-प्रदेश है। पश्चिम में कौरियाला, और घाघरा का प्रवाह-प्रदेश है। दोनों के बीच में एक लम्बा तंग और कुछ ऊंचा मैदान है। यह दोनों ओर की निचली भूमि से औसत से ४० फुट ऊंचा है। और दोनों ओर की नदियों के बीच में जलविभाजक बनाता है। इस मैदान की चौड़ाई बारह-तेरह मील है। इसमें चरदा परगने का पश्चिमी आधा भाग, नानपारा का पूर्वी भाग और इकौना का दक्षिणी आधा भाग और समूचा बहरायच परगना शामिल है। राप्ती के प्रवाह-प्रदेश में चरदा का शेष आधा भाग, इकौना का उत्तरी भाग और भिनगा और तुलसीपुर के समूचे परगने शामिल हैं। घाघरा प्रदेश में उत्तरी सिरे पर धरमनपुर परगने का निचला बन प्रदेश, नानपारा का पश्चिमी भाग और फखरपुर और हिसामपुर के समूचे परगने शामिल हैं।

इनके अतिरिक्त यहां तराई का प्रदेश है। तराई का प्रदेश तुलसीपुर और भिनगा प्रदेश में स्थित है। नैपाल की सीमा के पास नानपारा के कुछ जिले भी तराई में शामिल हैं। तराई का प्रदेश बहुत नीचा है। वर्षा ऋतु में यह प्रायः सब का सब पानी में डूब जाता है। यहां चिकनी मिट्टी है। केवल कहीं कहीं दुमट है। तराई के इस भाग में धान बहुत होता है। धान को सींचने

के लिये यहां वर्षा प्रायः पर्याप्त हो जाती है। केवल कहीं कहीं छोटी छोटी पहाड़ी नदियां हैं जो ग्रीष्म ऋतु में सूख जाती हैं।

मध्यवर्ती ऊंचा मैदान प्रायः समतल है। इसमें कहीं कहीं जंगल है। निचले भाग में चिकनी मिट्टी में धान की फसल अच्छी होती है। कहा जाता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक यहां सब कहीं जंगल था। अधिकतर भाग में हलकी दुमट मिट्टी है।

राप्ती की घाटी इस ऊंचे मैदान के उत्तर में स्थित है। यह घाटी ऊंचे किनारे के पास बहने वाली भकला या सिंधिया नदी से तराई तक चली गई है। इस प्रदेश में एक दो बड़ी झीलें और कुछ दलदल हैं। एक दो पानी के सोते हैं जहां पहले नदी का पुराना मार्ग था। यहां अधिकतर कछारी दुमट मिट्टी है। कुछ रेतीले स्थानों को छोड़कर इस प्रदेश की भूमि बड़ी उपजाऊ है। राप्ती नदी अपनी बाढ़ के साथ उपजाऊ कांप (मिट्टी) लाती हैं। जब राप्ती अपना मार्ग बदलती है तभी इससे हानि होती है। घाघरा की घाटी पश्चिमी ऊंचे किनारे से नदी की गहरी धारा तक फैली हुई है। उत्तर में इसकी चौड़ाई १० मील है। दक्षिण की ओर इसकी चौड़ाई ३५ मील हो गई है। कहते हैं किसी समय घाघरा नदी ऊंचे किनारे के पास बहती थी। इसके पश्चात पश्चिम की ओर लगातार हटकर वर्तमान मार्ग में पहुँच गई। यह मैदान सब ओर छोटी छोटी असंख्य धाराओं से कटा फटा है। टेढ़ी होने पर भी यह धारायें प्रधान धारा की समानान्तर हैं। अधिकतर धारायें वर्षा समाप्त होने पर सूख जाती हैं। पुराने मार्गों के रुंध (भर) जाने से यहां कई झीलें बन गई हैं। यहां की मिट्टी राप्ती घाटी के समान उपजाऊ है। लेकिन बाढ़ के बाद घाघरा अपने मार्ग में बालू छोड़ जाती है। जिले में भूड़ या बलुई भूमि अधिक नहीं है। लेकिन जो भूड़ इस जिले में पाई जाती है वह प्रायः घाघरा के समीप ही फैली हुई है। कौरियाला नदी शीशा पानी के पास भरथपुर से २४ मील उत्तर की ओर नैपाल के पहाड़ों से निकलती है। पहाड़ के आगे गहरी निर्मल और शान्त धारा में बहती है। पहाड़ी मार्ग में यह बड़े वेग से बहती है। यह अपने साथ बहुत से छोटे छोटे पत्थर बहा लाती है। नैपाल के भावर और तराई के १८ मील में इसका मार्ग साल के जंगलों से घिरा है। इसकी तली पथरीली है। उत्तरी-पश्चिमी सिरे पर यह बहरायच जिले में प्रवेश करती है। यहां मोहन नदी इसमें मिलती है। चार मील आगे भरथापुर के नीचे गिरवा नदी इसमें मिलती है। इस संगम के आगे घाघरा की तली रेतीली हो जाती है। शिताबा घाट के ऊपर इसमें दाहिने किनारे पर खीरी सरजू मिलती है। अधिक आगे कटई घाट के पास दहवर नदी इसमें मिलती है। इसी में सारदा या चौका का पानी मिलता है। इसके पास ही सरजू नदी मिलती है। कटई घाट के नीचे इसे घाघरा नाम से पुकारते हैं। फखरपुर और हिसामपुर परगनों को पार करने के बाद धुर दक्षिणी सिरे पर घाघरा जिले के बाहर चली जाती है। गिरवा नदी नैपाल से निकलती है और हिमालय की बाहरी-पर्वत श्रेणियों के पास कौरियाला में मिल जाती है। शीशापानी के पास यह एक नद कन्दरा बनाती है। उत्तरी-पूर्वी सिरे पर बाजपुरगांव के पास यह बहरायच जिले में प्रवेश करती है। इसमें कौरियाला से कम पानी नहीं रहता है। शीतकाल में भी यह बड़ी तेज बहती है। इसका मार्ग जिले के जंगली भाग में पड़ता है। बाजपुर भरथापुर, दमदमा, कटेस इसके पड़ोस के गांव हैं।

सरजू या बबई नदी सालारपुर गांव के पास जिले में प्रवेश करती है। कुछ मील तक यह नैपाल की सीमा बनाती है। इसके आगे फिर जिले के भीतर घुसकर धरमनपुर और नानपारा परगनों के बीच में सीमा बनाती है। यह प्रायः दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। लेकिन इसका मार्ग बहुत टेढ़ा है। नानपारा के पास शाह सजन के मकबरे तक यह ऊंचे मैदान के किनारे को छूती हुई बहती है। इसके आगे यह दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ती है और कटई घाट के पास कौरियाला में मिल जाती है। पुरानी सरजू ऊंचे किनारे के पास बहती है। फिर यह घाघरा के निचले प्रदेश को

पार करके गोंडा जिले में पस्का के पास घाघरा में मिल जाती है। नई सरजू की धारा बड़ी तेज़ है। मुलायम मिट्टी को काटकर यह अपना मार्ग प्रायः बदलती रहती है। लेकिन बाढ़ के बाद यह बड़ी उपजाऊ मिट्टी छोड़ देती है। पुरानी सरजू की धारा बड़ी मन्द है।

टेढ़ी नदी बहरायच शहर से तीन मील की दूरी पर चित्तौर ताल के पास निकलती है और मैदान के ऊंचे किनारे के पास पास दक्षिण की ओर बहती है। कुछ दूर तक यह हिसामपुर परगने और गोंडा के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे पूर्व की ओर मुड़कर यह गोंडा जिले में प्रवेश करती है। यह मन्दवाहिनी छोटी नदी नाव चलाने योग्य नहीं है। इसकी धारा में अक्सर सिवार भरी रहती है। यह एक बड़ी नाली के समान मालूम होती है।

राप्ती नदी मध्यवर्ती मैदान के उत्तरी किनारे पर बहती है। नैपाल से आकर गुलरिहा गांव के पास राप्ती बहरायच जिले में प्रवेश करती है। इस जिले में राप्ती का मार्ग ८१ मील लम्बा है। यदि राप्ती सीधी रेखा में बहती तो इसकी लम्बाई इस जिले में ४० मील से अधिक न होती। लेकिन यह बड़ी टेढ़ी चाल से बहती है। थोड़ी थोड़ी दूर पर इसमें मोड़ हैं। बहरायच जिले में प्रवेश करने के बाद यह फिर नैपाल की सीमा की ओर मुड़ जाती है और भगरा गांव को अलग कर देती है। वहां (ककरदारी) से यह दक्षिण की ओर बहती है और कुछ मील तक भिनगा चरदा परगनों के बीच में सीमा बनाती है। नवादा भोजपुर के नीचे यह भिनगा परगने में प्रवेश करती है। लगातार मोड़ बनाती हुई यह भिनगा कस्बे के पास बहकर दक्षिण-पूर्व से पूर्व की ओर मुड़ती है। इकौना में यह फिर दक्षिण की ओर हो जाती है। नरायनजोत से आगे यह बहरायच और गोंडा जिलों के बीच में सीमा बनाती है। इकौना से पांच मील पूर्व डेंगरा जोत में यह बहरायच जिले को छोड़कर गोंडा में प्रवेश करती है। तुलसीपुर की तराई से आनेवाली कैन कई छोटी छोटी धाराओं का पानी लेकर भिनगा के नीचे लछमनपुर गुरुपुरुवा के पास राप्ती में मिल जाती है। इसकी दूसरी सहायक भकला नदी नैपाल की तराई में निकलती है। बहुत दूर तक जिले में राप्ती से प्रायः चार मील पश्चिम की ओर समानान्तर बहती हुई यह चरदा के जंगल और इकौना परगने को पार करके गोंडा जिले की सीमा के पास (डेंगरा जोत गांव के पास) राप्ती में मिल जाती है। निचले मार्ग में इसे सिंधिया कहते हैं। गरमी में इसमें पांज हो जाती है। पर अचानक वर्षा हो जाने पर इसमें २० घंटे में २० फुट ऊंची बाढ़ आ जाती है।

झीलें—ठीक ठीक पानी न बह सकने के कारण इस जिले में अनेक झीलें हैं। और ताल सिंचाई के लिए यह बड़ी उपयोगी हैं। इनमें कुछ अधिक बड़ा है। पयागपुर के पास बघेल ताल साढ़े चार मील लम्बा है। इसे पुराने समय में घाघरा नदी ने ही बनाया था। बहरायच शहर में चित्तौर ताल है जहां से टेढ़ी नदी निकलती है। गनौर और अनार कली झीलें भी काफी लम्बी हैं। निगरिया झील, मैला ताल, रेहवा और मायताल भी प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त यहां छोटी छोटी झीलें बहुत हैं।

नैपाल की सीमा के पास बहरायच जिले की ३३४ वर्ग मील भूमि बन से घिरी हुई है। यह तीन रेंज (श्रेणियों) में बटी है यह मोतीपुर, भिनगा, और चरदा या चकिया रेंज नाम से प्रसिद्ध हैं।

मोतीपुर रेंज सब से बड़ा (१८३ वर्गमील) है। इसमें उत्तरी और दक्षिणी भरथापुर का बन वरदिया, अम्बाटेढ़ी, चहलवा, धर्मनपुर, निशंगरा, दोवा, और मोतीपुर के बन शामिल हैं। उत्तरी भरथापुर के उत्तर में नैपाल की सीमा है। यह सीमा कौरियाला और गिरवा गहरी धारा के मध्य से आरम्भ होती है। भरथापुर के दक्षिण का बन भरथापुर गांव से कौरियाला के किनारे किनारे कौरियाला और गिरवा के संगम तक चला गया है। इस रक्षित बन का क्षेत्रफल ३५ वर्ग मील है। बरदिया के बन के उत्तर और उत्तर-पश्चिम में गिरवा नदी बहती है। उत्तर पूर्व की सीमा में गिरवा नदी से ८१ नवम्बर के खम्भे तक चली गई है।

दक्षिणी-पूर्वी सीमा नैपाल के पड़ोस से बरदिया गांव और रोरी नाले के पास तक चली गई है। दक्षिण-पश्चिम में यह बन फकीरपुरी गांव से गिरवा नदी तक फैला हुआ है।

अम्बाटेढ़ी बन पूर्व में अम्बा गांव और पश्चिम में भवानीपुर के बीच में स्थित है। चहलवा बन के उत्तर और पश्चिम में गिरवा नदी है। पूर्व में अम्बाटेढ़ी बन है।

चहलवा के दक्षिण में धर्मनपुर का बन है। धर्मनपुर बन के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में कौरियाला नदी है। निशंगरा बन बहुत बड़ा है। यह धर्मनपुर बन के पूर्व और उत्तर-पूर्व में स्थित है। मोतीपुर का बन निशंगरा के दक्षिण में है।

दोबा बन धर्मनपुर परगने के दक्षिण-पश्चिम में है। यह बन बहुत अच्छा नहीं है। इस में प्रायः खैर के पेड़ और घास और झाऊ का जंगल है।

चरदा चकिया बन नानपारा और चरदा परगनों में स्थित है।

खरैंचा का बन छोटा है और चकिया बन के दक्षिणी सिरे के पास है।

बबई बन मोतीपुर के पास है। चरदा बन चरदा के पश्चिम में दूसरे बनों से दूर है। इसके उत्तर में नैपाल की सीमा है।

भिनगा रेंज में ४ बन शामिल हैं। यह भिनगा, ककरदारी, सोनापथरी और गब्बापुर के नाम से प्रसिद्ध है। इसका क्षेत्रफल १०९ वर्ग मील है। भिनगा को छोड़ कर इसका शेष भाग नैपाल की सीमा के पास तराई प्रदेश में स्थित है। उत्तरी सिरे पर ककरदारी बन है। दक्षिण-पूर्व में इससे मिला हुआ भिनगा का बन है। इसका क्षेत्रफल लगभग ४५ वर्ग मील है। गब्बापुर और सोनपथरी के बन तुलसीपुर परगने में स्थित हैं।

पहले बन प्रदेश की गणना ऊसर भूमि में होती थी। १८६१ में यह सरकारी बन घोषित किया गया। बन के कुछ भाग में जानवर चर सकते हैं। शेष भाग में जानवरों को चराने की आज्ञा नहीं है। ग्रीष्म ऋतु में बन को आग बुझाने का भी प्रबन्ध है। बन में साल बहुत है। लेकिन साल का पेड़ अकेला नहीं होता है। यह तून, महुआ, हल्दू, अस्ना, धाव, बरगद, तेंदू, बेल, असिध, कजरौटा, जिगना, पैनार, कुम्भी, अगै और दूसरे पेड़ों के साथ उगता है। इसके अतिरिक्त यहां दूधी आंवला आदि कई पेड़ और झाड़ियां होती हैं। चिकनी मिट्टी में साल के स्थान पर आस्ना उगता है। साल के बन में कहीं कहीं ऐसे स्थान भी मिलते हैं जहां कोई पेड़ नहीं उगता है। जहां साल नहीं होता है वहां प्रायः शीशम के पेड़ बहुत होते हैं। खैर और सेमल के पेड़ प्रायः कछारी भूमि में बहुत होते हैं। साल और शीशम की बड़ी मांग है। इनके दाम भी अच्छे मिलते हैं। इनके बाद हल्दू और दूसरे पेड़ों की लकड़ी की खपत होती है। बैलगाड़ी बनाने के लिये धाव की लकड़ी काम में आती है। पेड़ काटने के पहले नीलाम होता है। मोल लेने वाला नियत मूल्य देकर पेड़ काटता है। पहले लकड़ी, कौरियाला, सरजू और राप्ती के मार्ग से लाई जाती थी। अब रेल से यह लकड़ी शीघ्रतापूर्वक भिन्न भिन्न बाजारों में पहुँचा दी जाती है। सरकारी बन के अतिरिक्त इस जिले में कुछ बन अलग अलग व्यक्तियों के अधिकार में है। इनमें सब से बड़ा (३३ वर्ग मील) इकौना का जंगल है जिस पर कपूर्थला-महाराज का अधिकार है। बघेल ताल के समीप का जंगल पयागपुर के राजा साहब के अधिकार में है। जंगल में चीता, तेंदुआ, जंगली सुअर, चीतल, भेड़िया, भालू, सांभर, नील गाय, हिरण आदि जंगली जानवर बहुत पाये जाते हैं। गोचर भूमि की अधिकता होने से इस जिले में गाय, बैल, घोड़ा आदि पालतू जानवर भी बहुत हैं। जिले की लगभग ३ फीसदी भूमि में बगीचे हैं। २१७ वर्गमील भूमि ऊसर है।

यह जिला बंगाल की खाड़ी की ओर से आने वाली मानसूनी हवाओं के मार्ग में स्थित है। इस-लिये गरमी की ऋतु में यहां अच्छी वर्षा होती है। पहाड़ों के समीप होने से शीतकाल में भी यहां कुछ न कुछ वर्षा हो जाती है। बनों से भी वर्षा की मात्रा में कुछ वृद्धि हुई है। औसत से वर्ष भर में ४७ इंच पानी बरसता है। किसी किसी वर्ष यहां केवल २४ इंच वर्षा हुई है। लेकिन कभी कभी ८७ इंच तक वर्षा हुई है। अधिक वर्षा, हवा में नमी जंगल होने के कारण यहां का तापक्रम अधिक ऊंचा

नहीं होता है। लेकिन हवा में नमी होने के कारण यह गर्मी असह्य हो जाती है। इस प्रकार इस जिले की जलवायु कुछ कुछ बंगाल के समान है।

कृषि—इस जिले में २० फी सदी भूमि ऐसी है जो खेती के योग्य होते हुये भी खेती के काम नहीं आती है। फिर भी ५० फी सदी से ऊपर भूमि में तरह तरह की खेती होती है। खेती की भूमि कुछ दुरस (चिकनी मिट्टी और बालू का मिश्रण) या दुमट है। कुछ चिकनी मिट्टी या मटियार है। कुछ भूड़ या बालू है। इस जिले के अधिकतर (आधे से अधिक) भाग में धान की खेती होती है। चावल इस जिले का प्रधान भोजन है। यह नानपारा और बहरायच तहसीलों में बहुत उगाया जाता है। भिनगा, तुलसीपुर और नानपारा की तराई की भूमि धान की खेती के लिये विशेष रूप से उपयोगी है। धान के पश्चात खरीफ की फसल में दूसरा स्थान मकई का है। यह राप्ती और घाघरा के निचले प्रदेश में बहुत होती है। ज्वार अरहर और कोदो खरीफ की दूसरी फसलें हैं। कुछ भूमि में ईख होती है। रबी की फसल में गेहूँ प्रायः ४४ फी सदी भूमि में होता है। कुछ गेहूँ, चना, जौ और मटर के साथ मिलाकर बोया जाता है। अकेला गेहूँ ३० फी सदी भूमि में बोया जाता है। चना, मटर, मसूर को प्रायः मिलाकर बोते हैं। निकृष्ट भूमि में जौ बोते हैं। रबी की फसल की १७ फी सदी भूमि में जौ बोया जाता है। कुछ भूमि इतनी अच्छी (दोफसली) है कि इसमें वर्ष में दो फसलें उगाई जाती हैं। इस जिले में नहरें नहीं हैं सिंचाई कुओं और तालाबों से होती है।

बहरायच में कलाकौशल की कमी है। कुछ गांवों में जुलाहे मोटा गाढ़ा बुनते हैं। कुछ मुसलमान नमदा बनाते हैं। कम्बल भी बुने जाते हैं। कुछ स्थानों में पंजाबी कारीगरों के आ जाने से लकड़ी का सामान भी तयार होने लगा है। बनों में खैर की लकड़ी के टुकड़ों में उबाल कर कत्था निकाला जाता है।

संक्षिप्त इतिहास

कहते हैं ब्रह्मा का विशेष रूप से यह प्रिय स्थान था। इसी से इसका नाम ब्रह्मर्षि से बिगड़ कर बहरायच पड़ा। भिनगा से १८ मील की दूरी पर हथियाकुंड के पास एक टीले पर प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं कहते हैं यहां महाभारत के राजा कर्ण का एक नगर था। यह जिला अयोध्या के उत्तर कौशल राज्य का अंग था। यहां श्रीरामचन्द्रजी के पुत्र लव का राज्य था। यहां बौद्ध कालीन कई स्थान हैं। कहते हैं इकौना से ४ मील की दूरी पर ५०० अन्धों ने भगवान बुद्ध के आशीर्वाद से देखने की शक्ति फिर प्राप्त कर ली थी। उन्होंने अपने डंडे भूमि में गाड़े थे। वे हरे हो गये। इनसे बन का आरम्भ हुआ। इस बन का नाम आप्ताक्षि बन पड़ गया। यहां भार लोगों के भी कई भग्नावशेष मिलते हैं। उनका एक नेता सोहेलदेव महमूद गजनवी के भतीजे सैयद सालार से लड़ा था। कहते हैं सैयद सालार मसूद १०१५ ईस्वी में अजमेर में पैदा हुआ था। उसने अपनी युवा अवस्था अपने पिता और अपने चाचा के साथ युद्ध में बिताई। वह मुल्तान, दिल्ली, मेरठ, कन्नौज और सत्रिख (बाराबंकी) के मार्ग से यहां आया। राजपूतों के संघ से मोरचा लेने के लिये १०३३ में सैयद सालार बहरायच में आया। नगर के समीप एक ताल था। इसके किनारे पर सूर्य की मूर्ति बनी थी। सैयद सालार ने सूर्य की उपासना का अन्त कर देने की घोषणा की। कौशल या कौरियाला नदी के किनारे पर घमासान युद्ध हुआ। पहले राजपूत हारते हुये दिखाई दिये। अन्त में १०३४ में सालार हारा और मारा गया। यहीं उसके अनुचरों ने उसे गाड़ दिया। घाघरा के इस पार अपना प्रभुत्व जमाने में मुसलमानों को अधिक समय लगा। १८२६ ई० में अल्तमश का बड़ा लड़का नसीरुद्दीन मुहम्मद अवध का सूबेदार हुआ। कहते हैं यहां के लोगों ने आत्म-समर्पण करने के पहले सवा लाख मुसलमान सिपाहियों को मार डाला था। इसी समय यहां जिले के दक्षिणी भाग में पहले पहल मुसलमानों की बस्ती बसाई गई। प्रथम निवासी अन्सारी थे। वे पचम्बा, हिसामपुर और तवक्कुलपुर में बस गये। तवक्कुलपुर में उन्होंने ५२ बुर्जों का एक विशाल किला बनवाया। हिसामपुर का पुराना नाम पुरैनी था। यहीं भार राजा की राजधानी

थी। सैयद सालार के एक साथी ने इस राजा को हराया था। अवध के सूबेदार हिसामुद्दीन तुगलक की स्मृति में १२४० में इस नगर का नाम हिसामपुर रक्खा गया। अन्सारियों ने यहां ढाई सौ गांवों को बसाया और खेती आरम्भ कर दी। १२४६ ई० में यहां का एक सूबेदार दिल्ली के सिंहासन पर बैठाया। बादशाह होने पर उसने बहरायच के अपने कई साथियों को ऊंचे पदों पर नियुक्त किया। बहरायच अवध से अलग कर दिया गया। इसी समय दो गांव का पुराना नगर सरजू के पास बसाया गया। १२५० से १३४० तक यहां कोई विशेष घटना नहीं हुई। दक्षिण में अन्सारी प्रबल हो रहे थे। लेकिन भार लोगों की शक्ति नष्ट नहीं हुई थी। १३४० में राजा छत्रसाल का जरौली किला मुसलमानों ने धोखा देकर ले लिया। इसी वर्ष मुहम्मद तुगलक बहरायच को आया। फीरोजशाह के समय में यह जिला अधिक प्रसिद्ध हो गया। इसी समय गुजरात के जवार राजपूत अपने राजा मनसुखदेव के साथ यहां आकर बस गये। १३७४ में फीरोजशाह सैयद सालार के मकबरे का दर्शन करने आया। राजपूत सरदार बरियार साह उसके साथ था। उसने यहां शान्ति स्थापित की। १४१४ में बरियार साह इकौना में बस गया। उस समय इसका नाम कान्हपुर महादेव था। इसके ४० वर्ष बाद राइकवार राजपूत बाराबंकी के रामनगर में बस गये। आगे चलकर वे इस जिले के पश्चिमी भाग के स्वामी बन गये। इस प्रकार जिले के दक्षिणी भाग में मुसलमान, पश्चिमी भाग में राइकवार पूर्वी भाग में जवार और उत्तरी भाग में पर्वतीय लोग प्रबल थे। बहलोल लोदी ने अपने शासनकाल (१४५०-१४८८) में अपना प्रभुत्व हिमालय की तलहटी तक फैला लिया। उसका भतीजा काला पहाड़ कुशल सेना पति था। १४७८ में वह बहरायच का सूबेदार नियुक्त किया गया। फिर भी मुसलमानों का शासन यहां नाम मात्र का था। अकबर के समय में बहरायच की सरकार में बहरायच के अतिरिक्त गोंडा और खीरी के जिले भी शामिल थे। सरजू के किनारे बहरायच में पक्का किला बना था। बहरायच मुहाल की आमदनी से साढ़े चार हजार पैदल और ६०० घुड़सवार रक्खे जाते थे। जिले में और भी कई मुहाल थे। अकबर के समय में हरहरदेव ने नये हरहर राज्य की नींव डाली। उसका बेटा वहां पर राज्य करने लगा। १६०० ईस्वी में बह्मनौटी राज्य दो भागों में बंट गया। इसी समय इकौना के जवार राजपूत तेजी के साथ अपना राज्य बढ़ा रहे थे। १६२७ में राइकवार राजा बीर नारायणसाह को हक चौधरी प्राप्त हुआ। इस वंश में महासिंह सब से अधिक प्रतापी हुआ। उसने अपने कुटुम्ब के लोगों को जिले के भिन्न भिन्न भागों में बसा दिया। जगन्नाथ सिंह चरदा को चला गया। महासिंह ने पश्चिम में गुजी गंज जागीर की नींव डालने के लिये अपने भाई को भेजा। उसी के एक वंशज ने भिनगा राज्य पर अधिकार कर लिया। बहरायच के जंगल के कई गांव महासिंह ब्राह्मणों को दान कर दिये। महासिंह के बाद उसका बेटा मानसिंह और फिर मानसिंह का बेटा श्याम सिंह राजा हुआ। श्याम सिंह के दो रानियां और दो बेटे थे। बड़ा बेटा इकौना का मोहन सिंह था। छोटा बेटा प्रयाग साह था। मोहनसिंह के बाद उसका बेटा छत्रसाल सिंह इकौना का राजा हुआ। छत्रसाल के दो बेटे थे। चैनसिंह इकौना का राजा हुआ। भैया प्रतापसिंह ने गंगावाल राज्य की नींव डाली।

१६३७ में रसूल खां नाम का एक पठान सालदार बहरायच के किले का रक्षक नियुक्त हुआ। सेना के खर्च के लिये उसे ५ गांव दिये गये। उसका पौत्र मुहम्मद खां नानपारा में बस गया। मुहम्मद खां के बेटे करम खां ने नानपारा जागीर की नींव डाली। जब उसके बेटे मुस्तफा खां ने ५००० रु० अवध को लगान न दिया तो वह बन्दी बनाकर लखनऊ पहुँचाया गया। १७७७ ई० में वह वहीं मर गया।

इसी समय पयागपुर के जंवार राज्य की नींव पड़ी। प्रयाग साह ने दिल्ली सम्राट के आदेश से प्रयागपुर या पयागपुर गांव बसाया। यहीं इसके वंशज रहने लगे। १७८८ में आसफुद्दौला ने नानपारा, चरदा, धर्मनपुर और तराई प्रदेश के १४८६ गांव प्रयाग साह के बेटे हिम्मत साह को पद पर दे

दिये। सुजौली में अर्जुन सिंह नाम का एक बंजारा सरदार १७८८ में शासन करता था। १८०० ई० में धौरहरा (खीरी) के राजा ने भरथापुर और अम्बाटेढ़ी पर अधिकार कर लिया। ईस नगर पर उसके एक सम्बन्धी ने अधिकार कर लिया। मध्य-भाग में फिर भी बंजारे बने रहे।

१८०७ में गुर्जासिंह ने अवध के नवाब को रुष्ट कर दिया। उस पर चढ़ाई की गई और उसकी जागीर उसके विरोधियों में बांट दी गई। १८१४ ई० में अंग्रेजों ने नैपाल से युद्ध घोषित किया। १८१६ में सिगौली की सन्धि के अनुसार सारदा और राप्ती के बीच में स्थित निचला प्रदेश अंग्रेजों को मिल गया। अंग्रेजों ने १८१५ में अवध की सरकार से एक करोड़ रुपया उधार लिया था। इस ऋण के बदले में अंग्रेजों ने यह प्रदेश अवध की सरकार को दे दिया। इस प्रदेश के अधिकतर गांव तुलसीपुर के राजा को मिले। पश्चिमी भाग पदमपुर महलवारा के राजा के हाथ में बना रहा। इससे बंजारे दब गये।

७ फर्वरी १८५६ में अवध अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। बहरायच एक कमिश्नरी का केन्द्र स्थान बना। गदर में यहां के अधिकतर तालुकेदार विद्रोही हो गये। यहां का कमिश्नर (जो इस समय सिकरौरा या कर्नल गंज में था) बहरायच से गोंडा (बलरामपुर) को भाग गया। डिप्टी कमिश्नर और दूसरे अंग्रेज अफसरों ने नानपारा के मार्ग से भाग कर पहाड़ियों में शरण लेने का प्रयत्न किया। राजा के कारिन्दा ने उन्हें उधर जाने से रोका। इस पर वे हिन्दुस्तानी भेष बना कर लौटे। जब बहरामघाट में वे नाव पर सवार होकर चलने लगे तब विद्रोहियों ने उन्हें पहचान लिया। सभी अफसर मार डाले गये। इस प्रकार गदर के आरम्भ से ही बहरायच का जिला विद्रोहियों के हाथ में चला गया। १८५८ के अन्त तक यह जिला विद्रोहियों के हाथ में ही रहा। बरगदिया की लड़ाई में विद्रोही हार गये। दूसरे दिन मद्रासी, बलूची और सिक्ख सेना ने अंग्रेजों के साथ भारगेदिया के मजबूत किले को ले लिया और नष्ट कर दिया। धर्मनपुर में हारने के बाद कुछ विद्रोही राप्ती को पार कर के नैपाल को भाग गये। बौंदी का राजा अन्त तक लड़ता हुआ मारा गया। चरदा के राजा का पता न चला। शान्ति स्थापित होने पर बौंदी, चहलरी, भिटौली और धहरौरा की जागीरें (जिनमें ४४० गांव थे) एकदम जब्त कर ली गईं। इकौना (५०६ गांव) चरदा (४२८ गांव) और तुलसीपुर (३१३ गांव) के राज्य भी जब्त कर लिये गये। भिनगा के (१३८ गांव) आधे गांव, रेहवा के १४ गांव तिपरहा के १९ गांव जब्त कर लिये गये। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने इस जिले में सब मिला कर १८५८ गांव जब्त किये। इनमें ३१३ गांव नैपाल सरकार को दे दिये गये। इकौना के ४३७ गांव बौंदी के सब (३०५) गांव और बाराबंकी जिले में भिटौली के ७६ गांव कपूर्थला महाराज को दे दिये गये। बलरामपुर के महाराज को भिनगा राज्य के १०० गांव, इकौना के शेष (६९) गांव और चरदा के २५५ गांव मिले। चरदा के २५५ गांव नवाब नवाजिशअली खां को दे दिये गये। चरदा राज्य के शेष २६ गांव सरदार हीरासिंह को मिले। भिनगा राज्य का शेष भाग शेरसिंह इन्द्रजीतसिंह आदि सिक्ख सिपाहियों में बांट दिये गये। कुछ गांव लाहोर के राजवंश के सिक्ख सरदारों को दे दिये गये। रेहवा के गांव कालाकांकर के राजा हनवन्तसिंह सूबेदार मातादीन, सिंह दुलामसिंह, अजानपुर के मुहम्मदशाह को बांट दिये गये। मुहम्मद शाह को तिपरहा के भी नौ गांव मिले। तिपरहा के शेष गांव रायकिशन सहाय, बेनी-सिंह और मनसुखसाह को मिले। धहरौरा के राजा की भरथापुर और अम्बा टेढ़ी की जागीरें अँग्रेजी राज्य में मिला ली गईं। इन्हीं में रक्षित बन है। गदर के बाद बहरायच जिले में सदा शान्ति बनी रही।

बहरायच शहर २७°३४ उत्तरी अक्षांश और ८१°३६ पूर्वी देशान्तर में समुद्रतल से ४७० फुट की ऊँचाई पर बसा है। यह शहर जिले के प्रायः मध्य में स्थित है। यहां होकर बहरामघाट से नानपारा और नैपाल गंज को राजमार्ग गया है। बहरामघाट ३६ मील और नानपारा २० मील दूर है। गोंडा से नैपालगंज और कतरनियां घाट को जाने वाली रेलवे लाइन का स्टेशन बहरायच शहर से पूर्व की ओर है। शहर ऊँचे किनारे पर बसा है। पुराने समय में घाघरा इसके पास से होकर बहती थी।

बहरायच शहर से चारों ओर को लहरदार भूमि बड़ी सुहावनी लगती है। यहां से भिनगा, इकौना, ककरदरी घाट (नैपाल की सीमा पर) आदि कई स्थानों को कच्ची सड़कें गई हैं। बहरायच शहर के दक्षिण में सिविल लाइन है। यहां गोरों के बंगले, कचहरी डाक बंगला और गिरजा है। यहां तहसील, थाना, डाक, तारघर अस्पताल और हाई स्कूल है। यहां संस्कृत पाठशाला, मदरसा इस्लामिया और मिडिल स्कूल है। बहरायच में महमूद गजनवी के भतीजे सैयद सालार मसूद की दरगाह है। यहीं राजासुहेलदेव की अध्यक्षता में हिन्दुओं ने उससे मोरचा लिया था। सैयद सालार लड़ाई में मारा गया। उसका मकबरा शहर से डेढ़ मील की दूरी पर सिंहा परसी गांव में बना है। कहते हैं इसी स्थान पर पहले सूर्य मन्दिर बना था। दिल्ली सम्राट फीरोजशाह ने यहां घेरा और कई इमारतें बनवा दी। आगे चलकर यहां मीरमाह फकीर और दूसरे लोगों के भी मकबरे बन गये जेठ के महीने में यहां भारी (१ लाख से ऊपर यात्रियों का) मेला लगता है। इसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों रहते हैं। यहां तरह तरह का चढ़ावा चढ़ाया जाता है। कुछ यात्री अपने साथ तरह तरह के झंडे लाते हैं। झंडों के बांस बड़े लम्बे होते हैं। दरगाह की आमदनी से एक स्कूल और अस्पताल का खर्च चलता है।

रेलवे के खुल जाने से बहराइच एक व्यापार केन्द्र बन गया है। यहां नैपाल का बहुत सा सामान आता है। अनाज, शक्कर, लकड़ी और तम्बाकू का व्यापार अधिक होता है। फेल्ट बनाने और गाढ़ा बुनने के अतिरिक्त यहां और कोई कारबार नहीं है। कहते हैं ब्रह्मा जी ने यहां बहुत से ऋषियों को बसाया था। इसी से इसका नाम ब्रह्मैच से बिगड़कर बहरायच पड़ गया।

अम्बा गांव राप्ती के दक्षिणी किनारे पर भिनगा से ४ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इकौना से नानपारा को जानेवाली सड़क यहां से कुछ ही दूर है। थोड़ी दूर पर भिनगा से बहरायच को जानेवाली सड़क इसे पार करती है। यहां प्रतिदिन एक बड़ा बाजार लगता है। उत्तर की ओर मिले हुये पटना गांव में स्कूल है।

बाबागंज नानपारा से नैपाल गंज को जानेवाली सड़क पर नानपारा से ८ मील दूर है। अंग्रेजी राज्य में मिलने के पहले यहां लोहे की बड़ी मंडी थी। रेलवे स्टेशन के पास यहां कुछ दुकाने हैं। यहां डाकघर और स्कूल है।

बह्मनौटी गांव सिसैया से कुरसर को जाने वाली सड़क पर घाघरा नदी से दो मील पूर्व की ओर स्थित है। यह बौंदी से मिला हुआ है। गांव का एक भाग शंकरपुर और दूसरा भाग शहर गोलागंज कहलाता है। गोलागंज में सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। नदी के किनारे रामघाट में मेला लगता है। पारसनाथ महादेव का मेला शंकरपुर में भादों, अगहन, फागुन और बैसाख में लगता है। बह्मनौटी में ही राइकवार राजपूत पहले पहल आकर बस गये थे।

बौंदी गांव कुरसर से चहलरी घाट को जानेवाली सड़क से कुछ दूर पश्चिम की ओर है। यहां से एक सड़क बहरायच से बहरामघाट को जाने वाली सड़क से मिलती है। बौंदी एक बड़े राज्य की राजधानी है जो गदर के बाद कपूर्थला महाराज को मिल गया। यहां महाराज की ओर से तहसील और खजाना है। खजाने पर सशस्त्र सिपाहियों का पहरा रहता है। बौंदी में मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहां डाकखाना, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। इसके उत्तर पश्चिम में बह्मनौटी गांव है। उत्तर की ओर रेहवा और पुराना किला है।

भंगहा बहरायच से २० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह राप्ती और भकला नदियों के उपजाऊ द्वाब में भिनगा से ७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। राप्ती नदी यहां से १ मील दूर है। भिनगा से नानपारा को जानेवाली सड़क भी यहां से १ मील दूर है। पहले यह भिनगा राज्य का गांव था। गदर के बाद पुरस्कार के रूप में यह सिक्ख सरदार शेरसिंह को दे दिया गया। रेल खुलने से पहले यहां नैपाल के साथ व्यापार होता था। यहां डाकघर स्कूल और छोटा बाजार है।

भिनगा कस्बा राप्ती के बायें किनारे पर बह-

रायच से २४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। पिपराघाट में राप्ती को पार करके यहां से एक सड़क बहरायच को गई है। एक सड़क इकौना को गई है जो हरई के पास राप्ती नदी को पार करती है। बहरायच की सड़क से एक शाखा सड़क उत्तर-पश्चिम नानपारा और उत्तर-पूर्व में बलरामपुर को गई है। यह कस्बा रक्षित बन के पास है जो उत्तर की ओर तराई तक फैला हुआ है। यहां तालुकेदार की कोठी है जो पुराने किले में बनी है। यहां अस्पताल, थाना, डाकखाना और स्कूल है। बाजार प्रतिदिन लगता है। अनाज और लकड़ी का व्यापार होता है। लकड़ी अधिकतर राप्ती के मार्ग से बाहर को भेजी जाती है। इस नगर को अब से प्रायः ४०० वर्ष पहले भिनगा के एक राजवंशज ने बसाया था।

बिचिया रेलवे स्टेशन कतरनियांघाट शाखा लाइन पर है। कतरनिया घाट यहां से ४ मील उत्तर की ओर है। यह बन के बीच में है। रेलवे स्टेशन के पास एक बाजार है। यहां नैपाल का अनाज बिकने के लिये आता है।

चरदा गांव बाबागंज से इकौना को जाने वाली सड़क पर बाबागंज से दो मील दूर है। यहां बलरामपुर महाराज का अधिकार है। यहां से महाराजगंज रेलवे स्टेशन तक जंगल में होकर सड़क बना दी गई है। यहां अस्पताल, स्कूल और छोटा बाजार है। गांव के पश्चिम में पुराने किले के खंडहर हैं। यह उन गढ़ श्रेणी में से एक है जो चौदहवीं सदी में पहाड़ी लोगों के आक्रमण से मैदान को बचाने के लिये बनाये गये थे।

चिलवरिया गांव बहरायच से गोंडा को जाने वाली सड़क पर बहरायच से ९ मील दक्षिण-पूर्व की ओर बंगालनार्थ वेस्टर्न रेलवे का एक स्टेशन है। रेलवे के खुल जाने से यहां अनाज का व्यापार बढ़ गया है। गुरुवार और रविवार को नानकगंज में बाजार लगता है।

धर्मनपुर निशंगरा रेलवे स्टेशन से ३ मील पश्चिम की ओर है। यह उस झील के किनारे स्थित है जहां से चौका नदी निकलती है। इसके पास ही सेमरी घटई गांव में मंगलवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां होकर मोतीपुर से सुजौली को सड़क जाती है।

दोगांव एक प्राचीन गांव है। यहां तांबे के पुराने सिक्के मिले हैं। इन पर दोगाम नाम खुदा था। अकबर के समय में यहां तांबे के सिक्के ढालने के लिये टक्साल थी। यह नानपारा से ४ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। इसके पश्चिम में सरजू है। यहां पुराने किले और पक्के कुयें के खंडहर मिलते हैं। रेलवे ने यहां की पुरानी ईंटों को ढोकर इनकी गिट्टी को लाइन पर बिछा दिया। यहां शाह-सजन नाम के एक फकीर का मकबरा था। सरजू ने इसे बहा दिया। लेकिन उसकी स्मृति में यहां एक मेला लगता है। कहते हैं सैयद सालार मसूद को हराने वाले सोहेल देव का यहां एक किला था।

फखरपुर बहरामघाट से बहरायच को जाने वाली सड़क पर बहरायच से ११ मील दूर है। गांव के चारों ओर सुन्दर बगीचे हैं लेकिन पानी अच्छा नहीं है। यहां थाना, डाकखाना, पड़ाव और सरकारी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार में पशुओं की बिक्री होती है। अकबर के समय में यहां तहसील और किला था। अकबर के समय में सड़क के पास एक बड़ा पाकर का पेड़ होने से यह पाकरपुर कहलाता था।

गायघाट सरजू के दाहिने किनारे पर नानपारा से १३ मील दूर मोतीपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। नदी को पार करने के लिये यहां सरकारी घाट है। यहां डाकघर और स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

गन्दरा गांव सरजू के पश्चिमी किनारे पर कैसरगंज से ४ मील पूर्व की ओर है। इसके पास ही सरजू में एक छोटी नदी मिलती है। यहां डाकखाना, स्कूल और सरजू को पार करने के लिये घाट है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है।

गंगवल पयागपुर रेलवे स्टेशन से ५ मील दक्षिण की ओर है। यहां पुराने तालुकेदार की गढ़ी है। यहां एक छोटा स्कूल है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है।

इकौना कस्बा बहरायच से बलरामपुर को जाने वाली सड़क पर बहरायच से २२ मील पूर्व की ओर

है। यहां से एक सड़क पयागपुर और भिनगा को गई है। यहां थाना, डाकघर, अस्पताल, मिडिल स्कूल सराय और डाक बंगला है। बाजार प्रतिदिन लगता है। यहां लकड़ी का सामान अच्छा बनता है। यहां जंवार राजपूतों की राजधानी थी। गदर के बाद यह कपूर्थला नरेश को दे दिया गया। पुराने किले में उनकी तहसील है। पास ही थाना है।

जरवल को पुराना गांव बहरामघाट से बहरायच को जाने वाली सड़क पर कैसरगंज से ६ मील और बहरायच से २९ मील दूर है। गांव कुछ नीची भूमि पर बसा है। उत्तर की ओर आम के बाग हैं। ४ मील दक्षिण की ओर जरवल रोड रेलवे स्टेशन है। यहां डाक घर और स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। अनाज, खाल, कपड़ा और पीतल के बर्तनों का व्यापार होता है। यहां फेल्ट (नमदा) आतिशबाजी, शोरा और रंग बनाने का काम होता है। इसका पुराना नाम जरौली था। मुसलमानों से पूर्व यहां भार लोगों का शासन था। कैसरगंज बहरायच से बहरामघाट को जाने वाली सड़क पर बहरायच से २२ मील दूर है। यहां तहसील, मुन्सफी, रजिस्ट्री, थाना, डाक घर, डाक बंगला और मिडिल स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

कतरनियां घाट गिरवा के दक्षिणी किनारे पर बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे का अन्तिम स्टेशन है। दूसरी ओर नैपाल को मार्ग गया है। यहां बन-विभाग का बंगला और व्यापार की रजिस्ट्री का दफ्तर है। इस गांव में खेती नहीं होती है। दोनों ओर बन है। यहां कुछ अनाज के व्यापारी रहते हैं जो नैपाल का अनाज बाहर भेजते हैं। खैरी घाट को बेहरा भी कहते हैं। यह नानपारा से १२ मील दूर सरजू के बायें किनारे पर स्थित है यहां से कुछ दूरी पर यह घाघरा में मिलती है। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और कपूर्थला नरेश की तहसील है। बाजार प्रति दिन लगता है। बहुत सा अन्न घाघरा के मार्ग से बाहर जाता है। इसके पास वाले ढकिया गांव में नमदाशाह का मेला लगता है। कुरसर गांव बहरायच से बहरामघाट को जानेवाली सड़क पर स्थित है। अंग्रेजी राज्य में मिलने के समय से १८७६ तक यह एक तहसील का केन्द्र स्थान रहा। यहां एक स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। मल्हीपुर बाबागंज स्टेशन से भिनगा को आने वाली सड़क नानपारा से १५ मील पूर्व की ओर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। कटरा में प्रतिदिन बाजार लगता है।

मोतीपुर नानपारा से सुजौली को जानेवाली सड़क के पास स्थित है। रेलवे लाइन सड़क के समानान्तर चलती है। स्टेशन पास ही है। गांव के पूर्व में सरजू नदी बहती है। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहां से अनाज बाहर जाता है।

नानपारा बहरायच से २२ मील उत्तर की ओर है। यहां से नैपालगंज को सड़क जाती है। गांव के पूर्व की ओर बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे की लाइन जाती है। स्टेशन पास ही है। नानपारा स्टेशन से एक शाखा लाइन नैपालगंज को जाती है। प्रधान लाइन गोंडा से कतरनियां घाट को जाती है। यहां से मोतीपुर, भिनगा इकौना, खैरीघाट और कटई घाट (घाघरा के किनारे) को सड़कें गई है। नानपारा समुद्र-तल से ५२० फुट की उंचाई पर बसा है। सरजू और राप्ती के बीच में जल विभाजक बनाने वाला ऊंचा किनारा यहां से लगभग १ मील दूर है। यहां तहसील, थाना, अस्पताल, डाकघर, डाक बंगला और मिडिल स्कूल है। एक बाजार स्टेशन के पास और दूसरा कस्बे के भीतर है। यहां से अनाज बाहर को भेजा जाता है। भादों और फागुन के महीने में नदी के ऊंचे किनारे के पास जंगली नाथ का मेला लगता है। माघ में एक मेला तकिया मलंग शाह का होता है। यहां से पांच मील की दूरी पर शाह सजन की दरगाह है। यहां भी मेला होता है।

पयागपुर बहरायच से गोंडा को जानेवाली सड़क पर बहरायच से १७ मील दूर है। पश्चिम की ओर बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे की शाखालाइन का स्टेशन है। इसके पास ही पक्का बाजार है। यहां से इकौना, कुरसर खीरी और सीतापुर को सड़कें गई हैं। यहां राजा साहब का महल, थाना, डाकखाना

और स्कूल है। पश्चिम की ओर बघेल ताल है जो टेढ़ी नदी से मिला हुआ है। रेलवे स्टेशन के पास प्रतिदिन बाजार लगता है। एक छोटा (तलाब बघेल) बाजार रेलवे स्टेशन की दूसरी ओर लगता है। यहां अनाज का व्यापार बहुत होता है।

रूपी डीहा नैपाल की सीमा के पास स्थित है। यहां होकर नानपारा से बनटीया नैपालगंज को सड़क जाती है। रेलवे की शाखा लाइन भी नैपालगंज को जाती है। नैपाल के व्यापार का यह जिले भर में सब से बड़ा बाजार है। बाजार प्रति दिन लगता है। अनाज, लोहे, कपड़े और मसाले का व्यापार होता है। यहां व्यापार की रजिस्ट्री का दफ्तर, डाकघर और स्कूल है।

सिसैया गांव घाघरा के किनारे पर स्थित है। यहां बहरायच, नानपारा, और कुरसर से आने वाली तीन सड़कें मिलती हैं। चहलरी घाट के उस पार सीतापुर को सड़कें गई हैं। यहां थाना, डाकघर और बाजार है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है।

सुजौली कौरिया के किनारे पर नानपारा से ३६ मील दूर है। यहां थाना, डाकघर, बन विभाग का बंगला अस्पताल और स्कूल है। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। अनाज और लकड़ी का व्यापार होता है।

टंडवा इकौना से बहरायच को जानेवाली सड़क पर इकौना से ४ मील और बहरायच से २० मील दूर है। कहते हैं यह वही नगर है जिसे चीनी यात्री फाहियान ने तोवई बतलाया है जो स्रावस्ती से उत्तर-पश्चिम में ६० ली (९ मील) दूर था। प्राचीन श्रावस्ती और बर्तमान सेहत मेहत यहां से इतना ही दूर है। इसके पड़ोस में प्राचीन भग्नावशेष हैं। एक ऊंचे टीले के आगे सीता दोहर ताल है। एक मन्दिर में सीता जी की मूर्ति है। यहां वर्ष में दो बार सीता दोहर का मेला लगता है।

बस्ती

बस्ती का जिला एक चौड़ा कछारी मैदान है। नदी के किनारे की मंझा जमीन में झाऊ बहुत होती है। कुआनो और राप्ती नदियों के बीच में कुछ ऊंची जमीन है। राप्ती की घाटी में कुछ अधिक वर्षा होने से चावल बहुत होता है। पहले यहां जंगल बहुत था। पर यह खेती के लिये साफ कर लिया गया है। केवल गनेशपुर के पास बेंत का जंगल है। कुआनो नदी के किनारे किनारे साल का बन है। पर जिले भर में महुआ के पेड़ २ लाख से कम नहीं है।

इस प्रकार इस जिले की गुजर खेती से ही होती है। दस्तकारियां बहुत कम हैं। कई गांवों में मुसलमान जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। इसके लिये लगभग १५ हजार मन सूत बाहर से आता है। मझार, काजीपुर, मेंहदावल, सिकन्दरपुर, बहादुर पुर और पुरनिया बुनाई के प्रधान केन्द्र हैं। बहादुरपुर में बुनाई के सिवा कपड़े की रंगाई और छपाई भी होती है। बहुली में शोरा बनाया जाता है और शोरतगंज में चूड़ियां बनने लगी हैं। बखिरा और बिस्कोहर में ठठेरे लोग पीतल के बर्तन बनाते हैं। बांसी में सुन्दर भाले तयार किये जाते हैं। चमड़ा कमाने का काम जिले भर में होता है। चिल्हिया में चिकनी मिट्टी के बर्तन बनते हैं।

गोरखपुर कमिश्नरी में बस्ती एक बड़ा जिला है। यह संयुक्त प्रान्त के उत्तरी पूर्वी कोने में स्थित है। इसका आकार कुछ विषम है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई कहीं ६८ मील और कहीं ५२ मील है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी चौड़ाई कहीं २८ मील और कहीं ५२ मील है। इसका क्षेत्रफल २७९६ वर्गमील है। इस प्रकार यह संयुक्त-प्रान्त के सब से बड़े जिलों में एक है। इसकी जन-संख्या २०,७८६२४ है। पहले यह गोरखपुर जिले में ही शामिल था। इस समय गोरखपुर जिला बस्ती के पूर्व है। बस्ती के पश्चिम में गोंडा जिला है। दक्षिण की ओर घाघरा नदी बस्ती को

फैजाबाद जिले से अलग करती है। उत्तर में नैपाल राज्य है। यहां से हिमालय की बाहरी श्रेणियां केवल बीस या तीस मील दूर रह जाती है।

बस्ती जिले की अधिकतर भूमि प्रायः समतल है। इसी से नदियां अधिक तेज नहीं बहती हैं। नदियां प्रायः उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। नदियों की घाटियां बहुत उथली हैं। समुद्र-तल से बस्ती जिले की औसत ऊंचाई लगभग ३०० फुट है। उत्तरी-पश्चिमी कोने पर मझवा स्थान ३२६ फुट ऊंचा है। पूर्व की ओर डस्का के पास पुरैना स्थान की उंचाई २७३ फुट है। दक्षिण की ओर खलीलाबाद के पास वाली भूमि समुद्र-तल से केवल २६३ फुट ऊंची है।

बस्ती जिले की भूरचना बहुत कुछ गोंडा और बहरायच जिलों से मिलती जुलती है। प्रायः समतल भूमि होने पर भी बस्ती जिला कई भिन्न भिन्न प्रदेशों में बटा है।

(१) दक्षिण की ओर घाघरा नदी की घाटी वाली निचली भूमि है। यह निचली भूमि घाघरा से लेकर इसकी सहायता कुवना (Kuwana) तक फैली हुई है।

(२) मध्यवर्ती उच्च प्रदेश कुवना नदी और राप्ती नदी के बीच में स्थित है।

(३) राप्ती और नैपाल की तराई के बीच में इस जिले की इतनी (सब से अधिक) नीची भूमि है कि वहां का बरसाती पानी ठीक ठीक नहीं बह पाता है।

दक्षिण में घाघरा की कछारी भूमि ऊपर से तो पतली मजबूत मिट्टी से ढकी है। लेकिन इसके नीचे एकदम बालू है। प्रबल बाढ़ में कमजोर किनारों को तोड़कर घाघरा नदी अक्सर अपना मार्ग बदल देती है। किनारों के काटने से बहुत सी मिट्टी भी बह जाती है। कभी एक किनारा ऊंचा होता है। कभी नदी का दूसरा किनारा ऊंचा हो जाता है। ऊंचे किनारे के पास कभी गहरा पानी रहता है। कभी ऊंचे किनारे और पानी के बीच में मंझा पड़ जाता है। मंझा की भूमि वर्षा ऋतु में पानी के नीचे डूब जाती है। शीतकाल में यहां काफी उपजाऊ ईख और अनाजों की फसलें उगाई जाती हैं। यहां तरी रहती है। इस से सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। जिन भागों में खेती नहीं होती है वहां ढोर चरा करते हैं। बहुत से भागों में जंगली झाऊ उगती है जो जलाने और छप्पर छाने के काम आती है। नदी के किनारे किनारे काफी दूर भीतर की ओर तरहार है। इसे खादर और कछार भी कहते हैं। यहां बाढ़ के साथ बहकर आई हुई नई उपजाऊ मिट्टी की तहें बिछी हुई हैं। कहीं कहीं इसके नीचे डूबी हुई नावें गड़ी मिलती हैं। कहीं कहीं भूड़, धुस या बलुआ टीले हैं। कहीं कहीं दलदल और ताल हैं जहां धान की खेती होती है। कुछ स्थान ऊसर या रेहर हैं यहां नमकीन रेह बिछा हुआ है। बांगर की ऊंची भूमि से वर्षा जल शीघ्र बह जाता है यह भूमि बड़ी कड़ी और खुश्क होती है। यह भी उपजाऊ नहीं होती है।

घाघरा और कुवना के संगम के समीप कई भागों (वशेष कर महुली परगना) में तरहार की भूमि भी बाढ़ से पानी में डूब जाती है। फिर भी बस्ती ज़िले में कछारी भाग बड़े उपजाऊ हैं। यहां सिंचाई की बड़ी सुविधा है। कुएं और तालाब बहुत हैं। जमीन के नीचे थोड़ा खोदने से कुओं में पानी निकल आता है। तालाबों में वर्षा ऋतु में नदी की बाढ़ का पानी भर जाता है। खुश्क ऋतु में ये ताल सिंचाई के लिये बड़े उपयोगी होते हैं। यहां गेहूँ, गन्ना, आलू, सकरकन्द आदि कई फसलें बड़ी अच्छी होती हैं। वह उपजाऊ प्रदेश अधिकतर महुली परगने में निचली कुवना और मनवार नदियों के दक्षिण में स्थित है। कुछ भाग इनके उत्तर में है।

उपरहार सिरा—उत्तर की ओर घाघरा के ऊँचे किनारे के पास तरहार का अन्त हो जाता है। इसके आगे लहरदार ऊंची भूमि है। इसे उपरहार कहते हैं। उपरहार की जमीन अच्छी नहीं हैं। इसमें बालू बहुत है। यहां सिंचाई के लिये झीलें या तालाब भी नहीं हैं। कुओं के खोदने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। वे थोड़े ही दिन रहकर सूख जाते हैं। इस सिरे की चौड़ाई अधिक नहीं है। नगर (पश्चिमी) के पास यह कुछ अधिक चौड़ा है। पश्चिमी महुली में इसमें केवल एक एक गांव की इकहरी पंक्ति बसी है।

उपरहार जिले के मध्यवर्ती ऊंचे मैदान को घेरे हुये हैं। उत्तर की ओर यह राप्ती की पुरानी धारा तक चला गया है। इसमें बस्ती और खलीलाबाद तहसीलों के अधिकतर भाग शामिल हैं। इसकी मिट्टी अधिकतर दुमट है। इससे ऊंचे भागों की मिट्टी हलकी और बलुई है। इसके बीच वाले भागों में भारी चिकनी मिट्टी है। यहां धान बहुत होता है। इस ऊंचे भाग में कई छोटी धोटी धारायें हैं। इनकी ज़मीन में भी भेद है। कुवना के पश्चिम ओर हरैया तहसील में अच्छी समतल भूमि है। इसे रवई ने काट दिया है। रवई के ऊपरी भाग में रेहर है। कुवना के दोनों ओर की भूमि कुछ अच्छी नहीं है। इसे नालों ने काट दिया है। कुवना के पूर्व में अच्छी मिट्टी है। इसके ऊपरी भाग में कड़ी भाबड़ मिट्टी है।

राप्ती घाटी—बस्ती जिले के उत्तरी भाग में कई प्रकार की मिट्टी है। उपरहार के उत्तरी सिरे और राप्ती नदी के बीच में भाट या भात मिट्टी है। यह बड़ी उपजाऊ है। इसमें नमी बहुत दिनों तक बनी रहती है। इसमें गन्ना और पोस्त भी बिना सिंचाई के उगता है। यहां भांग जंगली उगती है। है। नदी की बाढ़ के साथ बह कर आने से यह मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि इसमें अलग से खाद नहीं डालनी पड़ती है। इसकी चौड़ाई अधिक नहीं है। पश्चिम को ओर ऊंची भूमि और भाट के बीच में रेह वाली निकम्मी भूमि है। बीच में यह कुछ ऊंची है आगे चलकर नीची हो गई है। यहीं पथरी ताल और दूसरी झीलें हैं।

राप्ती के उत्तर में धान का प्रदेश है। यह भाग ऊंचा है। लेकिन वर्षा अधिक होने और पानी ठीक ठीक न बहने से यह धान की खेती के लिये बहुत अनुकूल है। इस कछार का अधिकतर भाग राप्ती की पुरानी धारा और विलार के बीच में स्थित है। प्रबल वर्षा के बाद कुछ गांवों को छोड़ कर यह सब का सब बाढ़ से डूब जाता है। इसमें गेहूँ और जौ की फसलें भी होती हैं।

धुर उत्तर में नैपाल की सीमा के पास तराई है। इस ओर की भूमि बड़ी नम है। यहां छोटी छोटी बहुत नदियां हैं। इधर की अधिकतर ज़मीन गोरे ज़मीदारों के हाथ में हैं।

बस्ती जिले की १॰ भूमि ऊसर है। तीन फी सदी भूमि जंगल से ढकी है। पहले यहां साल और दूसरे पेड़ों का बन बहुत था। जन संख्या के बढ़ने से साफ कर लिया गया है। ऊसर भागों में प्रायः ढाक बहुत है। इस समय साल बूढ़ी राप्ती के किनारे मिलता है। कुछ भागो में महुआ, आम और दूसरे पेड़ हैं। धान, मसूर, गेहूँ, जौ, चना, मटर और गन्ना यहां की प्रधान फसलें हैं। वर्षा अधिक होने से सिंचाई की अधिक जरूरत नहीं पड़ती है। कुछ सिंचाई तालाबों और कुओं से होती है।

नगर—अमोढ़ा गांव रामरेखा नदी के दाहिने किनारे पर बस्ती से २८ मील की दूरी पर बसा है। पड़ोस में एक पुराने किले के खंडहर हैं।

बंसी कस्बा राप्ती नदी के किनारे बस्ती से ३२ मील दूर है। यहां तक पक्की सड़क आती है। कहते हैं राजा वंसदेव ने बंसी नगर बसाया था। पुराने किले के खंडहर दक्षिण-पूर्व की ओर एक ऊंचे टीले पर हैं। यहीं राजाओं ने १७६८ में तेगधर का मन्दिर बनवाया था। पहले वंसी अनाज के व्यापार के लिये एक बड़ी मंडी थी। १८५५ में राप्ती का मार्ग बदला और यह नावों के चलने योग्य न रही। तब से यह व्यापार कम हो गया। यहां तहसील, अस्पताल हाई स्कूल और अफीम के अफसर का बंगला है। वंसी में भाला बनाने का काम अच्छा होता है।

बस्ती शहर तीन भागों में बसा हुआ है। प्रान्तीय पक्की सड़क और रेलवे के बीच में धान के खेतों से घिरी हुई कुछ ऊंची भूमि पर पुरानी बस्ती है। यहां अधिकतर कच्चे घर हैं। बस्ती के राजा के किले के आस पास यह बहुत बढ़ गया। किले की एक बगल आध मील लम्बी थी। इसके चारों ओर गहरी खाई थी। इस समय खाई और दीवार के कुछ भाग शेष बचे हैं। पश्चिम की ओर राजा का निवास स्थान है। चौक में व्यापार होता है। यहां शनिवार और मंगलवार को बाजार लगता है। दक्षिण की ओर अफीम की गोदाम है। एक मील और आगे नया या पक्का बाज़ार है। यहां वकीलों और सरकारी नौकरों के घर हैं। सड़क के

दक्षिण में सराय और मिशन हाई स्कूल है। बाज़ार से आध मील पश्चिम की ओर सिविल लाइन है। उत्तरी सिरे पर कचहरी, तहसील और थाना है। मैदान के चारों ओर योरुपीय लोगों के बंगले हैं।

बेल्हार कलां बस्ती से उत्तर-पूर्व की ओर २१ मील दूर है। यहां दो मन्दिर और एक उजड़ा ठाकुरद्वारा है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

भारी बस्ती से ३० मील दूर है। यहां एक बड़ा तालाब है कहते हैं कि यह श्रीकृष्ण जी को बड़ा प्रिय था। यहां कार्तिक पूर्णिमा को स्नान का मेला लगता है। पास ही मन्दिर है।

बर्डपुर बंसी तहसील के टप्पा गौस में एक बड़ी योरुपीय जागीर है। इसका क्षेत्रफल, २९३१६ एकड़ है। उस्का से आनेवाली पक्की सड़क यहां समाप्त हो जाती है। यह स्थान नौगढ़ रेलवे स्टेशन से ७ मील और बस्ती से ५४ मील दूर है। गोरखपुर के कमिश्नर महाशय बर्ड की स्मृति में इसका नाम बर्डपुर पड़ा। १८३२ में यह भाग कलकत्ता के मेकलाचन नामी एक योरुपीय को ५० वर्ष के लिये दे दिया गया। फिर यह एक दूसरे योरुपीय को बेच दिया गया। यहां दलदल और जंगल था। यहां लोग कम रहते थे। नील उगाने के लिये आज़मगढ़ और छोटा नागपुर से किसान बुलाये गये।

बिस्कोहर पश्चिमी सीमा पर बस्ती से ५० मील दूर है। पहले यह नैपाली व्यापार का केन्द्र था। धान, गेहूँ भी नैपाल से आता है। सूती कपड़ा, बर्तन, शक्कर, तम्बाकू यहां से जाता है। यहां बाज़ार प्रति दिन लगता है।

डोमरियागंज राप्ती के दक्षिणी किनारे पर बस्ती से ३२ मील दूर है। गांव छोटा है। लेकिन यहां तहसील है। पहले यहां एक छोटा किला था। गांव में बाज़ार लगता है।

दुबौलिया घाघरा नदी से पांच मील और बस्ती से १६ मील दूर है। रेलवे के पहले यहां घाघरा द्वारा बड़ा व्यापार होता था। गदर में इस गांव का मालिक (देवी बक्स सिंह) विद्रोही हो गया। यह गांव जब्त कर लिया गया।

गायघाट बस्ती से १६ मील की दूरी पर घाघरा से ४ मील दूर बसा है। पहले यह घाघरा के एक दम किनारे था। नदी के हट जाने से इसका व्यापार घट गया है।

गणेशपुर बस्ती से तीन मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसके दक्षिण में रबई, पूर्व में कुवना और उत्तर में मझोरा नदियां हैं। यहां दो बाज़ार लगते हैं। यह पिंडारी जागीर का केन्द्र स्थान है। पहले यहां नागर गौतमों का अधिकार था। उन्होंने यहां किला और खाई बनाई थी। १८११ में यह उनसे ले लिया गया और एक योरुपीय महिला को दिया गया। वह इसका प्रबन्ध न कर सकी। ईस्ट इण्डिया कम्पिनी ने उससे मोल लेकर अमीर खां पिंडारी के एक साथी को भेंट में दे दिया।

हैंसर बस्ती से ३१ मील की दूरी पर घाघरा के व्यापार का एक केन्द्र है। गदर के समय में यह गांव ज़ब्त कर लिया गया और एक राजभक्त ज़मींदार को दे दिया गया।

हटिया मनवर नदी बायें किनारे पर एक गांव है और इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह बस्ती से १७ मील पश्चिम की ओर है। बाज़ार सप्ताह में दो दिन लगता है।

हरिहरपुर कटनेहिया नदी के बायें किनारे पर एक बड़ा गांव है। यह बस्ती से २१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। पहले यहां व्यापार अधिक होता था। इस समय २ दिन बाज़ार लगता है। यहां एक मिडिल स्कूल है।

इटावा पश्चिमी सिरे पर बस्ती से ४२ मील दूर है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। एक छोटा बाज़ार लगता है। ककराही घाट बूढ़ी राप्ती और बानगंगा के संगम पर बस्ती से ३८ मील की दूरी पर बसा है। बंसी से नैपाल को जानेवाली सड़क यहीं पर नदी को पार करती है। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां संगम स्नान का मेला होता है।

कलवारी पहले घाघरा के किनारे पर स्थित था। यह बस्ती से टांडा को जानेवाली पक्की सड़क से कुछ दूर पश्चिम में है। यहां अधिकतर कलवार रहते हैं। मसाले और अनाज का व्यापार होता है।

खलीलाबाद बस्ती से २२ मील पूर्व में तहसील का केन्द्र स्थान है। फैज़ाबाद से गोरखपुर को

पक्की सड़क यहां होकर जाती है। बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे सड़क के समानान्तर चलती है। स्टेशन खलीलाबाद कस्बे से १ मील दूर है। १६८० में काज़ी खलीलुर्रहमान ने इसे बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ गया।

लालगंज कुवना बदी के बायें किनारे पर कुवना और मनवर के संगम के सामने बसा है। यहां होकर मुंडवा रेलवे स्टेशन से गायघाट और टांडा को सड़क जाती है। यहां शक्कर बनाने और सूती कपड़ा छापने का काम होता है। बाजार में साधारण व्यापार होता है। चैत्र-पूर्णिमा को संगमस्नान का मेला होता है।

लोटन गांव घूंघी के दाहिने किनारे पर गोरखपुर की सीमा के पास बस्ती से ५७ मील दूर बसा है। नैपाल-युद्ध के समय एक ब्रिटिश सेना यहीं एकत्रित हुई थी। मधार नगर गोरखपुर से फैजाबाद को जानेवाली सड़क के पास बस्ती से २७ मील दूर है। सड़क के दक्षिण में रेलवे लाइन है। बाज़ार सप्ताह में एक बार लगता है। कार्तिक में एक छोटा मेला होता है। यहां कबीर शाह की छतरी है। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही यहां दर्शन करने आते हैं। कहते हैं कबीर ने १४५० ई० में यहीं शरीर छोड़ा था।

महुली गांव बस्ती से २१ मील उत्तर-पूर्व की ओर कुटनेहिया नदी के पास बसा है। पुराने किले के चिन्ह एक दम नष्ट हो गये हैं। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

मेंहदावल कस्बा बस्ती से २८ मील दूर है। यहां से कमैंनी घाट (राप्ती) खलीलाबाद और बस्ती को सड़कें गई हैं। राप्ती यहां से ५ मील दूर है। यहां थाना, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। शिवरात्रि (फाल्गुन में) को मेला लगता है।

नगर बस्ती से पांच मील की दूरी पर एक पुराना नगर है। इसके पश्चिम में चन्दे ताल है। पहले कुछ लोगों का अनुभव था कि महात्मा गौतम बुद्ध यहीं पैदा हुये थे। यहां गौतम राजाओं के एक पुराने किले के खंडहर हैं।

नौगढ़ जमूवर के किनारे एक प्रसिद्ध बाज़ार है। पास ही रेलवे स्टेशन है। यह नैपाल के व्यापार की एक बड़ी मंडी है। योरुपीय जागीरदारों से इसके बढ़ने में बड़ा प्रोत्साहन मिला।

शोहरत गंज नैपाल की सीमा से ५ मील दक्षिण की ओर एक प्रगतिशील बाज़ार है। इसे चांदपुर के बाबू शोहरत सिंह ने लगवाया था। धान कूटने तेल पेरने की मशीनों का प्रयोग आरम्भ किया था।

तामाक का छोटा गांव बस्ती से २५ मील दक्षिण की ओर है। शिवरात्रि के अवसर पर यहां बड़ा मेला लगता है।

उस्का गांव धमेला नदी के पूर्वी किनारे पर बस्ती से ४६ मील की दूरी पर बसा है। बाज़ार नैपाल से गोरखपुर को जानेवाली सड़क पर लगता है। उस्का बाज़ार में नैपाल की सरसों और दूसरा सामान बिकने आता है। पहले नैपाल के लिये यही स्टेशन सब से अधिक निकट था। रेलवे स्टेशन कस्बे से पश्चिम की ओर है।



गोरखपुर

गोरखपुर का जिला संयुक्त प्रान्त के धुर उत्तरी-पूर्वी सिरे पर स्थित है। यह समूचा जिला घाघरा नदी के उत्तर में है। घाघरा नदी गोरखपुर को आजमगढ़ और बलिया जिलों से अलग करती है। इसके पश्चिम में बस्ती जिला है। प्रायः दो मील तक घाघरा के उस पार फैजाबाद का जिला है। पूर्व में विहार के सारन-चम्पारन जिले हैं। पूर्व की ओर कुछ दूर तक छोटी बड़ी गंडक प्राकृतिक सीमा बनाती है। शेष पूर्वी सीमा कृत्रिम है। उत्तर की ओर नैपाल का स्वाधीन राज्य है। इस ओर कुछ भूमि तटस्थ छोड़ दी गई है। इसी के बीच में सीमा निश्चित करने के लिये पक्के खम्भे बना दिये गये हैं। गोरखपुर का जिला २६°'५' और २७°'२९' उत्तरी अक्षांशों और ८३°'४' और ८४°'२६' पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। घाघरा नदी के इधर उधर हो जाने से गोरखपुर जिले का क्षेत्रफल घटता बढ़ता रहता है। इसका औसत क्षेत्रफल ४५१५ वर्गमील है। क्षेत्रफल में गोरखपुर संयुक्तप्रान्त का सब से अधिक बड़ा जिला है।

भूरचना—गोरखपुर जिले से हिमालय की बाहरी श्रेणियां अधिक दूर नहीं हैं। इस ओर हिमालय की २७००० फुट ऊंची धवलागिरि चोटी वर्षा ऋतु और शीतकाल में आकाश निर्मल रहने पर उत्तर में प्रायः गोरखपुर शहर तक दिखाई देती है। हिमालय की बाहरी श्रेणी के दक्षिण में भावर का सूखा प्रदेश है जहां वर्षा-जल भेद्य चट्टानों के नीचे छिप जाता है। यह भावर प्रदेश नैपाल राज्य में है। भावर के दक्षिण में तराई की दस मील चौड़ी पेटी है। यह बहुत नम है। लेकिन मलेरिया फैलने के कारण यहां खेती अधिक नहीं होती है। यह गोरखपुर जिले की महाराज गंज तहसील के उत्तरी सिरे पर पाई जाती है। तराई के दक्षिण में बन की पेटी है। बन के बिखरे हुये प्रदेश जिले के प्रायः मध्य भाग तक पाये जाते हैं। बनों से यहां वर्षा अधिक होती है। सब कहीं हरा भरा रहता है। कुओं में पानी पास ही निकल आता है।

खुला हुआ मैदान प्रायः समतल है। इसका क्रमशः ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। उत्तर-पश्चिम में समुद्र-तल से भूमि की उंचाई ३५० फुट है। दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर भूमि केवल ३०५ फुट ऊंची रह गई है। कहीं कहीं रेतीले टीले हैं। रेतीले टीलों की एक श्रेणी महराज गंज तहसील के हाटा गांव के पास से आरम्भ होकर देउरिया तक चली गई है। सम्भव है यहां पुराने समय में गंडक या किसी दूसरी बड़ी नदी का मार्ग रहा हो। इसके पड़ोस में झीलों की एक पंक्ति फैली हुई है। कुआं खोदने पर निचले भाग में यहां छोटे छोटे कंकड़ों की तह मिलती है। इसी प्रकार के रेतीले टीलों की पंक्ति पडरौना और कसिया के बीच में मिलती है। यही जिले का सब से (३८६ फुट) ऊंचा भाग है। इनके अतिरिक्त नदियों के पड़ोस में जिले का नीचा कछारी मैदान है। कछार के ऊपर ऊंचा मैदान या बांगर है।

जिले के पूर्वी भाग में भाट प्रदेश है। यह बड़ी गंडक की लाई हुई कांप से बना है। इसमें चूना अधिक है। इस मिट्टी में अधिक समय तक नमी रहती है। इससे बिना सिंचाई के ही यहां फसल उग आती है। लेकिन इस मिट्टी से कच्ची दीवारें नहीं बनाई जा सकतीं इसी से इस ओर के गांवों के घर छप्परों से छाये जाते हैं इनकी दीवारें पतली लकड़ियों से बनाई जाती हैं। इस जिले में एक विशेषता यह है कि यहां ऊसर कहीं नहीं पाया जाता है।

नदियां—बड़ी गंडक जिले के उत्तरी-पूर्वी भाग की प्रसिद्ध नदी है। यह नैपाल में हिमालय की हिमाच्छादित श्रेणी से निकलती है। त्रिबेणी के पास (जो जिले की सीमा से १० मील दूर है) यह पहाड़ी नद कन्दराओं को छोड़कर मैदान में प्रवेश करती हैं। इसे नारायणी भी कहते हैं। नैपाल में इसे शालिग्रामी कहते हैं। यह दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है और कुछ दूर तक जिले की सीमा बनाती है और इस जिले को चम्पारन जिले से प्रथक करती है। पडरौना तहसील के बन के कुछ गांव इसके

बायें किनारे पर स्थित हैं। इसके आगे यह विहार में प्रवेश करती है और पटना के पास गंगा में मिल जाती है। पहले कुछ दूर गोरखपुर जिले की सीमा बनाने के बाद यह सीमा से दूर हो जाती है। अन्त में यह फिर जिले की सीमा के पास आ जाती है। बीच वाले भाग में गंडक की सोता नाम की एक शाखा सीमा बनाती है। गंडक बड़ी नदी है। गरमी की ऋतु में भी इसमें अधिक जल रहता है। जिले के जिस स्थान को यह प्रथमबार छूती है वहां इसका जल बड़ा ठंडा और निर्मल रहता है। यहां इसकी धारा भी बड़ी तेज़ है। इसके तली में छोटे छोटे पत्थर बिछे हैं। पानी गहरा होने से गंडक में बड़ी बड़ी नावें चल सकती हैं। लेकिन इसके कुछ भागों में भंवर हैं जिससे नावें संकट में पड़ जाती हैं। छोटी नावें त्रिवेणी सिकन्दरा के समीप तक पहुँच जाती हैं। वर्षा ऋतु में गंडक में अचानक भयानक बाढ़ आ जाती है। इससे नैपाल का विशाल बन प्रदेश और गोरखपुर जिले की सीमा के पास का बहुत सा भाग जलमग्न हो जाता है। इसकी बाढ़ का पानी चन्दन और रोहिन नदियों में पहुँचता है। दोमाखंड के पास इसकी बाढ़ का कुछ पानी छोटी गंडक में भी पहुँच जाता है। पहले बाढ़ का पानी बनरी नदी में आता है जो पडरौना के पास बंसी नदी में मिल जाती है। बंसी नदी बड़ी गंडक में मिलती हैं। इस प्रकार बड़ी गंडक की बाढ़ का पानी फिर उसी (बड़ी गंडक) में पहुँच जाता है। बाढ़ का कुछ पानी खनुआ नदी में पहुँचता है। जो राम-भार ताल में होती हुई-कसिया के समीप वाले स्थानों को जलमग्न कर देती है। लेकिन बाढ़ कुछ ही समय तक रहती है। कभी कभी खरीफ की फसल कट जाने के बाद बाढ़ आती है। इससे इसकी बाढ़ से अधिक हानि नहीं होती है। बगहा के पास बड़ी गंडक के ऊपर रेल का पुल बना है। गोला, पिपरा घाट, साहबगंज आदि स्थान पर इसे पार करने के लिये नावें रहती हैं। बड़ी गंडक में कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। बंसी नदी वास्तव में गंडक की छांड़ (छोड़ी हुई धारा) है। कुछ दूर तक यह जिले की सीमा बनाती है। साहबगंज के पास यह सोता में मिल जाती है। झरई इस समय घाघरा में मिलती है। पहले यह गंडक की ही छांड़ (छोड़ी हुई धारा) थी। झरई गरमी की ऋतु में प्रायः सूख जाती थी। वर्षा ऋतु में यहां मलेरिया ज्वर बहुत फैलता है। १९०८ में इसकी तली गहरी कर दी गई।

छोटी गंडक भी बड़ी गंडक की पुरानी धारा है। यह नैपाल के बाघ बन के पास आरम्भ होती है। सितलापुर के पास यह ब्रिटिश जिले में प्रवेश करती है। इसके एक मील आगे इसकी दो धारायें हो जाती हैं। एक धारा उत्तर-पश्चिम की ओर बहकर चन्दन में मिल जाती है। दूसरी धार छोटी गंडक नाम से दक्षिण की ओर बहती है। हेतिमपुर तक यह पडरौना की पश्चिमी सीमा बनाती है। शाहजहांपुर और सलेमपुर परगनों में बहती हुई सिमरिया के पास जिले के उत्तरी-पूर्वी कोने पर यह घाघरा में मिल जाती है। वर्षा ऋतु को छोड़कर शेष ऋतुओं में यह प्रायः सूखी पड़ी रहती है। खेकरा, हिरनी, घटनी, मौन आदि नाले इसमें मिलते हैं।

राप्ती गोरखपुर जिले की प्रधान नदी है। पहले इसे इरावती कहते थे। इससे बिगड़कर इसका नाम रावती पड़ा। रावती से बिगड़ कर इसका नाम राप्ती पड़ गया। यह नैपाल में हिमालय की बाहरी श्रेणी से निकलती है। बहराइच गोंडा और बस्ती जिलों में बहती हुई मगलहा गांव के पास यह गोरखपुर जिले में प्रवेश करती है। इसके आगे कुछ मील तक जिले की सीमा बनाने के बाद जिले के भीतर बहती है। यहां इसे धमेला कहते हैं। राप्ती का मार्ग बड़ा टेढ़ा है। गोरखपुर शहर के पास होकर बहती हुई बरहज के समीप यह घाघरा में मिल जाती है। बाढ़ के बाद राप्ती उपजाऊ कांप छोड़ देती है। इसकी छोड़ी हुई बालू में भी कुछ वर्षों के बाद फसलें होने लगती हैं। पहले इसमें १०० टन बोझ वाली नावें चला करती थीं। इसके ऊपर बन और लकड़ी ढोने का काम बहुत होता था। रेलवे के खुल जाने से नदी का व्यापार नष्ट हो गया। राप्ती के ऊपर भाऊपार घाट और बर्ड घाट में पीपों का पुल बन जाता है। शेष स्थानों में राप्ती को पार करने के लिये नावें चला करती हैं। राप्ती में कई नदियां मिलती हैं। घूंघी बांयें किनारे पर मिलती है। घूंघी

नदी नैपाल तराई की बाहरी पहाड़ियों से निकलती है। यह दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है और कई मील तक नैपाल राज्य और गोरखपुर जिले के बीच में सीमा बनाती है। इसी बीच में तराई की डंडा और डूंड़ी दो छोटी नदियां इसमें मिलती हैं। इसके आगे यह दक्षिण की ओर मुड़ती है और कुछ दूर तक बस्ती जिले को गोरखपुर जिले से प्रथक करती है। ब्रिजमनगंज इसी के किनारे स्थित है। आगे चलकर यह दो धाराओं में बँट जाती है। यह दोनों धारायें रिगौली के पास धमेला में मिल जाती हैं। इस पोह और एक दो बन प्रदेश की बहुत छोटी नदियां मिल जाती हैं। नैपाल में इसे तिनान कहते हैं। वहां वर्षा के अन्त में इसके आर पार बांध बना लिया जाता है और इसका जल सिंचाई के काम आता है। इसकी तली गहरी और रेतीली है। इसका जल निर्मल है। वर्षा ऋतु में उमड़ कर यह बड़ी नदी हो जाती है। इसके अन्त में यह सिकुड़ जाती है और इसमें पांज हो जाती है। धमेला राप्ती की पुरानी धारा है। इसमें बस्ती जिले की तराई से आनेवाली कुहरा और दूसरी छोटी छोटी नदियां मिल जाती हैं। गोरखपुर जिले में १० मील बहने के बाद कमैनी घाट के पास यह राप्ती में फिर मिल जाती है। इसके किनारे ऊंचे हैं। यह नाव चलाने के लिये बड़ी अच्छी है। वर्षा ऋतु में इसमें २० फुट ऊंची बाढ़ आती है। इस बाढ़ से इसके समीप की भूमि डूब जाती है। पहले इसके बायें किनारे से कुछ दूर बसे हुये उस्का और धानी के बीच में इस नदी के ऊपर बहुत सा सामान ढोया जाता था। रेल के खुल जाने से अब अनाज बैल गाड़ियों पर लाद कर ब्रिजमन गंज स्टेशन को पहुँचा दिया जाता है।

राप्ती की दूसरी सहायक नदी रोहिन है जो नैपाल से आकर विनायकपुर परगने में प्रवेश करती है। हवेली परगने को पार करने के बाद यह गोरखपुर शहर के पास राप्ती में मिल जाती है। इसके किनारे आरम्भ में सपाट है। लेकिन जिले में अधिक आगे बढ़ने पर यह मैदान की दूसरी नदियों के समान हो जाती है। छोटे छोटे पत्थर पीछे छूट जाते हैं। डोमिनगढ़ के पास इस पर रेल का पुल बना है। सखुई के पास रोहिन में नैपाल से आनेवाली बघेला नदी मिलती है। कुछ छोटे नालों का पानी लेकर पियास या झरई नदी भी रोहिन में मिलती है। झरलहिया के पास इस में बलिया नदी मिलती है। चिलुआ नदी चिलुआ ताल को पार करके मनीराम के पास रोहिन में मिलती हैं। दाहिने किनारे पर रोहिन में केवल कलन नदी मिलती है। रोहिन बघेला और पियास नदियां सिंचाई के काम आती हैं। सींचने के लिये नैपाल में इनमें बांध बना लिये जाते हैं। इस जिले में भी कहीं कहीं इनके पानी से सिंचाई होने लगी है।

तूरा एक छोटी नदी है। यह रामगढ़ बन में होती हुई दक्षिण की ओर बहती है। मंझा गांव के पास यह गर्राया गौरा में मिल जाती है। गौरा में रामगढ़ और नरही ताल की बाढ़ का पानी आता है। कुछ दूर तक यह राप्ती की समानान्तर बहती है। सिमरौना नाला के मार्ग से राप्ती की बाढ़ का पानी गौरा में पहुँच जाता है। अधिक दक्षिण में गौरा में फरेंद नदी मिलती है। फरेंद के पड़ोस में जंगली जामुन बहुत हैं। इसी से इसका यह नाम पड़ा। इसका मार्ग बड़ा टेढ़ा है। समोगर के पास यह राप्ती में मिल जाती है। निचले मार्ग में इसे प्रायः कटना नाम से पुकारते हैं। मदनपुर के पास इसमें मझना नदी मिलती है। अमी और तरौना नदियां राप्ती के दाहिने किनारे पर मिलती हैं। अमी नदी बस्ती जिले के रसूलपुर, परगने से निकलती है। ४४ मील बहने के बाद रामपुर के पास यह गोरखपुर जिले में प्रवेश करती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुई सोहगौरा के पास यह राप्ती में मिल जाती है। यह मन्द वाहिनी छोटी नदी है। केवल वर्षा ऋतु में यह उमड़कर अमियर ताल भर देती है। बाढ़ में बहुत सी भूमि डूब जाती है। बांगर के कुछ भाग द्वीप के रूप में बच जाते हैं। एक द्वीप कलेसर से नेवास तक और दूसरा हर्दिया से मलौन तक आज़मगढ़ सड़क के दोनों ओर बन जाता है। राप्ती का कछार बाढ़ में प्रतिवर्ष डूब जाता है। बांगर को बचाने के लिये बांध बना दिये गये हैं। प्रबल बाढ़ में बांध भी टूट जाते हैं। एक बांध

१६ मील लम्बा है और पीपों के पुल से कुइन बाज़ार तक राप्ती के पूर्वी किनारे पर चला गया है। यह बांध तीन फुट से १२ फुट तक ऊंचा और ४ फुट चौड़ा है। लहसारी नाले के पास यह ३० फुट ऊंचा है।

तरैना नदी उनौला परगने के दक्षिण में निकलती है और धुरिया पार होकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। भेड़ी ताल में पहुँचकर यह इसके पूर्वी सिरे से फिर निकलती है। पूर्व की ओर बहकर यह राप्ती में मिल जाती है। गरमी की ऋतु में इसमें बहुत कम पानी रह जाता है। वर्षा ऋतु में इसमें प्रबल बाढ़ आती है। १८७१ की बाढ़ में इसने आज़मगढ़ को जानेवाली सड़क का पुल तोड़ दिया। इस नदी में नाव चलाने के लिये वर्ष भर पानी नहीं रहता है। लेकिन सिंचाई के लिये यह बड़ी उपयोगी है।

घाघरा को सरयू और देहवा भी कहते हैं। इसमें चौका या सारदा और कौरियाला का पानी आता है। दोनों नदियां बाराबंकी जिले के बहराम घाट के पास मिल जाती हैं। चौका और सारदा दोनों ही हिमालय के हिमागारों से निकलती हैं। सारदा अल्मोड़ा से और चौका नैपाल से आती है। घाघरा भारतवर्ष की विशाल नदियों में से एक है। इसकी तली चौड़ी और रेतीली है। इस रेतीली पेटी में घाघरा अपना मार्ग बदलती रहती है घाघरा की गहरी धारा जिले की सीमा बनाती है। इसके दूसरी ओर आज़मगढ़ और बलिया के जिले हैं। बलिया के सामने वाला किनारा तुरतीपुर के पड़ोस में कड़ा और कंकरीला है। लेकिन आज़मगढ़ जिले के समीप रेतीली तली को काटकर घाघरा प्रायः प्रतिवर्ष अपना मार्ग बदल देती है। इससे गोरखपुर और आज़मगढ़ जिलों के क्षेत्रफल में भी परिवर्तन होता रहता है। मझदीप के पास घाघरा गोरखपुर जिले को प्रथमबार छूती है। गोला, बढ़लगंज, राजपुर और भागलपुर के पास बहती हुई पूर्व में यह सारन जिले में पहुँचती है। रेलवे के खुल जाने से नावों का व्यापार नष्ट हो गया। इसी से नगरों का भी ह्रास हो गया। लेकिन इस नदी के समीप बसे हुये बरहज नगर में रेल के आजाने से इसकी उत्तरोत्तर उन्नति होती हुई। घाघरा के किनारे ऊंचे और सपाट हैं। फिर भी भयानक बाढ़ में यह नदी उमड़कर अपने पड़ोस की भूमि को डुबा देती है। बाढ़ के बाद स्थान स्थान पर इसकी धारा के बीच में द्वीप निकल आते हैं। बायां किनारा रेतीला है। अतः इस ओर बाढ़ दूर तक पहुँचती है। भागलपुर के पास तुर्तीपुर में घाघरा के ऊपर रेल का पुल बना है। कई स्थानों पर घाघरा को पार करने के लिये (नाव के) घाट हैं। आज़मगढ़ को जानेवाली प्रान्तीय सड़क के मार्ग का घाट अधिक प्रसिद्ध है। यह गोरखपुर जिले में भागलपुर और आज़मगढ़ जिले में दोहरी घाट है। राप्ती और छोटी गंडक के अतिरिक्त कुवना या कुआनों नदी इस जिले में घाघरा में मिलती है। कुवना बहराइच जिले से निकलकर गोंडा और बस्ती जिलों को पार करती हुई कुछ दूर तक बस्ती और गोरखपुर जिलों के बीच में सीमा बनाती है। धुरिया पार परगने को पार करके शाहपुर के पास वह घाघरा में मिल जाती है। यहां इसकी तली गहरी और रेतीली है। कभी कभी घाघरा की बाढ़ का पानी इसमें आ जाता है। गोरखपुर ऐसी झीलों की संख्या बहुत है जिनमें साल भर पानी रहता है। अधिकतर झीलें नदियों के छोड़े हुये पुराने मार्ग में स्थित है। सिरों पर कांप के भर जाने से लम्बी अर्द्ध चन्द्राकार झीलें बन गईं। इनके अतिरिक्त कुछ क्षणिक झील और दलदल हैं जो वर्षा ऋतु में पानी से भर जाते हैं और शेष ऋतुओं में सूख जाते हैं। गोरखपुर शहर के पास कसिया को जानेवाली सड़क के दक्षिण में रामगढ़ ताल है। यह गोरों के कब्रिस्तान से लोहे के पुल तक चला गया है। पहले इसमें नरकुल बहुत होते थे। इनसे मलेरिया फैलता था। इसलिये म्यूनिसिपेलिटी ने कटवाकर एक मार्ग से ताल के पानी को राप्ती में पहुँचाने का प्रयत्न किया। पर इसका फल उल्टा हुआ। वर्षा ऋतु में राप्ती की प्रबल बाढ़ का जाल ताल में आने लगा। अतः बांध बनाकर लहसारी के पास नाले का मुंह बन्द कर दिया गया रामगढ़ ताल

में मछलियां बहुत हैं। जिले के पास वाले मल्लाह पकड़ा करते हैं।

कुछ मील दक्षिण-पूर्व की ओर राप्ती के कछार में अधिक छोटा नरहै ताल है। गर्रा नदी इसे रामगढ़ ताल से मिलाती है। ग्रीष्म ऋतु में इसका अधिकतर भाग सूख जाता है। उस समय गाय भैंस इसकी घास चरा करती हैं।

डोमिनगढ़ और कर्मैनी झीलें गोरखपुर शहर के पश्चिम में स्थित हैं। राप्ती में मिलने से पूर्व रोहिन नदी ने अपनी बाढ़ से इन झीलों को बनाया है। इन दोनों के बीच में कुछ ऊंची भूमि है। लेकिन वर्षा की प्रबल बाढ़ में दोनों मिलकर एक हो जाते हैं। रेलवे के बांध से उत्तर की ओर सात मील तक पानी फैल जाता है। वर्षा के अन्त में अधिकांश पानी राप्ती में बह जाता है और ताल छोटे रह जाते हैं।

इसी प्रकार की छोटी छोटी झीलें राप्ती के दाहिने किनारे पर हैं। गोरखपुर शहर से ६ मील दक्षिण की ओर आजमगढ़ को जाने वाली सड़क के पास ही नन्दौर ताल स्थित है। यह ढाई मील लम्बा और आध मील चौड़ा है। इसका जल बड़ा निर्मल है। इसमें मछलियां बहुत हैं। वर्षा ऋतु में इसका जल बहुत बढ़ जाता है। लेकिन इसमें वर्ष भर पानी बना रहता है। इससे कुछ मील दक्षिण की ओर अमियर ताल है। यह अमी नदी की बाढ़ के जल से बना है। यह कई मील लम्बी घाटी को घेरे हुये हैं। इसके पूर्व में बिजरा ताल है। वर्षा के अन्त में इसके किनारों पर सूखी भूमि निकल आती है। इसमें रबी की बढ़िया फसल होती है।

चिल्लू पार परगने में घाघरा और राप्ती नदियों के बीच में भेंड़ी ताल है। यह तरैना नदी की बाढ़ से बना है जो इस ताल में होकर जाती है। वर्षा ऋतु में यह पांच मील लम्बा हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में सूख कर यह बहुत छोटा रह जाता है। कांप के भर जाने से इसका विस्तार लगातार कम होता जा रहा है। इसके पूर्वी सिरे से बचा हुआ पानी राप्ती नदी में पहुँचता है। कभी कभी प्रबल बाढ़ में यह अपने समीप के प्रदेश को घाघरा के किनारे तक डुबा देती है। इसमें मछलियां बहुत हैं। इसके घोंघे चूना बनाने के लिये इकट्ठे किये जाते हैं।

चिलुआ ताल हवेली परगने की चिलुआ नदी के फैलने से बना है। यह बहुत लम्बा और तंग है। मनीराम के पास यह सिकुड़ कर नदी का रूप धारण कर लेता है। इसका जल रोहिन में मिल जाता है। पहले इसके संकुचित भाग में पक्का पुल बना था। प्रबल बाढ़ ने पुल तोड़ डाला इन्हीं महराबों के ऊपर रेल का पुल बनाया गया।

पुल के पश्चिम में इसे महेश्वर ताल नाम से पुकारते हैं। इसके बीच में एक छोटा द्वीप है। कहते हैं पुराने समय में यहां एक राजा का महल बना हुआ था। यहां मछलियां बहुत हैं। इसके पड़ोस में मल्लाह बहुत रहते हैं। रोहिन के पश्चिम में रोहिन और राप्ती के द्वाब में कई छोटे छोटे ताल हैं।

पूर्वी भाग में रामाभर ताल प्रधान है। यह कसिया से देउरिया को जाने वाली पक्की सड़क के पश्चिम में स्थित है। वर्षा काल में यह एक मील लम्बा और चौथाई मील चौड़ा हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में सूख कर यह आधा रह जाता है। इसमें मछलियां बहुत हैं। इसके पानी से सिंचाई भी होती है। इस भाग के दूसरे ताल अधिक छोटे हैं।

बन को छोड़कर गोरखपुर जिले की २५ फी सदी (एक चौथाई) भूमि जलमग्न, उसर अथवा अन्य कारण से खेती के काम नहीं आती है। इसमें कुछ भूमि एक दम पानी से घिरी है। कुछ भूमि में रेल, सड़क और घर बने हैं। बहुत ही थोड़ी भूमि उजाड़ है जहां खेती नहीं हो सकती है। कुछ भूमि में बाग और चरागाह हैं। गोरखपुर जिले का बन बड़ा उपयोगी है। पहले बन अधिक भूमि घेरे हुये था। खेती के बढ़ने से बन का क्षेत्रफल घट गया है। १८३० ईस्वी से नाम मात्र का लगान लेकर बन का पट्टा दिया जाने लगा। इससे कुछ ही समय में बहुत सा बन साफ कर लिया गया। १८५० में यह प्रथा बन्द कर दी गई और बन सरकारी रक्षित बन घोषित कर दिया गया। जब्ती की भूमि भी इसमें मिला दी गई। इसी से जिले में अलग अलग टुकड़ों में बिखरा हुआ बन प्रदेश पाया जाता है। इस जिले में समस्त बन १७३ वर्ग मील है।

यह १४ भागों में बंटा हुआ है। इस प्रदेश की भूमि बलुई दुमट है। इस पर सड़ी हुई बनस्पति की पतली तह बिछी हुई हैं। दलदलों में चिकनी मिट्टी है। कहीं कहीं कंकड़ है। कहीं एकदम बालू है। दोमाखंड बन का वर्षा जल बहकर बड़ी गंडक में जाता है। उत्तरी और मध्यवर्ती भाग में रोहिन और पियास का प्रवाह प्रदेश है। नदियों के पड़ोस में प्रायः दलदल है। वर्षा ऋतु में नदियों के पास वाले बन प्रदेश पानी में डूब जाते हैं। इनमें जंगली जामुन और घास है। बन का सबसे अधिक मूल्यवान पेड़ साल है। यह निचली भूमि से १० से लेकर ४० फुट की ऊँचाई तक उगता है। जिले के १०३ वर्ग मील बन साल के वृक्षों से घिरा है। अधिक बड़े पेड़ कम हैं। जहां वर्षा जल ठीक ठीक नहीं बह पाता है वहां साल के पेड़ नहीं होते हैं। अधिक कड़ी चिकनी मिट्टी में भी साल नहीं होता है। घास वाले भागों में असेना के पेड़ होते हैं। नदियों के समीप जंगली जामुन के अतिरिक्त हल्दू और खैर के वृक्ष भी होते हैं। गंडक से दूसरे सिरे पर डोमाखंड में ६०० एकड़ भूमि में केवल खैर (कत्था) के ही पेड़ हैं। बन में महुआ शीशम सेमल और आंवला के भी पेड़ पाये जाते हैं। सरकारी बन के अतिरिक्त महराजगंज और पडरौना तहसील में कुछ बन अलग अलग व्यक्तियों के हाथ में भी है। इसमें भी साल और दूसरे उपयोगी वृक्ष पाये जाते हैं। पहले बन में जंगली पशु बहुत थे। चीता गंडक के समीप वाले बन और डोमाखंड में पाया जाता है। कुछ भागों में तेंदुआ बहुत हैं। भेड़िया कम हैं। भालू भी मिलते हैं। घाघरा के पड़ोस वाले दियरा (जङ्गल) में जङ्गली सुअर, चीतल और नील गाय बहुत हैं। नदियों में घड़ियाल पाये जाते हैं।

जलवायु—पश्चिमी जिलों की अपेक्षा गोरखपुर जिले की जलवायु अधिक समशीतोष्ण है। बन और पर्वत पास होने से यहां ग्रीष्म ऋतु में गरमी अधिक विकराल नहीं होने पाती है। परम तापक्रम छाया में १०५ अंश से अधिक ऊँचा नहीं होता है। ११० अंश तक कभी नहीं पहुँचा है। प्रायः १०० अंश रहता है। ग्रीष्म के आरम्भ में पर्वत की ओर से तूफान आ जाया करते हैं। यहां लू भी दो तीन सप्ताह से अधिक नहीं चलती है। धूल भरी आँधी भी बहुत कम आती है। हवायें प्रायः सभी ऋतुओं में पूर्व की ओर से आती हैं। शीतकाल बड़ा मनोहर होता है। लेकिन दिसम्बर या जनवरी का तापक्रम ५० अंश से कम नहीं होने पाता है। वर्षा ऋतु में तराई के पास वाली महराजगंज और पडरौना तहसीलों में मलेरिया बहुत फैलता है।

गोरखपुर जिले में पर्वतीय प्रदेश को छोड़ कर मैदान के जिलों में सबसे अधिक वर्षा होती है। औसत से यहां ५२ इंच से अधिक वर्षा होती है। उत्तर के बन प्रदेश में सबसे अधिक वर्षा होती है। महराजगंज में प्रायः ६० इंच वर्षा होती है। देउरिया में ४६ इंच वर्षा होती है। किसी किसी वर्ष (१८९९) में जिले में औसत से ७३ इंच वर्षा हुई है। उस वर्ष महराजगंज में ८२ इंच वर्षा हुई। किसी वर्ष यहां ४० इंच से कम वर्षा हुई।

कृषि—खेती के लिये यहां प्रायः सभी प्राकृतिक सुविधायें हैं। फिर भी इस जिले में कृषि अधिक उन्नत दशा में नहीं है। यहां की भूमि बड़ी उपजाऊ है। ऊसर भूमि का प्रायः अभाव है। प्रचुर वर्षा होने से सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती है। पर सिंचाई की पूरी सुविधा है। कुओं में ५ गज की गहराई पर पानी निकल आता है। झीलों, तालाबों और नदियों से भी सिंचाई होती है। फिर भी जिले के बड़े भाग (जैसे कछार) में केवल एक फसल उगाई जाती है। बाढ़ आने पर इस फसल का भी निश्चय नहीं रहता है। उत्तर और पूर्व में भी दूसरी फसल उगाने का विशेष प्रयत्न नहीं किया गया। केवल उपजाऊ भाट (पडरौना तहसील और देउरिया के कुछ भाग में भाट भूमि है) प्रदेश में दो फसलें होती हैं। दूसरी फसल रबी की होती है। बन को छोड़कर जिले की ७५ फीसदी भूमि में खेती होती है। नदियों के समीप नीचा कछार है। इनसे आगे ऊपर ऊँचा बांगर है। बांगर में बलुआ (भूड़) मिट्टी है। कहीं कहीं मटियार, चिकनी मिट्टी है। अधिकतर भाग में दोरस या दुमट मिट्टी पाई जाती है। नैपाल की सीमा के पास तराई है। यह बांगर का ही अंग है यहां

अधिकतर चिकनी मिट्टी पाई जाती है। तराई की औसत चौड़ाई १० मील है। इसमें कुला (छोटी नहरों) से सिंचाई होती है जो छोटी नदियों से बांध बनाकर निकाली गई हैं। यहां पानी की अधिकता होने से धान बहुत होता है। रबी की फसल कम होती है। कुछ अल्सी अवश्य होती है।

बांगर के उत्तरी भाग में प्रचुर वर्षा होने से धान बहुत होता है। शीघ्र उगने वाले धान ऊंची भूमि में और देर से तैयार होने वाले धान नीची भूमि में उगाये जाते हैं। उत्तरी बांगर और तराई में कोई स्पष्ट विभाजक सीमा नहीं है। बांगर के दक्षिणी भाग में चना, जौ, गेहूँ आदि रबी की फसल प्रधान है। बलुई भूमि में अच्छी फसलें नहीं होती है। राप्ती और रोहिन के दोनों किनारों पर बलुआ भूमि है। यहां धान मकई, ईख और अरहर की फसलें होती हैं। कछार में मकई, बाजरा और अरहर को छोड़कर खरीफ की अन्य फसलें अच्छी नहीं होती हैं। लेकिन यहां रबी की फसल अच्छी होती है।

भाट प्रदेश के उत्तरी भाग में भी प्रधान फसल धान है। हलकी धूसी मिट्टी में पूर्वी सीमा के पास मकई और ज्वार बाजरा होता है। बड़ी गंडक के धाब कछारी कांप में कछार की अपेक्षा बाढ़ से कम हानि होती है। धाब में धान और ईख की खेती होती है। भाट में रबी की फसल अधिक अच्छी नहीं होती है। इस जिले में रबी की अपेक्षा खरीफ की फसल अधिक महत्व की है। जिले की एक तिहाई भूमि इतनी अच्छी (दो फसली) है कि इसमें वर्ष में दो फसलें होती हैं। खरीफ की फसल में सब कहीं प्रधान स्थान धान का है। भदई धान भादों महीने में और अगहनी अगहन महीने में तैयार होता है। अगहनी धान अधिक मूल्यवान होता है। इसे उगाने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। कोदो निर्धन लोगों का प्रधान भोजन है। यह जिले के सभी भागों में उगाया जाता है। खरीफ की फसल की पन्द्रह फीसदी भूमि में कोदो उगाया जाता है। मकई की खेती बढ़ रही है। खरीफ की लगभग ८ फीसदी भूमि में मकई उगाई जाती है। ईख जिले की मूल्यवान फसल है। लगभग ७ फीसदी भूमि में ईख होती है। अरहर भी महत्व की फसल है। अकेली अरहर केवल ४ फीसदी भूमि में उगाई जाती है। यह प्रायः ज्वार कोदो और तिल के साथ मिलाकर बोई जाती है। पहले इस जिले में नील बहुत होता था। कृत्रिम सस्ते नील ने इसकी खेती को कम कर दिया है। कुछ भूमि में मडुआ ज्वार और बाजरा की फसलें होती हैं। रबी की फसल में गेहूँ सब से अधिक मूल्यवान है। रबी की फसल की १२ फीसदी भूमि में गेहूँ उगाया जाता है। कुछ गेहूँ जौ के साथ मिलाकर बोया जाता है। इसे गोह-जई कहते हैं। १४ फीसदी भूमि में जौ बोया जाता है। पडरौना और देउरिया तहसीलों में इससे भी अधिक गेहूँ होता है। जौ के बाद दूसरा स्थान मटर का है। ८ फीसदी भूमि में चना बोया जाता है कुछ गेहूँ और जौ के साथ मिलाकर बोया जाता है। जिले के उत्तरी भाग में तोर, सरसों आदि तिलहन बहुत होते हैं। कुछ भाग में पोस्ता बोया जाता है। इससे अफीम निकलती है जो गाजीपुर के सरकारी कारखाने को भेज दी जाती है। मसूर आदि कुछ अन्य फसलें बहुत थोड़ी मात्रा में होती हैं।

कारबार—गोरखपुर कारबारी जिला नहीं है। फैजाबाद और आजमगढ़ की भांति यहां बढ़िया कपड़ा नहीं बुना जाता है। जुलाहे कुछ मोटा कपड़ा गाढ़ा बुनते हैं। टाट भी बुना जाता है। गोरखपुर शहर में सूत और ऊन को मिलाकर धुस्सा बुना जाता है। कुछ ठठेरे पीतल के बर्तन बनाते हैं। पडरौना में फूल के बर्तन अच्छे बनते हैं। मिट्टी के साधारण बर्तन भी बनाये जाते हैं। कुछ स्थानों में टोकरियां बनाई जाती है। सांभर, नील गाय आदि की खाल को साल की छाल से कमाने का काम होता है। इस पर रेशम की कढ़ाई होती है। काढ़ने से पहले यह मखमल के समान मुलायम कर लिया जाता है। देउरिया तहसील के लार गांव में साबुन बनाने का काम होता है। यह खारी मिट्टी से बनाया जाता है। प्रति वर्ष यहां २००० मन से अधिक साबुन बनता है और नैपाल को भेज दिया जाता है। जिले के कई नगरों में

गुड़ और शक्कर बनाने का काम होता है। यहां से ६ लाख मन गुड़ और चीनी बाहर भेजी जाती है। गोरखपुर जिले में नैपाल से प्रतिवर्ष प्रायः २ लाख मन चावल आता है। तिलहन, घी और चमड़ा भी आता है। कुछ तांबा भी आ जाता है। यहां से विलायती कपड़ा, नमक, चीनी आदि नैपाल को जाता है।

जन-संख्या—गोरखपुर जिले की जन-संख्या लगभग ३० लाख है। केवल पांच फीसदी मनुष्य कस्बों में रहते हैं। शेष छोटे छोटे गांवों में रहते हैं। जिन नगरों की जन-संख्या ५००० से अधिक है वे केवल बारह (गोरखपुर, बरहज, पडरौना, सलेमपुर-मझौली, बढ़लगंज, बांसगांव, पैना और बसगवां) हैं। इस जिले में प्रायः ९० फीसदी हिन्दू और १० फीसदी मुसलमान हैं। अन्य धर्मावलम्बियों की संख्या कुछ ही सौ है। हिन्दुओं में सब से अधिक संख्या चमारों की है। इनके पश्चात् अहीर ब्राह्मण, कुरमी कोरी, राजपूत, केवट (मल्लाह) कहार, बनिया, कुम्हार आदि हैं। कुछ मगहियां डोम लोगों में (सम्भवतः निर्धनता के कारण) अधिकतर चोरी करने का स्वभाव पड़ गया था।

थारू लोगों की संख्या प्रायः ३ हजार है। यह अधिकतर विनायकपुर और तिलपुर परगनों में रहते हैं। यह कमायूं की तराई में रहने वाले थारू लोगों के समान हैं। यहां बड़े नियम से रहते हैं। इन्हें मलेरिया के प्रदेश में भी ज्वर नहीं सताता है। यह तराई के प्रदेश में धान उगाते हैं और बडे परिश्रम से खेती करते हैं। यह अधिकतर जंगल में रहते हैं और दूसरे लोगों से कम मिलते हैं। यह यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनते हैं और अपने को राजपूत बतलाते हैं। इनके अतिरिक्त यहां कुछ मूल निवासी रहते हैं।

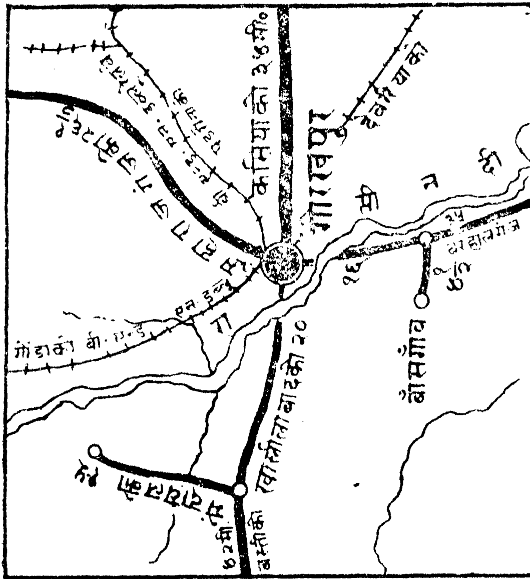
मुसलमान पडरौना और महराजगंज तहसीलों में अधिक रहते हैं। अधिकतर जुलाहे हैं कुछ शेख और पठान हैं।

हाल में कुछ लोग ईसाई भी हो गये हैं।

संक्षिप्त इतिहास—गोरखपुर जिले में कसिया, सोहनाग आदि कई प्राचीन स्थान है। फिर भी इसके प्राचीन इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। यह निस्सन्देह कौशल राज्य का अंग था। राप्ती और घाघरा के संगम के पास श्री रामचन्द्र जी ने विश्वामित्र जी से विद्या प्राप्त की थी। उसके वंशज कौशिकों को घाघरा के उत्तर की भूमि दान में दी थी। अयोध्या के नष्ट हो जाने पर वहां के राजा ने रुद्रपुर में राजधानी बसाने का प्रयत्न किया था। चेरू, भार और थारू लोगों ने उसे नष्ट कर दिया। चाहे कसिया प्राचीन कुशी नगर था अथवा वेथद्वीप था इस नगर का भगवान बुद्ध के जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध है। ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी में यहां अशोक का साम्राज्य था। मौर्य साम्राज्य के नष्ट हो जाने पर ईसा से १८४ वर्ष पूर्व सुंगा वंश राज्य करने लगा। इस वंश के नष्ट हो जाने पर सौ वर्ष तक यहां अराजकता छाई रही। लिच्छावी वंश के राजाओं ने गोरखपुर जिले में शासन किया। चौथी शताब्दी के आरम्भ में चन्द्रगुप्त ने इनसे छीन कर इसे गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। कहांव के शिलालेख से प्रगट होता है कि ४६० ईस्वी में यह स्कन्द गुप्त का शासन था। चीनी यात्री फाहियान (५८५ ई० में) और ह्वानसांग (६३५ ई० में) कसिया में आये थे। इन दोनों के समय में जिले का बहुत सा भाग बन हो गया था। मठ और स्तूप खंडहर बन गये थे। यहां कोई बड़े नगर न थे। भागलपुर दसवीं शताब्दी के स्तम्भ के शिलालेख में एक सूर्यवंशी राजा का उल्लेख है जो अयोध्या के राजवंश का ही था। मझौली ने बिसेन राजपूत संयुक्तप्रान्त भर के दूसरे राजपूतों के पास ग्यारहवीं शताब्दी का एक काला पत्थर मिला। इसमें संस्कृत में लिखा है कि कुलाचूड़ि वंश के राजा यहां आठ पीढ़ियों से शासन करते थे। यह मध्यप्रान्त के चेदि और रत्नपुर से आये थे। बलिया जिले में हल्दी के हयोवंशी राजा इन्हीं के वंशज हैं।

आरम्भ में मुसलमानों ने गोरखपुर जिले को विहार सम्मिलित किया था अथवा अवध में मिला रक्खा था इसका ठीक ठीक पता नहीं चलता है। कुछ भी हो दिल्ली के सुल्तानों का राज्य यहां नाम मात्र का था। घाघरा को पार करके गोरखपुर के दुर्गम बन में मुसलमानों की सेनायें बहुत कम आईं। ११९३ ईस्वी में कुतुबुद्दीन ऐबक ने अवध और

विहार को जीत लिया तो इस जिले पर मुसलमानी विजय का बहुत कम प्रभाव पड़ा। १२०० में बख्तियार खिल्जी ने. विहार पर अधिकार कर लिया। १२२५ में अल्तमश ने विहार जीता। १२२६ में उसके बड़े बेटे नसीरुद्दीन ने अवध के भारों को



हराया। लेकिन इन घटनाओं का गोरखपुर जिले पर कोई विशेष प्रभाव न पड़ा। आक्रमणकारी सुगम मार्गों का अनुसरण करते थे। गंगा को पार करके बहुत दूर भीतर की ओर वे नहीं जाते थे। बंगाल में मुसलमानों का राज्य जम जाने पर भी गोरखपुर जिले में राजपूतों की शक्ति बढ़ती रही। जब दिल्ली के सुल्तान उत्तरी मार्ग से बंगाल को जाते थे तो वे अयोध्या से नाव पर पूर्व की ओर जाया करते थे। गयासुद्दीन तुगलक और फीरोज इसी मार्ग से गये थे। १३५३ ई० में फीरोज गोरखपुर के पास ठहरा था। उसने समीप के सरदारों को इकट्ठा करके दरबार किया था। उदयसिंह मुकद्दम ने फीरोज को दो हाथी भेंट किये गोरखपुर राय ने कई वर्षों का शेष लगान दिया। जौनपुर के शर्की सुल्तान गोरखपुर पर अपना प्रभुत्व न जमा सके। उन्होंने राजपूतों से बराबरी का मित्र भाव दिखलाया। जौनपुर के पतन के बाद अफगानों का यहां कोई विशेष प्रभाव न रहा। शेरशाह ने केवल कभी कभी यहां के राजपूतों से कर वसूल किया।

बारहवीं सदी से अकबर के समय तक गोरखपुर जिले का इतिहास राजपूतों के भिन्न-भिन्न वंशों का इतिहास है। बिसेन पुराने निवासी थे। राठोर राजपूत गोरखपुर के पास बस गये। कहते हैं मान सरोवर और कौलद ताल इन्हीं ने बनवाये थे। डोमकार लोगों ने डोम और भार वंशों का दमन किया। इनकी राजधानी डोमिनगढ़ थी। डोमिनगढ़ रोहिन नदी के बीच में एक द्वीप पर बसा था। इसी समय दक्षिण पूर्व की ओर से भुइंहार आये और हरपुर में बस गये। इनके बाद कौशिक और सरनेत आये। चौदहवीं शताब्दी में मुकुन्दसिंह नामी एक चौहान ने बुटवल राजवंश की नींव डाली। उन्होंने थारू लोगों की लड़कियों से ब्याह किया। बंसों के सरनेलों से उनकी बराबर लड़ाई होती रही। उनके और सतासी के बीच में बन की पेटी थी। सतासी राज्य को लाहोर से आये हुये चन्द्रसेन नाम के एक सरनेत राजपूत ने कुवना के किनारे बसाया था। पूर्व की ओर पड़ौना का राज्य था। पड़ौना का कुरमी राजवंश कड़ा (इलाहाबाद) से १६५० ई० में आये हुये भोपाल राय ने स्थापित किया था। उसने मझौली के राजा के यहां नौकरी कर ली थी। उसे वंसी चिरगोरा टप्पा में पांच गांव मिल गये थे। भोपालराय ने इन गांवों में खेती आरम्भ कर दी। उसके वंशजों ने जागीर बढ़ाने का कोई अवसर न छोड़ा। नाथूराय ने चन्देलों से कई गांव ले लिये। १६८१ में वह औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुआ। वहां उसे पडरौना तहसील में ३३ गांव और दिये गये। मझौली के राजा ने इस राज्य को दृढ़ करने में सहायता दी। राय ईश्वरी प्रताप राय ने १,१५,००० रुपये में पडरौना तहसील में जंगल मोल लिया। इससे उसे इतना लाभ हुआ कि उसने अपना सब कर्ज चुका दिया। गदर में आधा राज्य जब्त कर लिया गया। शेष आधा राज्य किसी प्रकार बना रहा। इस समय इसे राज्य में ३६४ गांव हैं जिनकी मालगुजारी ८६३६५ रुपये हैं। इस राज्य के कुछ गांव बलिया आजमगढ़ और चम्पारन जिलों में स्थित हैं।)

अकबर के समय में (१५५९ में) मुगल सेनाओं

ने अवध और जौनपुर फिर से जीत लिया। अकबर ने राजपूत सरदारों को मिलाया और अफगानों को दबाया। टोडरमल और दूसरे मुगल सेनापति विद्रोह को दबाने के लिये यहां आये। पहले धुरिया पार के राजा ने मुगलों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। कुछ विरोध के बाद मझौली के राजा ने भी मुगलों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। सतासी का राजा लड़ा पर अन्त में राज्य छोड़कर उसे भागना पड़ा। गोरखपुर शहर में मुगल सेना रहने लगी। फिर भी राजपूतों और अफगानों का कुछ समय तक विद्रोह होता रहा। अकबर के समय में अवध प्रान्त के अन्तर्गत गोरखपुर में पांच सरकार शामिल थी। १६२५ में गोरखपुर के मुगल सेनापति ने कुछ अत्याचार किया। इसका फल यह हुआ कि सतासी और बंसी के राजाओं ने एक साथ गोरखपुर और मघार पर चढ़ाई की। उन्होंने मुगलों को गोरखपुर से भगा दिया। राजपूत फिर एक बार स्वाधीन हो गये उन्होंने दिल्ली को कर भेजना बन्द कर दिया। औरंगजेब के समय में १६०० ई० में राजपूतों के दबाने के लिये अयोध्या से एक बड़ी मुगल सेना भेजी गई। गोरखपुर के चकलेदार ने बंसी के राजा को मघार से भगा दिया। फिर मुगल सेना ने सतासी के राजा रुद्रसिंह को गोरखपुर से निकाल दिया। मुगल सूबेदार ने बसन्त सिंह के पुराने किले को फिर से बनवाया। उसने गोरखपुर से अयोध्या को सड़क निकाली और (बस्ती जिले में) राप्ती के दाहिने किनारे पर खलीलाबाद नगर बसाया। इसके बाद यहां मुसलमानों का काफी समय तक जम गया। बहादुर शाह गोरखपुर के जंगलों में शिकार के लिये आया था। उसने यहां जामा मस्जिद बनवाई। उसके सम्मानार्थ कुछ समय तक शहर का नाम मुअज़ामाबाद रख दिया गया। फिर भी वास्तविक शक्ति राजा के हाथ में बनी रही। यहां के राजा भूमि और उपाधि वितरण करते थे। शाही स्वीकृति की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। १७२१ में बड़ा परिवर्तन हुआ। इस वर्ष अवध का सूबा सादात खां को मिल गया। अवध में ही गोरखपुर शामिल था। उसने यहां के राजाओं की शक्ति कम करने का पूरा प्रयत्न किया। दक्षिणी भाग में वह सफल हो गया, लेकिन जिले के उत्तरी भाग में उसका अधिकार नाम मात्र का था। १७२५ में बुटवल राजवंश के राजा तिलक सेन ने बंजारों की सहायता से तिलपुर परगने में विद्रोह का झंडा उठाया। राजा ने जिले का बड़ा भाग लूटा और उजाड़ा। फैजाबाद से यहां सेना भेजी गई। इसका कोई फल न हुआ। फौज के लौटते ही तिलक सेन ने फिर छापा मारना आरम्भ कर दिया। केवल मझौली के राजा के राज्य में शान्ति थी। जिले के शेष भागों में अराजकता छा गई। १७५० में एक बड़ी सेना फिर भेजी गई। सेना पति कासिम खां ने पहले विद्रोही मुसलमानों को दबाया। उसने मुसलमानों के उस किले को गिरवा दिया जो उन्होंने डोमिनगढ़ के स्थान पर हाल में बनवाया था। इसके बाद वह उत्तर की ओर बढ़ा। उसने तिलक सेन के बेटे को हराकर बुटवल पर चढ़ाई की। लड़ाई बीस वर्ष तक चली। इसके अन्त में समझौता हो गया। तिलक सेन ने जो भाग जीत लिये थे वे बुटवल राज्य में रहे। मुसलमान अफसर हटा लिये गये। नाम मात्र का लगान नियत किया गया। दक्षिणी भाग में भी सेना की सहायता से ही कर इकट्ठा किया जा सकता था। शुजाउद्दौला के समय तक यही हाल रहा। १७६४ में शुजाउद्दौला बक्सर की लड़ाई में हार गया। इसके बाद गोरखपुर जिले में कर वसूल करने और शान्ति रखने का काम नवाब की ओर से मेजर रहने को मिला। इसने बड़ा अत्याचार किया। किसानों से इतना अधिक कर वसूल किया गया कि असहाय और दीन किसान खेत छोड़कर इधर उधर भागने लगे। जहां हरे भरे खेत थे वहां जंगल हो गया। इससे जिले में असन्तोष और अराजकता भी बढ़ गई। इसी समय बंजारे भी लूट मार करने लगे। वे राजाओं को आपस में लड़ाने लगे जो राजा उन्हें अधिक धन देता उसी का वे पक्ष लेते थे। वे अपने आपको नवाब वज़ीर के गुमाश्ता बनाते थे और चकलादार, नाज़िम, आमिल आदि की उपाधि धारण कर लेते थे। लेकिन उनका एक मात्र उद्देश्य यह था कि कम से कम समय में वे

अधिक से अधिक धन लूट सकें। अलग अलग एक एक राजा इनका सामना करने में असमर्थ था। यदि सब राजा मिल जाते तो वे बंजारों की शक्ति को निस्सन्देह नष्ट कर डालते। पर उनमें गृह कलह फैली हुई थी। १७८८ में सतासी के राजा ने बुटबल पर चढ़ाई की। लेकिन उसके वंश वालों ने १७९० में बंजारों को बस्ती जिले से निकाल दिया। हने साहब (मेजर हने) और बंजारों के अत्याचार से धुरिया पार के कौशिकों का बुरा हाल हो गया था। केवल मझौली के राजा की दशा अच्छी थी। उसने सिधुआ जोहना बंजारों के लिये छोड़ दिया था। आगे चलकर पडरौना और तमखुई के राज्यों की स्थापना में सहायता दी थी। इस प्रकार पडरौना और देउरिया की दशा पश्चिमी भागों से अधिक अच्छी थी यहाँ तालुकेदारों और राजाओं के मिल जाने से न बंजारों की लूट मार थी और न अवध के नवाबी अफसरों का अत्याचार था १८०१ की सन्धि में गोरखपुर और दूसरे पड़ोस के प्रदेश अवध के नवाब ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिये। कम्पनी के अफसरों ने धीरे धीरे राजाओं को दबा दिया। इसी समय नैपाल राज्य ने पहले तराई और फिर तिलपुर और बिनायकपुर के परगने मिला लिये। १८०५ में गुरखों ने लगान वसूल करने के लिये अपने अफसर बुटवल को भेजे। बुटवल का अभागा राजा कम्पनी का कर देने में असमर्थ था। वह कैद कर लिया। जब वह कैद से छूटा तो गुरखा लोग उसे पकड़ कर काठमांडू ले गये वहां वह मार डाला गया। कम्पिनी ने उसके परिवार को पेन्शन देकर उसका राज्य मिला लिया। १८०६ में गुरखा लोग फिर लौटे। जिस प्रदेश के सम्बन्ध में झगड़ा चल रहा था उसका तिहाई भाग उन्होंने अपने राज्य में मिला लिया। इस वर्ष सर जार्ज बार्लो गुरखों को बस्ती के उत्तर में शिवराज का प्रदेश इस शर्त पर देने के लिये राज़ी हो गया। कि बुटवल खाली कर दिया जावे। गुरखों ने बुटबल खाली न किया पर वे प्रथा बन्दोबस्त का लगान देने को राज़ी हो गये। इसके बाद लार्ड मिंटो आया। गुरखों ने बुटबल को पूरी तरह से नैपाल राज्य में मिला लिया। १८१० और १८११ में बुटबल की सीमा को पार करके गुरखों ने पाली के कुछ गांव ले लिये। १८१२ में लार्ड मिंटों ने अपना विरोध प्रगट किया। गुरखों ने इस प्रदेश पर अपना अधिकार सिद्ध किया। इस पर सीमा निर्धारित करने के लिये एक कमीशन नियुक्त किया गया। कम्पिनी के प्रतिनिधि मेजर ब्रैडशा ने कहा कि गुरखों का शिवराज या बुटबल पर कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। १८१४ में लार्ड मिंटों ने इसी भाग को दुहराया और सैनिक तयारी की। गोरखपुर के कलक्टर को आज्ञा दी गई कि यदि २५ दिन के भीतर कोई उत्तर न मिले तो सेना भेजकर उक्त प्रदेश ले ले। कलक्टर ने बिना किसी विरोध के सेना भेज कर शिवराज और बुटबल पर अधिकार कर लिया और अप्रैल महीने में चितवा, बुसौरिया और सौरा में पुलिस चौकियां स्थापित कर दी। मई महीने में गुरखों ने पुलिस चौकियों पर आक्रमण किया और उन्हें छीन लिया। पुलिस के सिपाही भागकर बंसी में पहुँचे। छः महीने चुप रहने के बाद पहली नवम्बर को कम्पिनी ने युद्ध घोषित किया। कमायूं और बिहार की ओर से नैपाल में जो ३०१ सेना भेजी गई उसका इस जिले से सम्बन्ध नहीं है। चौथी सेना गोरखपुर से बढ़ी। इसमें १४ तोपें और ४००० सिपाही थे। इस सेना को लेकर जनरल बुड बिना किसी विरोध के १८१५ की तीसरी जनवरी को बुटबल पहुँच गया। बुटबल के पास वाले दर्रे में गुरखा सेनापति वज़ीर सिंह ने पहले ही किले बन्दी कर ली थी। बुटबल राजा के एक ब्राह्मण नौकर ने जंगल में अंग्रेज़ी सेना को मार्ग दिखलाया समीप पहुँचने पर गुरखों ने गोली चलाना आरम्भ कर दिया। प्रधान सेना के आजाने पर गुरखे पहरेदार पहाड़ियों में चले गये। अंग्रेज़ों के २४ सिपाही मारे गये। अंग्रेज़ी सेना ने आगे बढ़ने का साहस न किया और यहीं से पीछे लौट आई। नैपाल से गोरखपुर को आने वाले प्रधान मार्ग की देख भाल करने के लिये अंग्रेज़ी सेनापति ने लोटान में खाईं खुदवा दी। सेनापति निचलौल को चला गया। उस ओर गुरखे लोग प्रतिदिन अंग्रेज़ी राज्य के गावों को लूटते और

जलाते थे। जनवरी, फर्वरी और मार्च में सहायता के लिये नई सेना लगातार आती रही। फिर भी सेनापति को नैपाल के पर्वतीय प्रदेश में घुसने का साहस न हुआ। जिन गांवों को गुरखों ने खाली कर दिया था उनको जलाकर ही उसने सन्तोष कर लिया। अंग्रेज़ी सेनापति गुरखों की सेना को अपनी सेना से अधिक प्रबल समझता था। अतः वह बचाव करता रहा और खुल्लम खुल्ला लड़ाई से बचता रहा। १८१५ के अप्रैल मास में लड़ने के लिये आज्ञा मिली। उसने कुछ बुटबल पर कुछ गोलाबारी की। फिर वह तराई को नष्ट करके गोरखपुर को लौट आया। इसी बीच में गढ़वालियों की सहायता से जनरल आक्टर-लोनी ने देहरादून और कमायूं को नैपालियों से जीत लिया। पर गुरखे अंग्रेज़ों की शर्तों को मानने और तराई छोड़ने के लिये तैयार न थे। कर्नल निकल्स बुटबल और पल्पा पर चढ़ाई करने के लिये गोरखपुर को भेजा गया। सन्धि की वार्ता अक्तूबर तक चलती रही। २८ नवम्बर को सिगौली में समझौता हुआ। १८१६ के फर्वरी महीने में ऐसा जान पड़ा कि गुरखा लोग लड़ाई जारी रखना चाहते हैं। इस बार जनरल आक्टरलोनी ने बिहार के मार्ग से नैपाल में प्रवेश किया। मार्च में सन्धि हो गई। बुटबल को छोड़कर सरजू और गंडक के बीच की तराई अंग्रेज़ों को मिल गई। पर सीमा सीधी रक्खी गई यह नैपाल की पहाड़ियों के समानान्तर चलती थी। शिवराज और पल्पा को छोड़कर यह नैपाल की पहाड़ियों से अलग थी। अतः कुछ तराई नैपाल राज्य को मिल गई। इस लड़ाई और अंग्रेज़ी सेनापतियों की शिथिलता से गोरखपुर जिले में अराजकता छा गई। नैपाल युद्ध के अन्त होने पर ही डाकुओं का दमन हो सका।

१८५७ के मई मास में गदर का समाचार पाते ही यहां के कलक्टर और जज ने तरह तरह की तैयारी की। जेल और पुलिस के लिये राजभक्त पहरेदार चुने गये। योरुपीय प्लांटरों और राजभक्त ज़मींदारों को भी उपर्युक्त सूचनायें दी गईं। फालतू खज़ाना आजमगढ़ भेज दिया गया मई के अन्त में लूट मार बढ़ने लगी। पैना के ज़मींदार घाघरा में चलने वाली नावों को लूटने लगे। नरहरपुर के राज्य में बढ़लगंज की पुलिस को भगा दिया। उसने सड़क पर काम करने वाले ५० कैदियों को मुक्त कर दिया और घाट को छीन कर आज़मगढ़ के मार्ग में बाधा डाल दी। पांच जून को आज़मगढ़ के विद्रोह का समाचार आया। केप्टेन स्टील ने अपने सिपाहियों से परेड कराई और उनको व्याख्यान दिया। दूसरे दिन इन्हीं सिपाहियों ने आज़मगढ़ जाने से इनकार कर दिया और खज़ाना लूटने की इच्छा प्रगट की। ७ जून को कुछ कैदियों ने भागने का प्रयत्न किया लेकिन स्वामिभक्त पहरेदारों ने उन्हें रोक दिया। ८ जून को खज़ाना लूटने वाले सिपाहियों को वेनार्ड महाशय ने रोक दिया। काठमांडू के रेज़ी-डेंट मेजर रेम्से ने पल्पा से २०० सिपाही भेजे जिले में मार्शल्ला घोषित की गई। फिर भी उत्तरी और पश्चिमी भागों में अराजकता छा गई। सतासी और नरहरपुर के राजा दूसरे भागों के विद्रोहियों से मिलने का प्रयत्न कर रहे थे। १७ और १९ जून को गोंडा और दूसरे स्थानों से भागकर आये हुये योरुपीय गोरखपुर पहुँचे। बंसी के राजा ने इन गोरों और गोरखपुर की मेमों (गोरी स्त्रियों) को आज़मगढ़ पहुँचा दिया। यहां से वे गाज़ीपुर चले गये। ३० जून को पल्पा से गुरखा सिपाही आ गये। जुलाई भर गोरखपुर में कुछ शान्ति रही। शहर के बाहर फिर भी अरा-जकता छाई हुई थी। २६ जुलाई को सिगौली के विद्रोह का समाचार आया। कर्नल राटन ३००० गुरखा सिपाही लेकर काठमांडू से आ रहा था। कुछ विद्रोही सिपाहियों से हथियार रख लिये गये। शेष सिगौली से दक्षिण की ओर सलेमपुर चले आये। यहां उन्होंने अफीम के एजेंट का बंगला नष्ट कर दिया लेकिन वे खज़ाना न पा सके। खज़ाना गोरखपुर पहुँचा दिया गया। गुरखा सिपाही आज़मगढ़ और फिर वहां से इलाहा-बाद भेज दिये गये। गोरखपुर में विद्रोही प्रबल हो गये। जिले का प्रबन्ध मझौली, सतासी, बंसी, गोपालपुर और तमखुई के राजाओं को सौंप दिया गया। १३ अगस्त को गोरे अफसर गोरखपुर खाली

कर के खजाना लेकर गुरखों के साथ चल दिये। घाघरा को पार करके २२ अगस्त को वे आज़मगढ़ पहुँच गये। मुहम्मद हसन के नेतृत्व में विद्रोहियों ने इनका पीछा किया। आज़म को सड़क पर घाघरा से १० मील उत्तर की ओर गगहा में गुरखा सिपाहियों पर आक्रमण किया गया। इसमें २०० विद्रोही मारे गये। इस बीच में राजाओं की समिति का राज्य ढीला पड़ गया। मुहम्मद हसन ने लौट कर जेल के कैदी मुक्त कर दिये। बर्ड महाशय को अपनी जान लेकर गोरखपुर से भागना पड़ा। अभी तक यह राजाओं के प्रबन्ध का निरीक्षण करते थे। गोपालपुर के राजा ने बचे हुये खज़ाने को अपने यहां रखने का वचन दिया था। लेकिन बर्ड साहब ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। विद्रोहियों ने गोरखपुर की सिविल लाइन में गोरों के बंगले जला डाले। विद्रोहियों ने बर्ड साहब को पकड़ने वालों के लिये पुरस्कार घोषित किया। लेकिन वह किसी प्रकार ८२ मील की यात्रा करके बेतिया पहुँच गया। विद्रोहियों ने इस प्रकार प्रबन्ध आरम्भ किया मानो उनका स्थायी अधिकार हो गया हो। सरकारी कागज़ात सुरक्षित रक्खे गये कुछ पुराने सरकारी नौकर भी रख लिये। बंसी और गोपालपुर के राजाओं ने विद्रोहियों का विरोध किया। तमकुही और मझौली के राजाओं ने भी सरकारी नौकरों की रक्षा की। पर विद्रोहियों का राज्य अधिक समय तक रहा। २२ दिसम्बर को जंगबहादुर की गुरखा सेना बेतिया पहुँची। २६ दिसम्बर को छोटी गंडक के किनारे सोमनपुर में पड़े हुये विद्रोहियों पर आक्रमण हुआ। वे हरा दिये गये। कई विद्रोही गांवों को भी दंड दिया गया। गोरखपुर शहर भी विद्रोहियों ने खाली कर दिया। कुछ विद्रोही भागते समय राप्ती में डूब गये। कुछ सेना घाघरा के मार्ग से नावों पर भेजी गई। कुछ ही समय में समस्त जिले में फिर अंग्रेज़ी राज्य हो गया। सतासी और बढ़ियापार के राज्य ज़ब्त कर लिये गये। बिल्लूपार के राजा की जायदाद भी ज़ब्त कर ली गई। शाहपुर के मुसलमान राजा का धुरियापार परगने में यही हाल हुआ। तिवरा, पांडेपार, डुमरी के बाबुओं की जायदाद भी जब्त कर ली गई। निचलौल का राजा रन्दुल सेन बुटवल राजवंश का अन्तिम राजा था। उसकी पेन्शन छीन ली गई। गोपालपुर के राजा को शाहपुर जागीर कुछ भाग और दूसरी जायदाद पुरस्कार में मिली। गोरखपुर के मियां साहब ने गोरों की जान बचाई थी। उन्हें और दूसरे सहायकों को भी इनाम मिले। मझौली के राजा का कर्ज माफ कर दिया गया। तराई का प्रदेश नैपाल राज्य को लौटा दिया गया। १८६५ में बस्ती जिला अलग हो गया।

प्रसिद्ध नगर—बैकुंठपुर छोटी गंडक के दाहिने किनारे पर नुनखार रेलवे स्टेशन २ मील उत्तर की ओर देउरिया से ८ मील और गोरखपुर से ४० मील दूर है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अगहन के महीने में यहां धनुष यज्ञ का मेला लगता है। यह जिले का सब से बड़ा मेला है। इसमें प्रायः ५०,००० दर्शक इकट्ठे होते हैं। कपड़े धातु के बर्तन आदि बहुत बिकते हैं।

बांस गांव—इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह गोरखपुर शहर से १४ मील दक्षिण की ओर है। यह अमी नदी की घाटी के ऊपर ऊंची भूमि पर बसा है। पहले यहां चौहानों का राज्य था। फिर सरनेतों ने उन्हें भगा दिया। इस विजय के उपलक्ष में वे अब भी क्वांर के महीने में देवी के पुराने मन्दिर में वे देवी को भेंट चढ़ाते हैं। इसमें मझगवां आदि कई छोटे छोटे गांव शामिल हैं। पुरानी तहसील की इमारतें बरावां में थी। वहां १९०७ से अस्पताल है। नई तहसील और मुन्सफी यहां से १०० गज़ दक्षिण की ओर है। पूर्व की ओर इन्पेक्शन बंगला है। इनके अतिरिक्त यहां थाना डाकखाना और जिले भर में सब से बड़ा मिडिल स्कूल है। इसी से मिला हुआ ट्रेनिंग स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है।

बरहज का बड़ा और प्रसिद्ध नगर राप्ती नदी के बायें किनारे पर घाघरा के संगम से कुछ ही दूर है। कहते हैं पहले संगम बरहज से ४ मील पश्चिम की ओर था। १८७३ में वह बरहज से २ मील पश्चिम की ओर रह गया। यह गोरखपुर से ४१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कसिया और देउरिया से आने वाली पक्की सड़कें यहीं समाप्त होती है।

सलेमपुर से आने वाली शाखा रेलवे लाइन का यह एक स्टेशन है। पहले यहां नावों के द्वारा बहुत व्यापार होता था। रेल के खुलने पर यह व्यापार कम हो गया। फिर भी यहां बहुत सी नावें लकड़ी अनाज आदि ढोने में लगी रहती हैं। इंडिया जनरल स्टीम नेवीगेशन कम्पिनी के स्टीमर यहां ठहरा करते हैं। कहते हैं बरहन या बरहजी नाम का एक ब्राह्मण मुसलमान हो गया था। उसी की स्मृति में इसका यह नाम पड़ा। उसकी कब्र का दर्शन करने के लिये बहुत लोग आते हैं। कुअँरधीर साही नाम के एक राजपूत ने यहां एक कोट (किला) बनवाया। तब से बरहज तेजी से बढ़ा। मुसलमानों ने इसे नष्ट कर डाला। पुराने कोट के चिन्ह इस समय भी मिलते हैं। आधुनिक बरहज को बसाने का श्रेय मझौली के राजा साहब को है। १८३० में यहां चीनी का कारखाना बना। इस समय बरहज और गौरा में चीनी के कई कारखाने हैं। चीनी के कारबार से बरहज की बड़ी उन्नति हुई। गौरा बरहज का ही भाग है। दोनों की जनसंख्या ११००० से अधिक है। पूर्वी भाग में प्रायः मल्लाह रहते हैं। बाजार प्रतिदिन लगता है। कार्तिक पूर्णिमा को मेला होता है। यहां थाना, डाकखाना, मिडिल स्कूल और राष्ट्रीय पाठशाला है। यहीं मझौली के राज साहब की कोठी है। यहां राजा का ही अधिकार है। बढ़लगंज घाघरा के किनारे दोहरी घाट के सामने गोरखपुर से आजमगढ़ को जानेवाली प्रान्तीय सड़क के दोनों ओर बसा है। यह गोरखपुर से ३६ मील दूर है। यहां होकर सिकरीगंज और गोरखपुर से बरहज, लुार और छपरा को कच्ची सड़कें गई हैं। बढ़लगंज के पूर्वी भाग को चिल्लू पार कहते हैं। यह चिल्लू नाले के उस पार है इसी से इसका नाम चिल्लूपार पड़ा। बढ़लगंज में कस्बा बढ़ल, गोला या गल्ले का बाजार और लालगंज शामिल है। लाल साहिब चिल्लूपार या नरहरपुर के विद्रोही राजा के भाई थे।

नरहरपुर गांव यहां से १ मील पूर्व की ओर है। गदर के समय तक राजा का राज्य रहा। फिर यह राज्य जब्त कर लिया गया। कुछ भाग गोपालपुर के राजभक्त राजा को पुरस्कार के रूप में दे दिया गया। शेष भाग सीधे अंग्रेजी शासन में आ गया। बुढ़लपुर घाघरा के ऊंचे कड़े कंकरीले किनारे पर स्थित है। इसलिये इसके कटने का डर नहीं है। उंचाई पर बसे होने के कारण नगर का वर्षा जल और नालियों का पानी तेजी से नदी में बह जाता है। प्रधान सड़क पर बाजार है जहां पक्की दुकाने बनी है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां थाना, अस्पताल, अफीम का बंगला, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। उत्तर की ओर पड़ाव है। यहां कई पुराने मन्दिर हैं। जलेश्वर नाथ महादेव का मन्दिर अधिक पुराना है कार्तिक, चैत और अषाढ़ में स्नान का मेला लगता है। जेठ में गाजी मियां का मेला लगता है। बढ़ी का छोटा गांव निचली भूमि पर राप्ती नदी के पास गोरखपुर से १३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। यहां राप्ती की बाढ़ प्रायः प्रतिवर्ष आ जाती है। बाढ़ ने गांव के उत्तर की ओर की सड़क को कुछ दूर तक काट दिया। इसी से थाना यहां से गौरी को चला गया यहां से २ मील उत्तर पूर्व की ओर गर्रा के बायें किनारे पर स्थित है। यहां समरौना नाला गर्रा को राप्ती से मिलाता है। बढ़ी में डाकखाना और स्कूल है। यहां बाजार भी लगता है। बढ़ी से २ मील पूर्व की ओर राजधानी, टोंग्री और उपधौली गांवों में एक प्राचीन नगर और कोट के भग्नावशेष हैं। कहते हैं यहां मौर्य राजवंश का निवास-स्थान था। यह नगर पूर्व-पश्चिम में राप्ती से फरेंद तक चार मील की लम्बाई और एक मील की चौड़ाई में बसा था। राप्ती के किनारे डीह घाट से गर्रा के किनारे तक कई टीले हैं जिन पर ईंटें बिखरी हुई हैं। गर्रा नदी के पूर्व में उपधौलिया डीह सब से बड़ा टीला है। यह १ मील लम्बा और १६०० फुट चौड़ा है। इसमें दो स्तूपों के भग्नावशेष हैं। एक बड़ा टीला राजधानी के पास है। कुछ और आगे फरेंद नदी के पास ईटों का एक विशाल घेरा है। यह १९०० फुट लम्बा और १३०० फुट चौड़ा है। इस प्राचीन नगर का ठीक ठीक पता नहीं लगाया गया है। बेलघाट घाघरा के कुम्हरिया घाट के पास गोरखपुर से २६ मील और सिकरीगंज से ६ मील

दूर है। पहले यहां घाघरा के किनारे पर घाट था। आजकल यह घाघरा से ३ मील दूर हो गया है। यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है।

भागलपुर घाघरा के बायें किनारे पर गोरखपुर से ५२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। तुर्तीपुर रेलवे पुल से यह १ मील ऊपर की ओर है। तुर्तीपुर स्टेशन कुछ ही दूर है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। रेल के खुल जाने से नावों का व्यापार घट गया इससे यहां का बाजार भी छोटा हो गया। यह एक पुराना नगर है। नदी के दोनों ओर प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं। गांव से आध मील पूर्व एक खुरदरा भूरा भूरा प्रस्तर-स्तम्भ है। इस पर दसवीं शताब्दी का लेख खुदा है। यह १७ फुट ऊंचा है। कहते हैं अयोध्या के एक सूर्य वंशी राज ने इसे खड़ा करवाया था।

भाऊपार नन्दौर ताल के उत्तर में गोरखपुर से ५ मील दक्षिण की ओर राप्ती नदी और आज़मगढ़ सड़क के बीच में स्थित है। राप्ती के ऊपर एक ऊंचे टीले पर पुराने किले के खंडहर हैं। गोरखपुर शहर के बसने के पहले सतासी के राजा यहीं रहते थे। पुराने समय में गांव और किले के चारों ओर घना जंगल था। १७६९ के दुर्भिक्ष में भूखे चीते यहां इतने हमले किये कि गांव के लोग डर कर भाग गये। औसत से चीते प्रति वर्ष २५० पशुओं और सात आठ मनुष्यों को मार डालते थे। यहां डाकघर, प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

ब्रिजमनगंज को पहले साहबगंज कहते थे। यह नाम ब्रिजमैन साहब की स्मृति में पड़ा जिन्हें लेहरा की जागीर मिली थी। यह गोरखपुर से ४० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां होकर गोरखपुर से उस्का और लोटन को सड़क जाती है। बाज़ार के दक्षिण में रेलवे स्टेशन है। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और संस्कृत पाटशाला है।

केप्टेनगंज गोरखपुर से पडरौना को जाने वाली सड़क पर गोरखपुर २९ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। हाटा (तहसील) यहां से १२ मील दक्षिण की ओर है। यहां से एक सड़क पश्चिम की ओर राप्ती के कर्मेनी घाट को गई है। उत्तर की ओर एक सड़क सिस्वा और निचौल को गई है। एक सड़क उत्तर-पूर्व की ओर पडरौना तहसील के नौरंगिया गांव को गई है। अंग्रेज़ी राज्य के आरम्भ में यहां एक थाना स्थापित किया गया। इससे इस नगर का यह नाम पड़ गया। पूर्व की ओर छोटी गंडक बहती है। पहले नाव के मार्ग से कुछ व्यापार होता था। रेल के आ जाने से यह व्यापार और अधिक बढ़ गया। यहां डाकघर, प्राइमरी स्कूल और बाजार है। गदर में यहां के ज़मींदारों ने विद्रोह किया था। अतः उनकी ज़मीन ज़ब्त कर ली गई।

चौरी चौरा गोरखपुर से देउरिया को जाने वाली सड़क पर गोरखपुर से १५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। अवध तिरहुत रेल की प्रधान लाइन का यह एक स्टेशन है। स्टेशन से एक सड़क उत्तर की ओर डुमरी और पिप्रैच को जाती है। स्टेशन के पास बाज़ार है। यहां चीनी बनाने और तेल पेरने की मिलें हैं। डुमरी के सिक्ख ज़मींदार यहां के भी ज़मींदार हैं। चौरी चौरा गोरखपुर जिले में व्यापार का केन्द्र है। यहां कानपुर और कलकत्ते से व्यापार का बहुत सा सामान आता है। चौरी चौरा से मिला हुआ उत्तर की ओर मुडेरा का बाज़ार है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। पिछले असहयोग के अवसर पर जनता ने उत्तेजित होकर थाने को जला दिया। अहिंसा के सिद्धान्त पर आचरण न करने वाले यहां के लोगों से रुष्ट होकर महात्मा गांधीं ने भारतवर्ष भर में असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया था।

देउरिया कस्बा कसिया से बरहज को जाने वाली पक्की सड़क और गोरखपुर से छपरा को जाने वाली कच्ची सड़क पर गोरखपुर से ३३ मील दूर है। यहां प्रधान रेलवे लाइन का स्टेशन है। एक कच्ची सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर रुद्रपुर को और उत्तर की ओर हाटा को गई। देउरिया में कई गांव शामिल हैं। यहां रेलवे स्टेशन, तहसील, थाना, तार-डाकखाना, अस्पताल, हाई स्कूल, और मिडिल स्कूल है। देउरिया कपड़े और रुई के व्यापार का केन्द्र है देउरिया को पूर्वी भाग का एक पृथक जिला बनाने का कई बार प्रस्ताव हुआ। लेकिन यह नगर निचली भूमि पर बसा है। प्रबल वर्षा होने पर इसके समीप की भूमि बाढ़ के जल से डूब जाती है। भरौली

बाजार में धनी मारवाड़ियों के सुन्दर घर बने हैं। यहां एक धर्मशाला और सुन्दर तालाब है। पुराने बाजार की भीड़ को कम करने के लिये शाक भाजी की बिक्री के लिये एक नया बाजार बनाया गया। नगर के बाहर एक नई सड़क बनाई गई इसके पड़ोस में नये घर बन गये। उत्तर की ओर करना नदी के किनारे एक टीले पर शिव जी का एक पुराना मन्दिर है। देव स्थान होने से इसका नाम देवरिया पड़ा। उत्तर पूर्व की ओर कसिया की सड़क पर बमनी गांव में पुराने भग्नावशेष हैं। इनमें कुछ पुराने मन्दिरों की नींवें हैं। पश्चिम की ओर ४० गज़ लम्बा चौड़ा एक पक्का ताल है। गोरखपुर की सड़क पर करना के आगे पुराने कच्चे किले के खंडहर हैं। टीले की चोटी पर एक शहीद का मकबरा है।

ढकवा बाजार कुवना के बायें या उत्तरी किनारे पर गोरखपुर से सिकरीगंज को जानेवाली सड़क से १ मील पश्चिम की ओर स्थित है। यह गोरखपुर से १९ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। पहले यह अनाज की बड़ी मंडी थी। कुवना के मार्ग से आया हुआ अनाज इकट्ठा होता था। रेलवे के खुल जाने पर अनाज सहजनवा स्टेशन से बाहर जाने लगा। कुछ व्यापार इस समय भी होता है। रविवार और बुधवार को बाजार लगता है। यहां कपड़ा पीतल के बर्तन आदि बिकते हैं। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

धानी कस्बा रिगौली से ९ मील और गोरखपुर से ३३ मील दूर है। बाजार पास वाले कानापार गांव में स्थित है जोधमेला के किनारे पर है। पहले नैपाल समीपवर्ती भागों और पश्चिमी महाराजगंज का व्यापार यहीं इकट्ठा होता था। व्यापार का सामान नदी के मार्ग से जाता था। रेल के आजाने पर यह व्यापार ब्रिजमनगंज के हाथ में चला गया जो यहां से ६ मील दूर है। वर्षा ऋतु को छोड़ कर शेष ऋतुओं में फिर भी कुछ व्यापार होता है। बर्षा ऋतु में नदी में ३० फुट ऊंची बाढ़ आती है। बाज़ार सोमवार को लगता है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

धुरिया पार कुवना नदी के बायें किनारे पर स्थित है। यहां होकर शाहपुर से डवाँ बाजार को सड़क जाती है। इसे प्रथम कौशिक राजा धुरचन्द ने बसाया था। धुरियापार चिरकाल तक कौशिक राजाओं की राजधानी रहा। उनके बनाये हुये कोट (किले) के खंडहर नदी के किनारे पर दिखाई देते हैं।

डुमरी गांव चौरा स्टेशन से पिप्रैच को जानेवाली सड़क के पूर्व में स्थित है। गोरखपुर से कसिया को जानेवाली सड़क यहां से दो मील दूर है। गोरखपुर से यह १५ मील पूर्व की ओर है। डुमरी राज्य में ५९ गांव शामिल हैं। यह राज्य गदर दबाने में सहारा देने वाले सरदार सूरत सिंह को पुरस्कार के रूप में दे दिया गया। यहां मिडिल स्कूल अस्पताल और बाजार है।

गजपुर राप्ती के दाहिने किनारे पर गोरखपुर से २१ मील और बांस गांव तहसील से १० मील दूर है। यहां से दो सड़कें गोरखपुर से आज़मगढ़ को जानेवाली सड़क पर स्थित है कौरीराम और गगहा से आती है। एक सड़क नदी के घाट को गई है। यहां से कछार के पार एक मार्ग रुद्रपुर को गया है। पहले राप्ती में ऊपर और नीचे की ओर जानेवाली नावें यहां ठहरा करती थी। नदी के व्यापार के नष्ट हो जाने से गजपुर का व्यापारिक महत्व जाता रहा। आरम्भ से यह स्थान सतासी राजवंश के अधिकार में रहा। नदी के पास अन्तिम राजा लाल साहब के दादी की बनवाई हुई कोठी हैं। यहां प्राइमरी स्कूल और बाज़ार है।

गोला को मदरिया और गोला गोपालपुर भी कहते हैं। यह घाघरा नदी के किनारे पर गोरखपुर से ३३ मील दक्षिण की ओर है। यहां से गोरखपुर को सड़क गई है। पहले गोला कुवना नदी के किनारे स्थित था। १८७२ में इस नदी का पानी घाघरा में चला गया। इससे गोला का व्यापार कम हो गया। आगे चलकर कुवना में जल बढ़ गया और घाघरा अधिक उत्तर की ओर हटकर बहने लगी। शाहपुर के पास कुवना और घाघरा का संगम हो गया। नदी के इधर उधर हो जाने से तो गोला को धक्का पहुँचा ही था। लेकिन रेल के खुल जाने से गोला का व्यापारिक महत्व बहुत

कम हो गया। अधिकतर व्यापारी गोला को छोड़कर मुंडेर्वा और दूसरे स्थानों को चले गये। यहां थाना, डाकखाना, इन्स्पेक्शन बंगला और मिडिल स्कूल है। गोला को गोपालपुर के एक राजा ने बसाया था।

गोपालपुर गोला से ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़लगंज से सिकरीगंज को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह गोरखपुर शहर से ३० मील दूर है। इसके पास ही गोरखपुर और रुद्रपुर से आने वाली सड़क मिलती है। यहां एक कौशिक राजवंश की राजधानी रही। कोठी के आगे कुछ ही दूरी पर एक बड़ा टीला हैं। यहां उनके पूर्वजों के बनवाये हुये किले के खंडहर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

गोरखपुर शहर इसी नाम की कमिश्नरी जिले और तहसील का केन्द्र स्थान है। यह २६°'४५' उत्तरी अक्षांश और ८३°'२२' पूर्वी देशान्तर पर समुद्रतल से ३३५ फुट की उंचाई पर कलकत्ते से ५०६ मील, इलाहाबाद से १६२ मील बनारस से १३१ मील और फैजाबाद से ८५ मील दूर है। गोरखपुर शहर राप्ती नदी के किनारे स्थित है। इसके पास ही रोहिन नदी राप्ती में मिलती है। रेलवे के पुल के आगे इसे अजबनिया नाला कहते हैं। अजबनिया नाला शहर की पश्चिमी सीमा बनाता है। राप्ती नदी बर्ड घाट के पास शहर के सिरे को छूकर दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। पूर्व की ओर रामगढ़ ताल पुरानी छाउनी की सीमा बनाता है। उत्तर-पश्चिम की ओर समतल भूमि है। वर्षा ऋतु में डोमिनगढ़ और कमैंनी तालों की बाढ़ का पानी दूर तक भूमि को डुबा देता है। अवध तिरहुत रेलवे की प्रधान लाइन शहर के उत्तरी आधे भाग में होकर जाती है। इसकी प्रधान स्टेशन पूर्व की ओर है। दूसरी स्टेशन पश्चिम की ओर डोमिनगढ़ में है। बड़ी स्टेशन से एक शाखा लाइन उत्तर की ओर उस्का और तुलसीपुर को जाती है। एक लाइन कैप्टेनगंज और बगहा को गई है। प्रान्तीय पक्की सड़क शहर के पश्चिमी सिरे से बर्ड घाट के पास बस्ती और फैजाबाद को जाती है। बर्ड घाट के पास वर्षा के अन्त में राप्ती नदी के ऊपर पीपों का पुल बन जाता है। एक पक्की सड़क दक्षिण की ओर आजमगढ़ को जाती है और भाऊ पार के पास राप्ती को पार करती है। गोरखपुर से और कई सड़कें भिन्न भिन्न दिशाओं को गई हैं।

गोरखपुर संयुक्त के बड़े शहरों में से एक है। घाघरा के उत्तर वाले प्रदेश में यह प्रान्त का सब से बड़ा शहर है। यहां दो तिहाई हिन्दू और एक तिहाई मुसलमान बसे हैं। मुसलमानों का अनुपात दूसरे शहरों की अपेक्षा यहां अधिक इसलिये है कि अंग्रेजी राज्य के पूर्व यहां घाघरा के उत्तर में मुसलमानी सेना का अड्डा था। पहले राप्ती नदी अधिक उत्तर और पूर्व की ओर रामगढ़ ताल में होकर बहती थी। कुओं के खोदने पर नीचे प्रायः मान की लकड़ी मिलती है। अतः पुराना शहर वर्तमान शहर से अधिक उत्तर की ओर बसाया गया था। पुराने शहर के दो ओर राप्ती और रोहिन नदियों से रक्षा होती थी। पीछे की ओर उत्तर-पूर्व में घना जंगल था। कहते हैं राठौर राजपूत मानसेन ने दसवीं शताब्दी में गोरखपुर बसाया था। कुछ लोग उसे थारू बतलाते हैं। उसी ने मानसरोवर (ताल) बनवाया था। कौलादह उसकी स्त्री कलावती ने बनवाया था। डोमकटारों के आने के समय तक उसके वंशज राज्य करते रहे। इन नवान्तुकों ने रोहिन और राप्ती के संगम के समीप एक द्वीप पर एक कोट (किला) बनवाया। वर्षा में इसके चिन्ह कभी कभी दिखाई दे जाते हैं। सरनेत राजपूतों ने डोमिन कटारों की शक्ति नष्ट कर दी। गोरखपुर के समीप का प्रदेश सतासी राजाओं को मिला। प्रायः १४०० ईस्वी में इस राजवंश के सदस्यों में आपस में झगड़ा हुआ। कुछ सदस्यों ने रामगढ़ के तट पर बने हुये पुराने कोट को छोड़ दिया और गुरू गोरख नाथ (मछन्दर नाथ) की समाधि के समीप पुराने गोरखपुर में अपना निवास-स्थान बनाया। १६१० ईस्वी में राजा वसन्त सिंह के आधिपत्य में सारनेत राजपूतों ने मुसलमानी सेनाओं को भगा दिया। और वसन्तपुर मुहल्ले में नया गढ़ बनाया। यहां ७० वर्ष तक राजपूतों का प्रभुत्व रहा। १६८० में काजी खलीलुर्रहमान ने राजा रुद्रसिंह को यहां से निकाल दिया उसने किले की मरम्मत करवाई और यहां मुसलमानी सेना का अड्डा बनाया। यह किला आयताकार था। इसके कोनों पर बुर्ज बने हुये थे। इसके कुछ ही समय

बाद युवराज मुअज्जम (जो आगे चलकर बहादुर शाह के नाम से विख्यात हुआ ।) यहां शिकार करने के लिये आया । उसके सम्मानार्थ शहर का सरकारी नाम मुअज्जमाबाद रख दिया गया। १८०१ तक सरकारी नाम यही रहा। पहले यहां शाही सेना फिर अवध के नवाब की सेना रही । १८०१ में यहां ब्रिटिश अधिकार हो गया और शहर का सरकारी नाम भी गोरखपुर हो गया। कहते हैं जब प्रथम अंग्रेज ने यहां डेरा डाला तो पड़ोस में इतने चीते थे कि उसे अपने डेरे के चारों ओर हाथी रखने पड़ते थे और आग जलती रखनी पड़ती थी। गोरखपुर की प्रथम सिविल लाइन कप्तान गंज मुहल्ले में थी । १८१० में गोरखपुर केप्टेन गंज मुहल्ले में थी। गरमी की ऋतु में सभी अंग्रेज अफसर किले में चले आते थे। इसकी मोटी दीवारों के भीतर कम गरमी लगती थी। यहां छावनी बनाने में यह लाभ था कि नैपाल की सीमा की भली भांति रक्षा की जा सकती थी। नैपाली युद्ध में इसका महत्व और अधिक बढ़ गया। गदर में विद्रोहियों का अधिकार हो जाने पर भी शहर के कोई भारी स्थायी हानि नहीं उठानी पड़ी। १८८६ में छाउनी तोड़ दी गई। १८९१ में यहां कमिश्नरी बनी। रेलवे के खुलने पर भी शहर की वृद्धि हुई। धीरे धीरे शहर उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता गया। वर्तमान शहर उत्तर से दक्षिण तक तीन मील के विस्तार में है। पूर्व से पश्चिम की ओर शहर और भी अधिक फैला हुआ है। शहर के बीच बीच में आम और दूसरे वृक्षों की अधिकता से प्रायः सब कहीं हरा भरा रहता है। बीच बीच में शाक भाजी के खेत हैं। फिर भी कुछ मुहल्ले अधिक घने हैं। शहर में कई मुहल्ले हैं। इनमें ३९ दक्षिणी भाग में हैं। २४ उत्तरी भाग में हैं। दोनों के बीच में एक बड़ा नाला है। रेलवे लाइन के उत्तर में माधोपुर, हुमायूंपुर और पुराना गोरखपुर के मुहल्ले अलग अलग बसे हैं। पुराने गोरखपुर मुहल्ले में मानसरोवर और कोलादह ताल हैं। यहीं गोरखनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। यह प्राचीन मन्दिर मानसरोवर के उत्तर में है और आम के वृक्षों से घिरा है। यहां कनफटा जोगी रहते हैं। मन्दिर का दर्शन करने के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं। मन्दिर में यात्री जो भेंट चढ़ाते हैं उसी से मन्दिर का खर्च चलता है। दक्षिणी भाग में अली नगर का मुहल्ला अधिक प्रसिद्ध है। इसी में धनी महाजनों के घर बने हैं। जतेईपुर मुहल्ले में कीर्ति चन्द धर्मशाला है जहां रेल से उतरने वाले यात्री ठहरते हैं। नगर के दक्षिण में मियां बाजार, उर्दू बाजार, साहब गंज और बसन्तपुर मुहल्ले हैं। बसन्तपुर मुहल्ला नदी के समीप दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर है। यहीं पुरानी जेल उस स्थान पर बनाई गई जहां राजा बसन्त सिंह का किला बना था। दक्षिण की ओर पुरानी पक्की सराय उत्तर की ओर बगलादह ताल है। इसके किनारे पर म्युनिसिपेलिटी का बगीचा है। इसके पूर्व में कव्वादह नाम का दूसरा ताल है। इन दोनों के बीच में होकर साहबगंज मुहल्ले की प्रधान सड़क आती है। इसके उत्तर में जहां पुरानी पुलिस लाइन थी वहां सारवेशन आर्मी (मुक्ति सेना) ने डोम बसा दिये। बसन्तपुर के पूर्व की ओर हल्सेगंज (बाजार) सब खपरैलों से छाया हुआ है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। इसके उत्तर-पूर्व में उर्दू बाजार है जो शहर का प्रधान व्यापारिक केन्द्र है। इसके पास ही जामा मस्जिद है जिसे सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में शाहजादा मुअज्जम (बहादुरशाह) के सम्मानार्थ खलीलुर्रहमान ने बनवाया था। अधिक पूर्व में मियां बाजार है। यह नाम मिया साहब की स्मृति में रक्खा गया जिन्होंने रोशनअली के मकबरे के पास बड़ा बाजार बनवाया था। इसके पूर्व में डफरिन अस्पताल डाकखाना और कैम्पियर हाल है। यह हाल कैम्पियर साहब की स्मृति में बनाया गया जो इस जिले के उत्तरी भाग में बन के कई भागों के मालिक थे। इसका सब से बड़ा कमरा पडरौना कमरा कहलाता है जिसके बनाने के लिये पडरौना के राजा साहब ने १५,००० रुपया दिया था। कुछ चन्दा शहर के निवासियों ने दिया था। हाल के सामने महारानी विक्टोरिया की स्टेचू (मूर्ति) है। मियां बाजार के पश्चिम में नखास मुहल्ले में कोतवाली है। उत्तर-पश्चिम की ओर जुबली हाई स्कूल और गोरखपुर बेंक है। दक्षिण की ओर तारघर और

धर्मशाला है। कुछ ही दूर नार्मल स्कूल है। शहर के प्रायः मध्यवर्ती भाग में गीता प्रेस है जहां से गीता सम्बन्धी साहित्य और कल्याण का प्रकाशन होता है। म्यूनिसिपैलिटी के पूर्व में सिविल लाइन पुरानी छावनी और कई गांव हैं। कैम्पियर हाल के सामने खुली जगह में मजिस्ट्रेट का दफ्तर, पुलिस का दफ्तर और खजाना है। एक दम दक्षिण की ओर चर्च मिशनरी सोसाइटी का अंग्रेजी गिरजाघर है। यहीं ईसाई बस्ती है। अधिक पूर्व में कमिश्नरी की कचहरी और दफ्तर है। इसके पास ही सेशन्स जज और मातहत जजों की कचहरियां और वकीलों की लाइब्रेरी है। इसके आगे परेड का मैदान है। उत्तर-पूर्व की ओर गुरखा धर्मशाला है। पूर्वी सिरे पर दौड़ का मैदान और पार्क है।

नोटीफाइड एरिया के उत्तर में रेलवे स्टेशन है। लाइन के दोनों ओर बहुत सी भूमि में रेलवे का ही कारबार है। यहां अवध तिरहुत रेलवे कम्पिनी के एजेंट का बंगला, रेलवे कर्मचारियों के रहने की जगह और इंजनों का बाड़ा और मरम्मत करने का कारखाना है। रेलवे बस्ती के आगे डिस्ट्रिक्ट जेल है।

गोरखपुर शहर राप्ती नदी की ऊंची बाढ़ के तल से नीचा है। यदि पश्चिमी सीमा और इलाहीबाग के पास बांध न हो तो भारी बाढ़ में शहर का प्रायः समस्त दक्षिणी भाग डूब जावे। गोरखपुर कोई कारबारी नगर नहीं है। तम्बाकू और चमड़े पर गोटा लगाने का काम अच्छा होता है। कुछ बढ़ई भी होशियार है। रायगंज मुहल्ले में पालकी बनाई जाती है। पर अधिकतर कारीगर रेलवे के कारखाने में चले गये।

गोरखपुर कमिश्नरी में शिक्षा का सब से बड़ा केन्द्र है। यहां का जिला हाई स्कूल (जिसे आज कल जुबली हाई स्कूल कहते हैं) १८७५ ई० में स्थापित हुआ। सेंट एंड्रूज़ कालेज का प्रबन्ध चर्च मिशनरी सोसाइटी के हाथ में है। इसी की ओर से यहां एक हाई स्कूल एक मिडिल स्कूल और पांच प्राइमरी स्कूल हैं। इनके अतिरिक्त यहां इस्लामिया इंटर कालेज और प्रताप हाई स्कूल है।

हाटा इसी नाम की तहसील के केन्द्र स्थान है। यह गोरखपुर से २३½ मील पूर्व की ओर कसिया को जाने वाली सड़क पर स्थित है। एक कच्ची सड़क उत्तर-पश्चिम में पिप्रैच और दक्षिण में देउरिया को गई है। १८७२ ई० में यहां तहसील की नई इमारत बनी। तहसीली के अतिरिक्त यहां रजिस्ट्री का दफ्तर थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। यहां एक धर्मशाला और ईदगाह भी है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहाओं जिले का एक प्राचीन स्थान है। यहां मुसेला से भागलपुर को जानेवाली सड़क को काटती है। यह सलेमपुर स्टेशन से ५ मील और गोरखपुर से ५३ मील दूर है। यह मझौली राज्य का एक गांव है। सथरांव स्टेशन इसके समीप है। गांव १२०० फुट लम्बे और ४०० फुट चौड़े एक टीले पर बसा है। यहां पुराने समय की ईंटें बिखरी हुई हैं। यहां कुछ पुराने कुयें हैं जो पुराने समय की बड़ी बड़ी ईंटों से बनाये गये हैं। यहां भूरे खुरदरे पत्थर का एक प्राचीन स्तम्भ है। यह २४½ फुट ऊंचा है। इसके चारों ओर लोहे की एक छड़ लगी है। इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन समय में इस पर सिंह की एक मूर्ति बनी थी। यह स्तम्भ आरम्भ में वर्गाकार बीच में षोडश भुजाकार और ऊपर गोल है। निचले भाग में जैन मूर्तियां बनी हैं। इसमें १४१ गुप्त सम्वत का एक लेख है। स्तम्भ के उत्तर में मन्दिर की एक दीवार के खंडहर हैं। इस मन्दिर में पांच मूर्तियां थीं जिनका इस स्तम्भ में उल्लेख है। पड़ोस में और कई मन्दिरों के खंडहर हैं। स्तम्भ के पास ही तीन प्राचीन ताल (पुरेना, कढ़ाही और झकराही) हैं। पुरेनाताल के किनारे एक पुराने मन्दिर के खंडहर हैं। इसमें बुद्ध भगवान की भग्न मूर्ति है जो पहले ७ फुट ऊंची थी। गांव के पूर्व में आकाश कामिनी नाम का दूसरा ताल है। यही नाम इस मन्दिर का था। पहले यह स्थान ककुभ कहलाता था जैसा स्तम्भ के लेख में है। गांव का वर्तमान नाम ककुभ ग्राम या ककुभ वन का अपभ्रंश है।

कसिया गोरखपुर से ३४ मील पूर्व में देवरिया से २१ मील उत्तर-पूर्व में और पडरौना से १२ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। गोरखपुर से एक पक्की

सड़क कसिया होकर बभनौली और पिप्रा घाट को जाती है। एक सड़क दक्षिण-पूर्व की ओर काज़ीपुर और छपरा को जाती है। यहां जाइंट मजिस्ट्रेट का बंगला, कचहरी, थाना, डाक-तारघर इन्स्पेक्शन बंगला, अस्पताल, पड़ाव और मिडिल स्कूल है। १९०६ में यहां की छोटी जेल तोड़ दी गई। १९०८ में पटवारी स्कूल तोड़ दिया गया। पटवारी स्कूल गोरखपुर चला गया। यहां सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है।

कसिया के पश्चिम में विशुनपुर गांव में गोरखपुर रोड (सड़क) और रामाभर ताल के बीच में जिले भर में सब से अधिक महत्वपूर्ण प्राचीन भग्नावशेष मिले हैं। यहां मिट्टी की पुरानी मुहरें मिलीं। इसका पुराना नाम विष्णु द्वीप था। यहां ईंटों का बना हुआ एक स्तूप निकला जो ५० फुट ऊंचा है। इसके ऊपर वृक्ष उग आये थे। दूसरा टीला कुछ छोटा है और अनुरुध्व गांव के उत्तर-पूर्व की ओर है। रामभर स्तूप से १ मील पश्चिम की ओर मठ कुंअर का कोट है। इसमें एक मन्दिर है। इसके भीतर मरणासन्न बुद्ध भगवान की लेटी हुई मूर्ति है। इसके पड़ोस में और कई मठ और भवन हैं। चौथा मठ कुअंर है। इसमें आसनबद्ध बुद्ध भगवान की विशालकाय मूर्ति है। यह गया के नीले धुंधले पत्थर की बनी है। बुद्ध भगवान बोधि वृक्ष के नीचे बैठे हैं। देवतागण उनकी सेवा कर रहे हैं। यह कोट से प्रायः ४०० गज़ दक्षिण-पश्चिम की ओर है। कोट के उत्तर और पूर्व में भीमावत है। इसमें दीवार का एक घेरा और कुछ छोटे छोटे टीले हैं। श्रद्धालु बौद्ध यात्रियों ने लेटी हुई मूर्ति पर सोने का पत्र चढ़वा दिया है। इन सब चिन्हों से सिद्ध होता है कि कसिया वह स्थान है जहां बुद्ध भगवान ने महानिर्वाण प्राप्त किया था।

खामपार भटपार स्टेशन से आनेवाली सड़क के पूर्व में मझौली से ८ मील और गोरखपुर से ६१ मील दूर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है।

खुखुन्दू गांव गोरखपुर से सलेमपुर और छपरा को जानेवाली सड़क से १ मील पूर्व की ओर नुनखार रेलवे स्टेशन से २ मील (दक्षिण-पश्चिम में) देउरिया से ८ मील और गोरखपुर से ४४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां थाना पड़ाव और प्राइमरी स्कूल है।

इसका पुराना नाम किष्किन्धापुर है। इसके पड़ोस मे कई प्राचीन टीले और भग्नावशेष हैं। यहां नीले पत्थर की बनी हुई विष्णु, शिव, पार्वती और गणेश जी मूर्तियां मिली हैं। कुछ जैन मूर्तियां भी हैं। एक नये जैन मन्दिर में प्रथम तीर्थंकर विशम्भर नाथ मूर्ति है। यहां पटना और गोरखपुर के अग्रवाल सराउगी दर्शन करने आते हैं। कुछ लोग इसे पारसनाथ की मूर्ति बतलाते हैं। लार में गोरखपुर और देउरिया से छपरा को जानेवाली सड़क सिकरीगंज से आनेवाली सड़क से मिलती है। यह गोरखपुर से ५८ मील और देउरिया (तहसील) से २४ मील है। भटनी बनारस लाइन का लाररोड रेलवे स्टेशन यहां से ४ मील दूर है। यहां वशिष्ठ मुनि का बनवाया हुआ एक प्राचीन मन्दिर है। कहते हैं जब वशिष्ट जी की काम धेनु को चीता उठा ले गया तो मार्ग में गाय के मुंह से गिरी हुई लार को देख कर उसका पता लगाया था। इसी से इस नगर का यह नाम पड़ा। लार में मुसलमानों का एक बढ़िया इमामबाड़ा है। यहां साबुन बहुत बनाया जाता है और नैपाल को भेजा जाता है। यहां अनाज, सन, चीनी और चमड़े का व्यापार होता है। चमड़ा कानपुर को भेज दिया जाता है। यहां नैपाल से बहुत सा व्यापार का सामान आता है। यहां के व्यापारी कलकत्ते और पटने से व्यापार करते हैं। लार में थाना डाकखाना मिडिल और ट्रेनिंग स्कूल है।

महराजगंज इसी नाम की उत्तरी तहसील का केन्द्र स्थान है और गोरखपुर शहर से ३६ मील उत्तर की ओर बलिया नदी के किनारे स्थित है। यहां से उत्तर-पूर्व की ओर निचलौल, पश्चिम की ओर फरेंदा रेलवे स्टेशन को सड़कें गई हैं। १८६० में यहां तहसील बनी। इसके अतिरिक्त यहां थाना, अस्पताल, डाकखाना, इन्स्पेकशन बंगला धर्मशाला और मिडिल स्कूल है। बन पास होने और हवा में अधिक नमी होने से वर्षा ऋतु में यहां की जलवायु बड़ी अस्वास्थ्य कर रहती है।

मन्सूरगंज हाटा तहसील की उत्तरी सीमा पर गोरखपुर से १८ मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहां से एक सड़क दक्षिण की ओर पिप्रैच स्टेशन होती हुई गोरखपुर को जाती है। उत्तर की ओर यह सड़क पर्तवाल, हरपुर और निचलौल को गई है। १८४५ में यह तहसील का केन्द्र स्थान बना। १८६० में तहसील महाराजगंज को चली गई। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। प्रति सोमवार को बाजार लगती है।

निचलौल महाराजगंज (तहसील) से १६ मील और गोरखपुर से ५१ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। दक्षिण की ओर प्रिप्रैच स्टेशन, दक्षिण-पश्चिम में बाणपार, ब्रिजमनगंज और गोरखपुर को दक्षिण में कोठीभार स्टेशन और केप्टेन गंज को सड़कें जाती है। उत्तर की ओर दो सड़कें नैपाल की सीमा के पास थूथीवारी और बहवर को गई हैं। पहले यह एक बड़ा व्यापार केन्द्र था। फिर रेल ने इसके व्यापार को छीन लिया। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। वृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यह प्राचीन स्थान है। यहीं पुराना तिलपुर था जो मुसलमानी आक्रमण में नष्ट हो गया। यहां तिलपुर के राजाओं की राजधानी थी। बुटवल के राजा भी यहां कुछ समय तक रहे। वे गदर में सम्मिलित हुये। अतः उनकी पेन्शन और राजा की उपाधि छीन ली गई।

पडरौना पांच गांवों के मिलने से बना है। यह इसी नाम की पूर्वी तहसील का केन्द्र स्थान है। यह केप्टेनगंज से बंसी घाट और बेतिया को जाने वाली सड़क पर कसिया से १२ मील और गोरखपुर से ४९ मील दूर है। पडरौना से उत्तर में नौरंगियां और सिसवा बाजार को दक्षिण-पूर्व में तिवरी पट्टी और तमकुही को दक्षिण में समूर और छपरा को सड़कें गई हैं। पडरौना बनरी नदी के पास स्थित है। यह नदी वर्षा ऋतु में बहने लगती है। ऐसा जान पड़ता है कि जहां इस समय बनरी नदी बहती है वहीं पहले गंडक का पुराना मार्ग था। १८७८ में जब इधर एक बड़ा ताल खोदा गया तो तली में नीचे एक बड़ी नाव गड़ी मिली। पडरौना की जलवायु अच्छी नहीं है। पर यह स्थान बड़ा प्राचीन है। पुरातत्ववेत्ताओं की दृष्टि में यहीं बौद्ध कालीन पावा स्थित था। पडरौना के दक्षिण में एक बड़ा खेरा (टीला) है जो टूटी इंटों से ढका है। यह २२० फुट लम्बा १२० फुट चौड़ा और १४ फुट ऊँचा है। यहां एक प्राचीन बौद्ध विहार था। कहते हैं पावा में बुद्ध भगवान की शव की अस्थियों का आठवां भाग पावा को मिला था। इन्हीं के ऊपर एक विशाल स्तूप बनाया गया था। कहते हैं मुसलमानों ने इस स्थान को उजाड़ दिया था। यहां से ४ मील की दूरी पर सैयद सालार मसूद के एक साथी बुढ़ान शहीद का मकबरा बना हुआ है। पन्द्रहवी शताब्दी में पडरौना पर एक राजपूत सरदार मदन सिंह का अधिकार हो हो गया। उसने इसे अपने पुरोहित रासू को दे दिया। पर अब से सवा दो सौ वर्ष पहले यहां कुरमी आकर बस गये। जब से यहां कुरमी राज्य की स्थापना हुई तब से पडरौना की उन्नति हुई। ब्रिटिश राज्य के आरम्भ में पडरौना के रईसों की जायदाद कुछ कम हो गई। लेकिन जब सिंह साहब मर गये तो राय ईश्वरी प्रताप राय ने उनका जंगल लगभग सवा लाख रुपये में मोल ले ली। इनको राजा की उपाधि मिल गई। इस वंश के राजा की सुन्दर कोठी पडरौना के पास बनी हुई है। पडरौना के तीन भाग हैं। पडरौना प्रधान, साहबगंज जो उत्तर की ओर बंसी घाट के समीप है। छावनी कसिया सड़क के पास है। साहब गंज को फिंच नाम के एक निलहे गोरे ने बसाया था। प्रधान पडरौना साहब गंज से मिला हुआ है। यहीं बाजार है। यहां तांबे और फूल के बर्तन बनाये जाते हैं। यहां तहसील, थाना डाक, तारघर, अस्पताल, हाई और मिडिल स्कूल है। उत्तर की ओर एक बड़ा ताल है। इसके किनारे श्यामधाम और रामघाट नाम के दो मन्दिर बने हुये हैं। पडरौना और छावनी के बीच में पड़ाव और मिडिल स्कूल है। छावनी में ही तहसील है। किसी समय यहां अवध के नवाब वजीर के सिपाही रहते थे। इसलिये इसका नाम छावनी पड़ गया।

पैकुली गांव देउरिया से रुद्रपुर को जाने वाली सड़क से दो मील पूर्व की ओर देउरिया (तहसील) से ७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसके पास

वाले सरौली कोट (किले) की रक्षा के लिये मझौली के राजा ने यहां सारन से आये हुये राजपूतों को बसा दिया था। यहां एक स्कूल है। प्रति सप्ताह बाजार लगता है। यहां एक बड़ा ठाकुर द्वारा वैष्णव वैरागियों का मठ और सरोवर है।

पैना का बड़ा गांव घाघरा के उत्तरी किनारे पर घाघरा और कच्ची सड़क के बीच में स्थित है जो बरहज को जाती है। पैना गांव बरहज से ४ मील और गोरखपुर से ४४ मील दूर है। पैना बैल हांकने की लकड़ी को कहते हैं। कहते हैं यहां एक साधू आया था। उसे एक पैने के बराबर ही जमीन मिली थी। उसके मरने पर उसकी समाधि यहां बनी। इसके चारों ओर जो गांव बसा उसका नाम भी पड़ गया। पहले यहां बिसेन जमीदार थे। गदर में इन्होंने सरकारी बैलगाड़ियों को जीत लिया। अतः गदर के बाद यह गांव जीत लिया गया और मझौली के राजा को दे दिया गया। कहते हैं बिसेन लोगों को दंड देने के लिये जो सेना आई वह इनकी कुछ स्त्रियों को भी ले गई। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

पनेरा गांव केप्टेन गंज से केम्पियर गंज और कमैनी घाट को जाने वाली सड़क पर केप्टेन गंज से १६ मील और गोरखपुर २४ मील की दूरी पर बन के किनारे स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां प्रति सप्ताह एक छोटा बाजार लगता है।

पिप्रैच गांव केप्टेन गंज को जानेवाली सड़क पर गोरखपुर से १३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से दक्षिण में बढ़ी, पूर्व में हाटा को, उत्तर में निचलौल को सड़क जाती है। रेलवे की शाखा लाइन पास ही है। यहां शक्कर बनाने का काम बहुत होता है। बाजार में अनाज, कपड़ा और धातु के बर्तनों का व्यापार होता है। पास वाले सिधवा गांव में भी बाजार लगता है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। रामकोला बनरी के बायें किनारे पर पडरौना से दस मील पश्चिम की ओर गोरखपुर से ३३ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। प्रतिसप्ताह एक छोटा बाजार लगता है।

रामपुर लानपुर या रामपुर कारखाना देउरिया से कसिया को जानेवाली पक्की सड़क के पास देउरिया से ५ मील और गोरखपुर से ३८ मील दूर है। एक पक्की सड़क देउरिया रेलवे स्टेशन को जाती है। चीनी के कारबार का यह जिले में एक प्रधान केन्द्र है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

रिगौली कैम्पियर गंज रेलवे स्टेशन से ३ मील और गोरखपुर २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर धमेला के किनारे पर राप्ती संगम के समीप स्थित है। इसके सामने कमैनी घाट है जहां गोरखपुर, केप्टेनगंज और बिजमन गंज से आनेवाली सड़कें मिलती हैं। यह राप्ती नदी का जिले भर में सबसे अधिक महत्वपूर्ण घाट है। यहां थाना, डाकखाना, और प्राइमरी स्कूल है। यहां के जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं और मनिहार चूड़ियां बनाते हैं। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है।

रुद्रपुर गोरखपुर से बरहज को जानेवाली सड़क पर गोरखपुर से २७ मील दूर है। यहां उत्तर-पूर्व में देउरिया और उत्तर में हाटा से आने वाली सड़कें मिलती हैं। इसके पश्चिम की ओर मझनाया बथुआ नदी बहती है। कुछ ही दूर दक्षिण की ओर इसमें करना नदी मिलती है। वर्षाऋतु में इसमें नावें चल सकती हैं। पर यहां कोई बड़ा व्यापार नहीं होता है। यहां थाना, डाकखाना अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। मझना के किनारे गोला में अनाज का व्यापार होता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहते हैं रुद्रपुर ही प्राचीन हंस क्षेत्र है जिसका चीनी यात्रियों ने उल्लेख किया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अयोध्या से आकर बशिष्ट सिंह नामी एक राजपूत ने यहां नव काशी नाम का एक नगर बसाया। पहले इसे भारों ने छीन लिया। फिर यहां सतासी के सारनेत राजपूतों का अधिकार हो गया। वर्तमान नाम राजा रुद्र सिंह की स्मृति में पड़ा। उन्होंने यहां किला बनवाया था। उत्तर की ओर पौन मील की दूरी पर प्राचीन सहनकोट या नाथ नगर है। यह एक विषम चतुर्भुज घेरा है। इसकी चौड़ाई दो-ढाई हजार फुट है। इसके दक्षिण में दूसरा बाहरी और निचला घेरा है। इसकी लम्बाई २७०० फुट

और चौड़ाई २५०० फ़ुट है। इसके कुछ भाग में खेती होती है। किले के चारों ओर १५ से २५ फ़ुट तक ऊंची चारदीवारी है।

कुछ लोग यहां की ईंटे और पत्थर घर बनाने के लिये निकाल ले गये। कोट की चूनी दीवार के पास दूधनाथ का पुराना मन्दिर है। इसके चारों ओर आठ नये मन्दिर हैं। इसमें विष्णु की विशाल मूर्ति और जैनियों के अन्तिम तीर्थङ्कर की छोटी मूर्ति है। इसके पड़ोस में अनेक टीले और भग्नावशेष लम्बाई और चौड़ाई में दो दो मील तक बिखरे हुये हैं। निस्सन्देह यहां पहले कोई बड़ा नगर था। राजा रुद्र सिंह के समय से गदर तक यहां सतासी राजवंश की राजधानी रही। राजमहल सहनकोट से मिला हुआ था। इस समय यह जीर्ण है। राजा की जायदाद जब्त कर ली गई।

सहजनवा का छोटा गांव गोरखपुर से १० मील पश्चिम की ओर है। यहां थाना पड़ाव और गोरखपुर से गोंडा और बस्ती को जानेवाली लाइन का स्टेशन है। वास्तव में स्टेशन लुजुई गांव में है जहां डाकखाना है। यहां सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। पड़ोस में गेहूँ बहुत होता है।

मझौली और सलेमपुर वास्तव में दो कस्बे हैं और पास पास स्थित हैं। मझौली छोटी गंडक के बायें किनारे पर और सलेमपुर दाहिने किनारे पर स्थित है। यह गोरखपुर से ५३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर और देउरिया (तहसील) से १९ मील दूर है। मझौली से सलेमपुर १ मील पश्चिम की ओर गोरखपुर से छपरा को जानेवाली सड़क के पास है। दोनों एक पक्की सड़क से जुड़े हैं जो प्रधान लाइन के भाटपार स्टेशन को जाती है। दक्षिण की ओर यह सड़क सलेमपुर को गई है। सलेमपुर के पास ही भटनी से बनारस को जानेवाली लाइन का स्टेशन है। यहां से एक शाखा पश्चिम की ओर बरहज को जाती है।

कहते हैं विसेन राजवंश के पूर्वज मयूर ने मझौली को बसाया था। उनका प्रथम निवास स्थान २ मील दक्षिण-पूर्व की ओर कुन्दिलपुर में था। उसके पश्चात् मयूर के वंशज मझौली में रहने लगे आजकल राजा साहब नदी के ऊंचे किनारे पर ईंटों के बने हुये पक्के किले में रहते थे। सलेमपुर के सम्बन्ध में कहा जाता है कि अकबर के कर्मचारी फिदई खां ने फेतेहपुर सीकरी के प्रसिद्ध फकीर शेख सलीम चिश्ती को यहां कुछ भूमि दान में दी थी। इस भूमिपर जो नगर बस गया उसका नाम फकीर के सम्मानार्थ सलेमपुर रक्खा गया। कुछ लोगों का अनुमान है कि राजा बोधमल ने अपना नाम बदलकर इस्लाम खां या सलीम खां रख लिया था और यहीं रहने लगे थे। इसलिये इसका यह नाम पड़ गया। नगर और नदी के बीच में उसका मकबरा बना है। आजकल मझौली और सलेमपुर वास्तव में एक कस्बा बन गये हैं। मझौली में हिन्दू और सलेमपुर में मुसलमान रहते हैं। सलेमपुर में थाना और डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। मझौली में हाई स्कूल, मिडिल स्कूल डाक तारघर और लड़कियों का स्कूल है।

सेमरा गांव फरेंदा रेलवे स्टेशन से ६ मील उत्तर-पूर्व की ओर गोरखपुर से ३६ मील दूर है। ब्रिजमनगंज से निचलौल को जाने वाली सड़क इसके उत्तर में है। फरेन्दा से महराजगंज को जाने वाली सड़क इसके दक्षिण में है। यह वन के पास रोहिन के किनारे स्थित है। यहां थाना और डाकखाना है। इस छोटे गांव में अधिकतर अहीर रहते हैं।

सिस्वा बाजार केप्टेनगंज से निचलौल को जाने वाली सड़क पर महराजगंज से ११ मील पश्चिम की ओर और गोरखपुर से ४३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। गांव के दक्षिण में गोरखपुर से बगहा को जाने वाली रेलवे लाइन सड़क को पार करती है। स्टेशन पूर्व की ओर है। पहले नैपाल का चावल सड़क पर निचलौल से गोरखपुर और चौरी चौरा को जाता था। अब यह सीधे सिस्वा रेलवे स्टेशन को आता है रेल से सिस्वा का व्यापारिक महत्व बढ़ गया है। निचलौल से सिस्वा केवल १२ मील दूर है। मारवाड़ी और अनाज के दूसरे व्यापारी यहां आकर बस गये हैं।

सोहनाग का छोटा गांव प्राचीन भग्नावशेषों के लिये प्रसिद्ध है। यह सलेमपुर से ३ मील दक्षिण-

पश्चिम की ओर है। सलेमपुर से भागलपुर को जाने वाली सड़क से १ मील पश्चिम की ओर है। यहां का प्राचीन ताल १८ एकड़ है। यहां बौद्धकाल के कई भग्नावशेष फैले हुये हैं। ताल के पश्चिम में किनारे पर एक ५० फुट ऊंचा और १०० फुट चौड़ा टीला है। यह ऊंचा भाग में स्तूप और निचले भाग में बिहार जान पड़ता है। इसकी चोटी पर परसराम का छोटा मन्दिर है। इसके बाहर महा रुद्र नाथ शिव का मन्दिर है। पड़ोस में और कई मन्दिर हैं। इनकी मूर्तियां बौद्ध कालीन हैं। कहते हैं पहले यह नागपुर कहलाता था। यहां परसराम ने तपस्या की थी। मन्दिर बहुत पहले टूट फूट गये थे। नैपाल नरेश सोहन ने उनका जीर्णोद्धार किया वह कुछ रोग की औषधि के लिये काशी जा रहे थे। लेकिन इस ताल में स्नान करने से उनका कोढ़ अच्छा हो गया। तभी से इसका नाम सोहनाग पड़ गया। कुछ लोगों का कहना है कि सोहन बिसेन राजपूत था। मझौली के बिसेन लोगों का इन मन्दिरों से घनिष्ट सम्बन्ध है। बैसाख मास में यहां बड़ा मेला लगता है। इसके पास ही रामानन्दियों का मठ है। यह मठ धर्मीदास ने स्थापित किया था। प्रसिद्ध साधू जीवा राम जी उनके उत्तराधिकारी हुये। जीवा राम जी एक कूंडी छोड़कर बाहर चले गये। जाते समय वह कह गये थे कि जिस दिन मैं मरूंगा उसी दिन यह कूंड़ी टूट जायगी। बारह वर्ष बाद कूंड़ी टूट गई। पर वे कहां मरे इसका पता न लग सका। जीवा राम जी की समाधि पर कूंड़ी का एक टुकड़ा रक्खा हुआ है। इसे यात्री लोग बड़ी श्रद्धा से देखते हैं।

तमकुही कसिया से छपरा को जानेवाली सड़क पर गोरखपुर से ५५ मील पूर्व की ओर है। यह पडरौना (तहसील) से २२ मील दूर है। एक सड़क पश्चिम की ओर काजीपुर को जाती है। यहां तार-डाकघर प्राइमरी स्कूल और पड़ाव है। यहीं तमकुही के राजा की राजधानी और उनकी कोठी है। यहां से ३ मील उत्तर की ओर बभनौली में नील की बड़ी कोठी है।

नरिया सुजान का बड़ा गांव तमकुही से ६ मील दक्षिण-पूर्व में और बड़ी गंडक से पांच मील पश्चिम की ओर स्थित है। यह सड़क से कुछ दूर है। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

तरकुलवा देवरिया से कसिया को जाने वाली सड़क के पश्चिम में देवरिया से १२ मील और गोरखपुर से ४० मील पूर्व-दक्षिण की ओर है। छोटी गंडक यहां से १ मील दूर है। रेतीले टीले पर बसा होने के कारण यह पड़ोस के भाट प्रदेश से अधिक स्वास्थ्यकर है। यहां थाना और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

थूथीबारी जिले के धुर उत्तरी सिरे पर नैपाल की सीमा के पास पियास नदी के किनारे पर स्थित है। यह गोरखपुर से ६० मील और महाराज गंज (तहसील) से २५ मील दूर है। यहां के व्यापारी नैपाल से व्यापार करते हैं। प्रति सप्ताह बाजार लगता है। यहां थाना और डाकखाना है। इसके सामने नैपाल राज्य में इसी की टक्कर का असिनीगंज गांव है। थूथीबारी में नैपाल के कैदी नैपाल को भेज दिये जाते हैं जो हिन्दुस्तानी कैदी नैपाल में होते हैं वे यहां भेज दिये जाते हैं। इस प्रकार यह नैपाल और हिन्दुस्तान के कैदियों का परिपर्वतन स्थान है। उनौला या अनौला गोरखपुर और रुद्रपुर से सिकरीगंज को जाने वाली सड़क से कुछ दूर पश्चिम की ओर है। यह बांस गांव (तहसील) से ७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर गोरखपुर से १३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। उनौला के राजा उनवल में रहते हैं।

आज़मगढ़

आज़मगढ़ गोरखपुर कमिश्नरी का सब से अधिक दक्षिणी जिला है। यह विषम आकार का जिला घाघरा के दक्षिण में २५ '३८' और २६ '२७' उत्तरी अक्षांशों और ८२'४० और ८३'४५ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसके पूर्व में बलिया का जिला दक्षिण में जौनपुर और गाज़ीपुर के जिले हैं। पश्चिम में जौनपुर और सुल्तानपुर के जिले हैं। इसके उत्तर में फैज़ाबाद और गोरखपुर के जिले हैं। गोरखपुर और आज़मगढ़ के बीच में घाघरा नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। फैज़ाबाद की ओर सीमा कृत्रिम है। पश्चिम से पूर्व तक जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ६९ मील है। उत्तर से दक्षिण तक जिले की चौड़ाई ५४ मील है। इसका क्षेत्रफल घाघरा के इधर उधर हो जाने से प्रति वर्ष घटता बढ़ता रहता है। इसका औसत क्षेत्रफल २२०७ वर्ग मील है। जिले के पश्चिमी परगनों में कई ऐसे गांव हैं जिनका सम्बन्ध फैज़ाबाद जिले से है। आज़मगढ़ जिले का एक गांव फैज़ाबाद जिले के भीतर स्थित है।

आज़मगढ़ का जिला एक समतल मैदान है। इसमें पहाड़ियों और ऊंचे टीलों का अभाव है। इस जिले में बहने वाली छोटी छोटी नदियों ने भूमि को कुछ विषम बना दिया है। घाघरा के पड़ोस में कुछ दूर तक उत्तर की ओर ढाल है। अधिकांश जिले का ढाल दक्षिण-पूर्व की ओर है। बीच बीच में कुछ ऐसे आखात (गढ़े) हैं जहां भीतरी भागों का वर्षा जल इकट्ठा हो जाता है और किसी नदी में नहीं पहुँचने पाता है। कुछ ऊंचे ऊसर भी हैं। ऊंचे ऊसरों और नीचे आखातों में पेड़ नहीं उगते हैं। इनका दृश्य बड़ा उजाड़ है। जिला दो प्राकृतिक भागों (ऊंचा प्रदेश और दक्षिणी नीचा प्रदेश) में बांटा जा सकता है। उत्तरी शाहगंज से आज़मगढ़ शहर मऊ को जानेवाली पक्की सड़क जिले को इन दो भागों में बांटती है। दक्षिण प्रदेश में अधिकतर चिकनी मिट्टी है। इस निचले प्रदेश में दलदलों, झीलों और तालाबों की अधिकता है। गंगी, उदन्ती, बेसू, मंगई और भैंसाही नदियां इस प्रदेश का पानी बहा ले जाती हैं। यह नदियां दलदलों से निकलती हैं। गंगी, बेसू और मंगई नदियां पश्चिमी सीमा पर अथवा इसके आगे जौनपुर जिले से निकलती हैं। उदन्ती और भैंसाही नदियां इस जिले से ही निकलती हैं। यह सब नदियां पूर्व या दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं और अन्त में गंगा में मिल जाती है। गंगी और बेसू नदियां सीधे गंगा में मिलती हैं। उदन्ती नदी बेसू में मिल जाती है। मंगई और भैंसाही नदियां सरजू में मिलती हैं। ऊपरी मार्ग में इन नदियों की तली पड़ोस की भूमि से बहुत कम नीची है। इनमें सिंचाई के लिये बांध बना लिये जाते हैं। पूर्वी भाग में इनकी तली गहरी हो जाती है। शेष भाग में कहीं नीचे आखात और दलदल हैं। कहीं कुछ ऊंची भूमि है। इसी पर छोटे छोटे गांव बसे हैं। जहां ऊसर नहीं है वहां खेती होती है। इस दक्षिणी प्रदेश का क्षेत्रफल ९२८ वर्ग मील है।

उत्तरी प्रदेश दो भागों में बटा हुआ है। ऊंचा मैदान बांगर कहलाता है।

घाघरा के पड़ोस की निचली भूमि को कछार कहते हैं। आज़मगढ़ जिले का बांगर अत्यन्त उपजाऊ है। इसके कुछ भाग को उत्तर-पूर्व में छोटी सरजू नदी ने काट दिया है। इस प्रदेश का कुछ वर्षाजल छोटी सरजू में बह जाता है कुछ छोटी छोटी नदियों के द्वारा घाघरा नदी में पहुँचता है। बांगर के अधिक बड़े भाग का वर्षा जल टोंस और उसकी सहायक नदियों में बह जाता है। टोंस नदी पश्चिम में अहरौला से पूर्व में मऊ तक जिले को पार करती है। मऊ के पास ही यह छोटी सरजू में मिल जाती है। टोंस और इसकी सहायक नदियों का मार्ग बहुत गहरा और टेढ़ा है। टोंस की घाटी बड़ी तंग है। इससे इसमें प्रायः प्रति वर्ष बाढ़ आती है। इससे पड़ोस की फसलों को हानि होती है। बांगर की भूमि कड़ी है। लेकिन नदियों के समीप बलुई हो गई है। तंग गढ़ों में चिकनी मिट्टी पाई जाती है। कहीं कहीं कुछ ऊसर भी है। इधर बाग और पेड़ बहुत हैं। इससे इस भाग की भूमि बड़ी

उपजाऊ है। आबादी घनी है। थोड़ी थोड़ी दूर पर छोटे छोटे गांव बसे हैं। उत्तरी भाग का कछार घाघरा के प्राचीन मार्ग में स्थित है। कुछ कछार घाघरा के वर्तमान मार्ग के समीप है। वर्तमान कछार की चौड़ाई प्रायः ६ मील है। पुराना कछार छोटी सरजू के समीप है। यह बांगर से भिन्न है। छोटी सरजू फैजाबाद जिले में निकलती है। अतरौलिया को पार कर के गोपालपुर परगने के उत्तर में यह कछारी प्रदेश में प्रवेश करती है। गोपाल परगने में ही छोटी सरजू की एक धारा ने अपना मार्ग प्रथक बना लिया है। छोटी सरजू घाघरा के पुराने मार्ग में बहती हुई मऊ के पास टोंस में मिल जाती है। दोनों की संयुक्त धारा को सरजू नाम से पुकारते हैं। बलिया के पास सरजू गंगा में मिल जाती है। कछार की मिट्टी प्रायः बलुई है। निचले भाग में चिकनी मिट्टी है। बाढ़ के समय यह प्रदेश दूर तक पानी में डूब जाता है। बाढ़ के घटने पर लम्बे गढ़ों में पानी शेष रह जाता है। इससे सलोल, पकरी, पेवा, और नरजा आदि झीलें बन गई हैं।

नदियां—घाघरा जिले की सब से बड़ी नदी है। इसमें १००० मन बोझ लादने वाली नावें वर्ष भर चल सकती हैं। यह कमायूं और नैपाल के पहाड़ों से निकलती है और चौका कौरियाला राप्ती आदि नदियों के मिलने से बनती है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। इससे प्रायः बड़ी हानि हो जाती है। बाढ़ के समय यह बड़ी वेगवती हो जाती है। दोहरी घाट के पास इसके किनारों पर कड़ा कंकड़ है। दूसरे स्थानों में इसके किनारे रेतीली हैं। इसकी घाटी की चौड़ाई घटती बढ़ती रहती है कभी कभी इसकी चौड़ाई १० मील तक हो जाती है। बाढ़ के बाद यह बलुई मिट्टी छोड़ देती है। कभी कभी यह उपजाऊ कांप भी छोड़ देती है। बाढ़ के बाद नदी प्रायः अचानक अपना मार्ग बदल देती है। नत्थूपुर के पास नदी के कटाव को रोकने के लिये सूरजपुर से डुबरी तक आठ मील लम्बा बांध बनाया गया। दोहरी घाट के पश्चिम में जौनपुर से गोरखपुर को जानेवाली पक्की सड़क को एक बार नदी ने तेजी के साथ काटना आरम्भ किया। इससे सड़क को नदी से दो मील दूर हटाना पड़ा। इसी कटाव के कारण १९०४ ईस्वी में गोरखपुर जिले की ६७ वर्ग मील भूमि आजमगढ़ जिले में मिलानी पड़ी। आजमगढ़ जिले में घाघरा की लम्बाई ४४ मील है। इस समस्त लम्बाई में घाघरा गोरखपुर और आजमगढ़ जिलों के बीच में सीमा बनाती है।

टोंस नदी फैजाबाद से आकर महुल से ६ मील उत्तर-पूर्व में आज़मगढ़ जिले में प्रवेश करती है। कुछ दूर आगे मझुई नदी इसमें मिलती है। यहां से यह ३५ मील बहुत ही टेढ़ा मार्ग बनाती हुई आज़मगढ़ शहर में पहुँचती है।

आजमगढ़ शहर के आगे यह ८ मील तक उत्तर-पूर्व की ओर सगरी के दक्षिण में बिरमन में पहुँचती है। इसके आगे मुहम्मदाबाद के पास होती हुई दक्षिण-पूर्व को बहती है और छोटी सरजू से मिल जाती है। दोनों नदियों की संयुक्त धारा मऊनाथ भजन परगने को पार करके कुछ दूर तक फिर मुहम्मदाबाद के परगने को पार करती है अन्त में यह आजमगढ़ जिले को छोड़ कर गाजीपुर जिले में चली जाती है। घाघरा जिले की सबसे बड़ी नदी अवश्य है पर जिले का बहुत कम वर्षा जल घाघरा में जाता है। उत्तर में कछार के केवल कुछ नाले (बदरौंवा, हाहा आदि) और जिले के बाहर फरई और बसनई धारायें घाघरा में मिलती है।

इस जिले में झीलें और ताल बहुत हैं। कुछ कुछ बहुत बड़े हैं। जिले की लगभग डेढ़ लाख एकड़ भूमि पानी से घिरी हुई है। इसमें नदियां भी शामिल हैं लेकिन नदियां बहुत थोड़ा भाग घेरती हैं अधिकतर भाग झीलों और तालाबों से घिरा है। घोसी तहसील में सबसे अधिक झीलें हैं। इसके बाद सगरी देवगांव और अहरला में जल की अधिकता है। अधिकतर दलदल निचले आखातों में हैं। इनमें से कुछ दलदलों और झीलों का फालतू पानी नालों के द्वारा इधर उधर बह जाता है। कुछ झीलों का पानी कहीं नहीं बह पाता है। कछारी प्रदेश की लम्बी झीलें नदियों के पुराने मार्ग में स्थित हैं। और नदियों का प्रवाह मार्ग बदल जाने के कारण बनी हैं। जिन झीलों से नाले निकलते हैं वे गरमी की ऋतु में सूख जाती हैं। शेष कुछ में पानी बना रहता है। वर्षा ऋतु में सभी झीलें दूर तक फैल

जाती हैं। उत्तरी प्रदेश में दक्षिणी प्रदेश की अपेक्षा ताल और दलदल कम हैं वे अधिक बड़े भी नहीं हैं। धाराओं से बीच वाले ऊँचे भाग में भी दलदलों और तालों का प्रायः अभाव हैं। सबसे बड़े ताल दक्षिणी भाग में देवगांव तहसील में कोटैल, जमुआवां और गुमाहित हैं। कुम्भताल परगना महुल और देव गांव की सीमा पर है। महुल में पुख में और मुहम्मदाबाद में असौना ताल भी बड़े हैं। निजामबाद परगने में गम्भीरबन ताल सबसे बड़ा है। जब तक इनमें पानी रहता है तब तक इनमें सिवार और मछलियां रहती हैं। इनसे सिंचाई भी होती है। उत्तरी प्रदेश में कोइला, कासला, वासला (महुल परगने में) केंली और दुहिया बिरवा (अतरौलिया परगने में) अरा, तेल्हना, मंछिल कुछ उल्लेखनीय हैं। सगरी में सालोन ताल १२,००० फुट लम्बा और ९००० फुट चौड़ा और २० फुट गहरा है। धोसी में पकरी पेंवा ताल ६ मील लम्बा और दो मील चौड़ा और २५ फुट गहरा है। यह तीनों ताल कभी नहीं सूखते हैं।

सलोना ताल का अधिकतर भाग सूख जाता है। ताल के सूखे हुये भाग में गेहूँ उगाया जाता है। पकरी पेवा ताल इन सबसे बड़ा है इसके ऊपर अधिक लद रहता है। कहते हैं इस लद के ऊपर से मनुष्य पैदल चल सकता है। रतोई ताल से हाहा नाला निकलता है।

आज़मगढ़ जिले में अच्छी खेती होती है फिर भी यहां ऊसर और उजाड़ भूमि अधिक है। लगभग २० फीसदी भूमि ऊसर और उजाड़ है। इसमें प्रायः डेढ़ लाख एकड़ भूमि पानी से घिरी है। कुछ पानी से घिरी है। कुछ भूमि में गांव बसे हैं। इस प्रकार डेढ़ लाख एकड़ से अधिक भूमि ऐसी है जिसमें खेती नहीं हो सकती है। देवगाँव तहसील में सबसे अधिक भूमि बीरान है। इनमें ऊसर और रेह है। ऊसर भूमि कुछ ऊंची है। इनके पास वाली नीची उपजाऊ भूमि में धान की खेती होती है। खुश्क ऋतु में ऊसर के ऊपर सफेद रेह निकल आता है। कुछ ऊसरों में रेह ऊपर प्रगट नहीं होता है। लेकिन धरातल पर नमक होने के कारण उन में खेती नहीं हो पाती है। उत्तरी भाग में ऊसर पुराने ऊंचे बांगर में मिलते हैं। टोंस और दूसरी छोटी नदियों के गहरे नालों के समीप भी ऊसर भूमि मिलती है। कहीं कहीं नालों के समीप पेड़ हैं जिससे भूमि का कटना रुक गया है। कहीं-कहीं नालों के पड़ोस में मुलायम मिट्टी बह गई है। कड़ी कंकड़ीली भूमि शेष रह गई है। ऊसर के कुछ भागों में पर्याप्त पानी मिलने से धान की फसल हो जाती है। पानी के भरे रहने से नमक ऊपर नहीं प्रगट होता है। लेकिन सूखने पर नमक ऊपर आ जाता है और दूसरी फसल को जमने (बढ़ने) नहीं देता है। इस जिले में जंगल का अभाव है केवल घाघरा के समीप रेतीले भागों में झाऊ की अधिकता है। कछारी भाग में पेड़ों की कमी है। टोंस और दूसरी छोटी नदियों के समीप ढाक सिहोर अकोल और बबूल का जंगल है। जिले भर में प्रायः ५०,००० एकड़ भूमि जंगल से ढकी है। इस जिले में गोचर भूमि की कमी है। गांवों के पड़ोस में महुआ, आम आदि पेड़ों के बाग हैं। घाघरा के समीप झाऊ के जंगल में जंगली सुअर बहुत हैं। ढाक के जंगल में नील गाय, लोमड़ी और शृगाल हैं। सांप सब कहीं हैं। तालाबों में मछलियों की अधिकता है। गोचर भूमि की कमी से घी दूध के जानवर भी अच्छे नहीं हैं।

अप्रैल, मई और जून आज़मगढ़ जिले में अधिक गरमी के महीने हैं। इन महीनों में तापक्रम छाया में ७० अंश से ११० अंश फारेन हाइट तक हो जाता है। इन दिनों हवायें पश्चिम की ओर से चलती हैं। जून के अन्त में वर्षा लाने वाली पूर्वी हवा चलने लगती है। वर्षा होने पर तापक्रम कुछ कम हो जाता है। लेकिन हवा में नमी बढ़ जाने से कम गरमी भी असह्य हो जाती है। वर्षा अक्तूबर के आरम्भ तक होती है। लेकिन वर्षा लगातार नहीं होती है। औसत से यहां ४१ इंच वर्षा होती है। कभी कभी वर्षा समाप्त होने पर तेज़ धूप हो जाती है और हवा में पश्चिम की ओर से चलने लगती है। कहते हैं वर्षा ऋतु में जितने दिन पश्चिम की ओर से हवा चलती है उतने ही दिन शीतकाल में पाला पड़ता है। रात को ओस गिरती है। जिले के भिन्न भिन्न भागों में वर्षा

में बहुत थोड़ा अन्तर पड़ता है। दक्षिणी भाग में कुछ कम वर्षा होती है। आजमगढ़ तहसील में लगभग ४२ इंच और देवगांव में ३८ इंच वर्षा होती है। सब वर्षों में समान वर्षा नहीं होती है। किसी किसी वर्ष यहां ७४ इंच तक वर्षा हुई है। कई बार ५० इंच से अधिक वर्षा हुई। प्रबल बर्षा के वर्षों में बाढ़ भी अधिक आती है। इससे ईख और दूसरी फसलें नष्ट हो जाती है। किसी किसी वर्ष यहां बीस इंच से भी कम वर्षा हुई है। यदि वर्षा समय पर हो और अधिक न हो तो भी खेती की फसलें हो जाती हैं। आरम्भ (जुलाई) में अद्रा और अन्त (सितम्बर) में हस्त नक्षत्र में वर्षा हो जाने से अच्छी फसलें हो जाती हैं। "चढ़त बरसे अद्रा उतरत बरसे हस्त, कितनो राजा डांडेस सुखी रहे गृहस्थ की कहावत यहां प्रसिद्ध है। इसका अर्थ यह है कि अगर आरम्भ में आद्रा और अस्त में हस्त नक्षत्र बरस जावें तो राजा (जमींदार) कितना ही डाड़ ले (फसल अच्छी होती है और) गृहस्थ सुखी रहता है। कार्तिक (अक्तूबर) से जाड़ा आरम्भ हो जाता है। शीतकाल में ४० अंश से ८० अंश तक तापक्रम रहता है। शीतकाल में कभी कभी पाला भी पड़ जाता है इससे फसलों को हानि होती है। एक दो बार साधारण वर्षा भी हो जाती है। इस जिले का शीतकाल सुहावना रहता है। वर्षा ऋतु में मच्छड़ों के बढ़ जाने से प्रायः मलेरिया ज्वर फैलता है।

कृषि—जिले की लगभग ५६ फीसदी भूमि खेती के काम आती है। जिले के सब भाग समान रूप से खेती के लिये उपयोगी नहीं हैं। सगरी में सब से अधिक (५९ फीसदी) भूमि में खेती होती है। इसके बाद आजमगढ़ (५८ फीसदी) और घोसी (५७ फीसदी) का स्थान है। मुहम्मदाबाद (५४ फीसदी) और देवगांव में सब से कम (४७ फीसदी) खेती होती है। इस जिले में लगभग २,००,००० एकड़ (२६ फीसदी) भूमि ऐसी उपजाऊ है कि इस में वर्ष में दो फसलें काटी जाती हैं। शेष में दो फसलें काटी जाती हैं। जिले की अधिकतर भूमि में खरीफ की फसल होती है। इसमें धान प्रधान है। ५२ फीसदी भूमि में धान होता है।

अहरौला तहसील की ६० फीसदी भूमि में धान होता है। घोसी तहसील में ५७ फीसदी और आजमगढ़ तहसील में ३६ फीसदी भूमि में धान होता है। इस जिले में कई प्रकार का धान होता है। ५८ फीसदी अगहनी और ४२ फीसदी भदई होता है। साठा, साठी, बगरी, ननिहन, सेल्हा देउला अधिक प्रसिद्ध हैं। यह मुलायम मिट्टी में बोये जाते हैं। कोरंगा, दूधा, सिंघावे कड़ी मिट्टी में बोये जाते हैं। भैंसलोट और मनसर गढ़ों की चिकनी मिट्टी में उगाये जाते हैं। एक एक एकड़ में लम्बा पतला धान १४ मन और मोटा धान २० मन होता है। बसुमती लोरा, लेजुर, मलदही, रानी काजर, कोरंग, सिल्ही बढ़िया चावल गिने जाते हैं।

खरीफ की फसल की प्रायः १५ फीसदी भूमि में ईख उगाई जाती है। घोसी तहसील में १७ फीसदी और देव गांव में ८ फीसदी भूमि ईख से घिरी हुई है। गन्ना भी कई प्रकार का होता है। चिकनी करैल मिट्टी में बढ़िया गन्ना होता है। बांगर भूमि में गन्ने को बहुत सींचने की आवश्यकता होती है। बोने के लिये कुछ अच्छे गन्ने अलग रख दिये जाते हैं। बोने के एक दिन पहले गन्ने के पत्ते और सिरे अलग कर दिये जाते हैं। फिर गन्ने के छोटे छोटे टुकड़े (जिन्हें बैंड कहते हैं) कर लिये जाते हैं। प्रत्येक टुकड़ा प्रायः एक फुट लम्बा होता है। इसमें तीन चार आंख (गांठ) होता है। एक एकड़ खेत में २१००० पैंड (टुकड़ों) की आयश्यकता होती है। बोने में तीन हल लगते हैं। बोने वाला दूसरे हल के पीछे पीछे एक एक फुट की दूरी पर पैंड गिराता जाता है। उसके पीछे वाला तीसरा हल इन्हें मिट्टी से ढकता जाता है। चार पांच दिन के बाद पांड बैठावन का काम होता है। जब पोई निकल आती है तब इनमें घड़े से हलका पानी देते हैं। इसके खाद देने और गोड़ने का काम होता है। थोड़े थोड़े समय के बाद गोड़ने और सींचने का काम बराबर होता रहता है। जनवरी महीने में गन्ना

पक जाता है। लेकिन काटने और पेरने का काम इससे कुछ पहले ही आरम्भ हो जाता है। यहां मंडुआ और कोदों लगभग ७ फीसदी भूमि में होते हैं। कोदों की अपेक्षा मंडुआ दोगुनी भूमि में बोया जाता है। आज़मगढ़ तहसील में सबसे अधिक (७ फीसदी) मडुआ बोया जाता है। पश्चिमी भाग में मंडुआ को मकरा कहते हैं। कोदों ऊँची भूमि में होता है। खरीफ की लगभग ३ फीसदी भूमि में नील बोया जाता है। अधिकतर नील आज़मगढ़ तहसील में बोया जाता है। नील दो प्रकार से उगाया जाता है। सिंचाई करके जो नील वसंत या ग्रीष्म ऋतु में बोया जाता है उसे जमौवा कहते हैं। जो नील वर्षा के आरम्भ में बोया जाता है उसे असाढ़ या नौधा कहते हैं। जमौवा फसल अगस्त में तयार हो जाती है। असाढ़ू कुछ देर में तयार होती है। फसल काटने के बाद पौधों की खूंटी खेत में ही छोड़ दी जाती है।

आज़मगढ़ जिले में ६ फीसदी (प्रायः ३०,००० एकड़) भूमि मकई बोने के काम आती है। देवगांव में सबसे अधिक (१२ फीसदी) और मुहम्मदाबाद में सबसे कम २ फीसदी मकई उगाई जाती है। एक एकड़ भूमि में तीन चार सेर बीज बोया जाता है। प्रति एकड़ में लगभग १२ मन मकई उगती है। जब नियमित रूप से मध्यम वर्षा होती है तभी मकई की भी फसल अच्छी होती है। खरीफ की फसल में यहां उर्द, मूंग, मोट और तिल भी बोते हैं। इन्हें प्रायः ज्वार बाजरा और अरहर के साथ मिलाकर बोते हैं। रस्सी बनाने के लिये ईख या दूसरे खेतों की मेंड के पास सन और पेटसन बो दिया जाता है।

रबी की फसल में जौ का स्थान प्रथम है। रबी की फसल की ३९ फीसदी (१७७००० एकड़) में जौ उगाया जाता है। देवगाँव में सबसे अधिक (५७ फीसदी) और घोसी में सबसे कम (२५ फीसदी) उगाया जाता है। आजमगढ़ तहसील में रबी की फसल को ५० फीसदी भूमि जौ घेरता है। सगरी और घोसी में जौ और चना मिलाकर बोते हैं। अकेला गेहूँ बहुत कम (४ फीसदी) उगाया जाता है। चना के साथ मिला हुआ गेहूँ १५ फीसदी भूमि में बोया जाता है। सगरी में २५ फीसदी और देवगांव में ६ फीसदी गेहूँ चना होता है। एक एकड़ में डेढ़ दो मन गेहूँ बोया जाता है। प्रति एकड़ में २५ मन गेहूँ पैदा होता है। जिले भर में जौ एक प्रकार का होता है। गेहूँ दो प्रकार सफेद या दूधी और लाल होता है। जायद फसल बहुत होती है।

जिले में नियमित रूप से वर्षा होती है। सिंचाई की भी सुविधा है। इससे इस जिले में दुर्भिक्ष का प्रकोप कम होता है। बांगर के कुओं में चार पांच गज़ की गहराई पर और कछार के कुओं में ३ गज़ की गहराई पर पानी निकल आता है। लेकिन दक्षिणी भाग में छः सात गज़ की गहराई पर पानी निकलता है। लगभग ५२ फीसदी खेत कुओं से और शेष ४८ फीसदी ताल आदि से सींचे जाते हैं।

कारबार—आजमगढ़ कोई बड़ा कारबारी ज़िला नहीं है। शक्कर कपड़ा और मिट्टी के बर्तन बनाने का काम कुछ स्थानों में होता है। पहले यहां नील बहुत तयार किया जाता था। गुड़, राब और शक्कर कई स्थानों में बनाई जाती है। राब बनाने के लिये अधिक गहरे कढ़ाई में रस औटा जाता है। दुल्ला की जड़ों के उबले हुये पानी से छींटें देकर कड़ाह के ऊपर आया हुआ राब का मैल साफ किया जाता है।

निज़ामाबाद के मिट्टी के बर्तन मशहूर हैं। गौरीपुर के ताल से चिकनी मिट्टी मिलती है। उसी से गुलदस्ते, तश्तरी आदि तरह तरह की चिकनी और चमकीली चीज़ें बनती हैं।

मऊ, कोपागंज और मुबारकपुर बुनाई के केन्द्र हैं। मुबारकपुर में रेशमी या ग़ल्ला और रेशमी सूती मिला हुआ संगी कपड़ा बुना जाता है। गाढ़ा, लुंगी, साड़ी, धोती, डोरिया आदि कपड़े मऊ और कोपागंज में बुने जाते हैं। पारे ज़िला में लगभग ७००० करघे चलते है और १२००० जुलाहे काम करते हैं। पर यहां रुई नहीं होती है इसलिये सूत कानपुर, अहमदाबाद और बम्बई से आता है। इस प्रकार लगभग ७५ लाख रुपये का सूत बाहर से आता है। ७ लाख रुपये का रेशम माल्दा से आता है। सूत और रेशम का मिला हुआ संगी कपड़ा इस सफाई से बुना जाता है कि सूत सीधी और नहीं दिखाई देता है। इसमें सब जगह लहरिया धारी रहती है। गल्ता सादा बुना जाता है और पीछे से

रंग लिया जाता है। मऊ, कोपागंज और कुरथी में रंगरेज़ लोग रंगाई का काम करते हैं। मऊ कोपागंज और अदरी में बढ़ई करघे बनाते हैं। कई गांवों में कुरमी लोग सन से टाट पट्टी बुनते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

आज़मगढ़ जिले में प्राचीन भग्नावशेषों का प्रायः अभाव है। केवल कहीं कहीं कुछ खेड़े, उजड़े हुये किले और ताल पाये जाते हैं। कहते हैं असिलदेव नाम का एक भार या राजभार सरदार महुल परगने के दिहद्वार में रहता था। कहा जाता है। यहां के ताल उसी ने बनवाये थे यहां के खेड़ों के नीचे उसके भवनों के भग्नावशेष दबे पड़े हैं। आरा के बचगोती राजपूतों के अनुसार उन्हीं का पूर्वज यहां का राजा था। जहां इस समय निज़ामाबाद का प्रदेश है वहां राजा परीक्षित राज्य करता था। अयोध्या राय नाम का एक राजा भार अरांव जहांनियापुर के पुराने कोट (किले) में रहता था। राजा परीक्षत मुसलमानों से लड़ा था। भार राजाओं की राजधानी भरांव या भड़ांव में थी। सोयरी लोग गंगी नदी के दक्षिण में सेंगरिया प्रबल थे। चिड़िया कोट या चेरूकोट पर चेरू लोगों का अधिकार था। फिर जौनपुर के शर्की बादशाहों ने इस किले को छीन लिया। जिले का सब से बड़ा कोट (किला) घोषी में था इसे राजा घोष ने बनवाया था। कुछ लोगों का कहना है कि बसे दानवों ने बनवाया था। इन्होंने ही नरजा ताल से चौभईपुर या वृन्दावन तक एक लम्बी सुरंग बनवाई थी। कहते हैं यह जिला अयोध्या के कौशल राज्य में शामिल था। कहते हैं देउलास गांव के पास एक ताल के किनारे जहां ऊंची भूमि है वहां अयोध्या का पूर्वी द्वार था। आगे चल कर इस जिले में मौर्य और फिर गुप्त वंश का राज्य हुआ। गुप्त कालीन भग्नावशेष जिले के कई स्थानों में मिलते हैं। काशी से कुसन गोरा को जाते समय चीनी यात्री ६३७ ईस्वी में सम्भवतः इस जिले में होकर गया था। देव गांव परगने के डमांव गांव में सम्वत १२०१ (११६४ ईस्वी) का एक पत्थर मिला है जिसमें कन्नौज के राजा गोविदचन्द का नाम खुदा था। इससे सिद्ध होता है कि इस समय यह जिला कन्नौज के राज्य में शामिल था। कन्नौज के राज्य का अन्त हो जाने पर यहां मुसलमानों का प्रभुत्व हुआ। इसी समय पश्चिमी भागों को छोड़कर राजपूत जिले में बसने लगे। राजपूतों के पीछे पीछे मुसलमान यहां आये और बस्तियां बसाने लगे। पर इस समय मुसलमानों का राज्य दृढ़ नहीं हो पाया था। जिले के कई स्थानों में मुसलमान सिपाही मार डाले गये वहां शहीदवाड़े बन गये। कहते हैं महमूद गज़नवी का भतीजा सैय्यद सालार इस जिले के भगतपुर (परगना सगरी) में कुछ समय ठहरा था। यहां उसकी स्मृति में प्रतिवर्ष मेला लगता है। यह जिला मुसलमानों के मार्ग से अलग पड़ता था इसलिये यह अधिक समय तक स्वाधीन रहा। घोसी परगने के चकेसर गांव में एक पत्थर पर फारसी अक्षरों में फीरोज़शाह का नाम और ७६० हिजरी (१३५९ ईस्वी) सन खुदा मिला। फीरोज ने इसी समय आजमगढ़ जिले में अपनी राज्य की जड़ जमाई। जौनपुर के वहरोज़ सुल्तानी ने आजमगढ़ जिले का वहरोज़पुर कस्बा बसाया। १४७४ तक यहां जौनपुर के सुल्तानों (बादशाही) का राज्य रहा। १४७४ में बहलोल लोदी ने सुल्तान हुसेन को जौनपुर से भगा दिया। आज़मगढ़ में लोदी वंश का राज्य हो गया। लेकिन बचगोती राजपूतों ने १,००,००० सेना इकट्ठी करके १४९२ में जौनपुर पर चढ़ाई की और जौनपुर के लोदी सूबेदार को उतार दिया। पर रायबरेली जिले में विद्रोही सेना की हार हुई। लोदी शासन जिले में फिर जम गया। सिकन्दर लोदी ने सिकन्दरपुर कस्बा बसाया जो १८७९ तक आज़मगढ़ जिले में शामिल रहा। १५२६ ई० बाबर ने इब्राहीम लोदी को हराया और मार डाला। पूर्व में शेर खां (शाह) प्रबल हो गया। १५२८ ई० में बाबर ने बिहार पर चढ़ाई की शेर खां ने सिकन्दर लोदी के बेटे महमूद लोदी का साथ दिया। घाघरा और गंगा के संगम के पास अफगान हारे और लखनऊ की ओर भागे। बाबर ने इस जिले के सगरी परगने में घाघरा को पार किया और अफगानों का पीछा किया। बाबर के मरने पर अफगान फिर प्रबल हो गये। शेर खां नाम के लिये महमूद

लोदी के अधीन रहा पर वास्तव में वह स्वाधीन हो गया। पहले १५३२ में शेर खां ने हुमायूं से सन्धि कर ली। १५३४ में हुमायूं गुजरात की ओर गया। इसी समय शेर खां ने बिहार और जौनपुर पर अपना अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने बंगाल को ले लिया। १५३८ में हुमायूं ने बंगाल की राजधानी गौड़ पर चढ़ाई की। लेकिन शेरशाह की बढ़ी हुई शक्ति के सामने हुमायूं को पीछे लौटना पड़ा। गंगा के किनारे चौंसा में हुमायूं की हार हुई। १५४० में वह कन्नौज के पास फिर हारा। विवश होकर हुमायूं हिन्दुस्तान छोड़कर फारस को चला गया। शेर खां हिन्दुस्तान का बादशाह हुआ। शेरशाह के मरने पर सूरी वंश शिथिल हो गया। आजमगढ़ जिले पर १५५४ तक शेरशाह और उसके उत्तराधिकारी सूरी बादशाहों का राज्य रहा। आजमगढ़ कस्बे में कोल्हू में संस्कृत में १५५३ ई० का एक लेख खुदा है। १५५५ में हुमायूं फिर हिन्दुस्तान को लौटा। १५५६ में पानीपत की लड़ाई में अफगान हारे। १५५९ ई० में आज़मगढ़ जिले पर मुगलों (अकबर) का शासन हुआ। विद्रोह दबाने के लिये सम्राट अकबर स्वयं इधर आया। निज़ामाबाद के पास मंज़िल से वज़न तुलादान का उत्सव हुआ। जन्म दिन को अकबर दो बार चन्द्र मास और सौर मास के अनुसार सोने चांदी आदि से तौला जाता था और यह धन निर्धनों को बांट दिया जाता था। अकबर के समय में आजमगढ़ का जिला इलाहाबाद सूबे की जौनपुर सरकार का अंग बन गया। जहांगीर के समय में आज़मगढ़ के राजा का विकास हुआ। निज़ामाबाद परगने के मेहनगर में गौतम राजपूत रहते थे। चन्द्रसेन गौतम के दो बेटे (सागर और अभिमान) थे। अभिमान मुसलमान हो गया। उसका नाम दौलत रक्खा गया। १६१८ में वह जौनपुर का फौजदार बनाया गया। उसे एक बड़ी जागीर मिली। उसके कोई लड़का न था। उसके भाई सागर के पांच (हरबंश, दयाल, गोपाल, जैनारायण और खरक) बेटे थे। दौलत के मरने पर हरवंश को जागीर मिली। हरवंस भी मुसलमान हो गया। उसने मेहनगर में एक किला और मकबरा बनवाया। मेहनगर के दक्षिण में उसने हरिबन्ध नाम का एक बड़ा बांध सिंचाई के लिये बनवाया। टोंस नदी के दक्षिण में हरबंशपुर में उसने कच्चा किला सुधरवाया। उसकी रानी रतनजोत (रत्न ज्योति) ने एक बाज़ार लगवाया जो रानी की सराय के नाम से प्रसिद्ध है। दयाल ने दयालपुर, गोपाल ने गोपालपुर बसाया। हरबंश का बेटा गम्भीर अपने पिता से अलग रहता था। उसने गम्भीरपुर का किला बनवाया। हरबंश ने पहले पहल राजा की उपाधि धारण की थी। गम्भीर के कोई बेटा न था। उसके भाई धरनीधर के तीन बेटे (विक्रमाजीत, रुद्र और नारायण) थे। विक्रमाजीत मुसलमान हो गया। उसने मुसलमान स्त्री से व्याह किया। उसी के बेटे (आज़म और अज़मत) थे। १६६५ में आज़म ने आज़मगढ़ शहर बसाया और किला बनवाया। अजमत ने अजमतगढ़ का किला और बाज़ार बनवाया। आज़म दिल्ली दरबार में गया। वहां से वह सेना के साथ दक्षिण को भेजा गया। पर किसी अपराध में वह कैद कर लिया गया। और कन्नौज में रक्खा गया। वहीं उसकी मृत्यु हो गई। मरने पर उसकी लाश यहां लाई गई और आजमगढ़ के पास बाग लकरांव गांव में गाड़ी गई। अजमत ने शाही खजाने में कर भेजना बन्द कर दिया। १६८८ में शाही सेना का एक अफसर (छबीले राम) भेजा गया। अजमत ने पहले छबीले राम को हरवंशपुर का किला ले लेने दिया। फिर उस किले में घेर लिया। यह समाचार पाते ही इलाहाबाद के सूबेदार हिम्मत खां ने जौनपुर से एक सेना लेकर चढ़ाई की। अजमत आजमगढ़ के उत्तर की ओर भागा। उसने खोरखपुर पहुँचने के लिये घाघरा को पार करने का प्रयत्न किया। यहीं वह डूब कर अथवा विरोधियों की गोली से मर गया। उसका बड़ा बेटा इकराम आज़मगढ़ का राजा हुआ। उसके मरने पर उसके भाई मुहब्बत ने राज्य किया उसने आज़मगढ़ के चारों ओर सात आठ मील व्यास वाले बांध का घेरा बनवाया। कहीं कहीं इसके खंडहर इस समय भी दिखाई देते हैं। कई स्थानों में थाने बनाये गये। पलवारी राजपूतों को रोकने के लिये नौली से गोह-

नारपुर तक किलों की एक पंक्ति बनाई गई। इनका निरीक्षण नील उपाध्याय के हाथ में था। उसकी बीरता के गीत इस समय भी गाये जाते हैं। १७०३ में नील उपाध्याय ने तिलसरन के कोट के पास शाही सेना नष्ट कर दिया। औरंगजेब के मरने पर भोजपुर के राजपूतों ने पश्चिम की ओर सगरी, घोसी और चकेसर तक अपना प्रभुत्व फैला लिया। उनके नेता कुंअर धीर सिंह ने लाल घाट के पास एक पक्की बारादरी बनवाई। इसके खंडहर इस समय भी मिलते हैं। १७१५ में धीरसिंह पडरौना में मारा गया मुहब्बत खां फिर शासन करने लगा। १७३२ के बाद यह जिला अवध के सूबेदार के प्रभुत्व में आ गया। माल न देने के कारण मुहब्बत खां कैद कर लिया गया और गोरखपुर में रक्खा गया। वहीं वह मर गया। उसका बेटा इरादत अकबर शाह के नाम से राजा हुआ। इरादत के मरने पर उसके बेटों में झगड़ा हुआ। झगड़ा तय करने के लिये अवध के नबाब वजीर के मन्त्री बेनी बहादुर को यहां आना पड़ा। १७६१ में आज़मगढ़ का जिला गाजीपुर के सूबेदार फजल अली को तीन वर्ष के लिये सौंप दिया गया। फजल अली ने बड़ा अत्याचार किया १७६४ में बेनी बहादुर ने लौटकर फजल अली को आजमगढ़ से अलग कर दिया। इसी (१७६४) वर्ष अवध का नवाब बक्सर की लड़ाई में अंग्रेजों से हार गया। इससे बनारस का प्रान्त अंग्रेजों को मिल गया। अवध के राज्य में गड़बड़ी मच गई। १८०१ तक आजमगढ़ अवध का एक चकला (जिला) बना रहा। १८०१ ई० में यह जिला ईस्ट इंडिया कम्पिनी को सौंप दिया गया। सिपाही विद्रोह के समय तक यहां कोई विशेष घटना न हुई। विद्रोह के आरम्भ (१८५७) में यहां ५०० देशी सिपाही थे। इनकी राजधानी पर अंग्रेज़ों को सन्देह था। अत: कलक्टर की कचहरी में किले बन्दी की गई। बराम्दा बन्द कर दिये गये। शत्रु को देखने और गोली चलाने के लिये दीवारों में छोटे छोटे छेदकर लिये गये। पर कोटों पर बालू के थैले रख दिये गये। प्रधान दरवाज़े पर दो छोटी तोपें लगा दी गई। पहली जून को सिपाहियों ने सभा की। इसी समय गोरखपुर और आज़मगढ़ से बनारस को खजाना भेजा जानेवाला था। तीसरी जून को पांच लाख रुपये का खजाना लेकर ८० सिपाही गोरखपुर से आजमगढ़ में आये। २ लाख रुपया आजमगढ़ से लेकर उसी रात को सिपाही आजमगढ़ को चल दिये। तीन घंटे बाद रात्रि में ही सिपाहियों ने विद्रोह का झंडा उठाया। उन्होंने क्वार्टर मास्टर सर्जेंट लूई को गोली से उड़ा दिया। मजिस्ट्रेट (होर्न) और जाइंट मजिस्ट्रेट (सिम्पसन) सिविल लाइन में भाग आये। गोरे लोग कचहरी की छत पर चढ़ गये। विद्रोहियों ने कैदियों को छोड़ दिया। विद्रोहियों को गोरों के मारने की अधिक चिन्ता न थी। वे खज़ाने को छीनने के लिये बनारस की ओर बढ़े। गोरे लोग इस बीच में जान बचाकर गाज़ीपुर को भाग गये। विद्रोही सिपाही खज़ाना लेकर आज़मगढ़ आये। फिर वे फैजाबाद को चले गये। १६ जून के बाद आज़मगढ़ में गदर दबाने का प्रयत्न किया गया। छिपे हुये गोरे लोग इस काम में सहायता देने के लिये बाहर आये। पूर्वी परगनों में कोई कठिनाई नहीं हुई। पश्चिमी परगनों के पलवार राजपूतों को दबाना कठिन था। २६ जून को मुजफ्फर जहां ने अपने आप को महल का राजा घोषित किया। लफटेनेंट हैवलाक ने गाजीपुर से आकर पलवारों पर चढ़ाई की। ३० जून को मेज बेनेबिल्स ने मुहब्बतपुर गांव पर आक्रमण किया। यहां कोई विरोध न किया गया। कुछ लोग कैद करके कोतवाली में रख दिये गये। १२ जुलाई को ३०० सिपाही लेकर वेनेबिल्स ने कोयल्सा में पलवारों पर चढ़ाई की। लड़ाई में पलवारों की जीत हुई अंग्रेजी सिपाही छिन्न भिन्न कर दिये गये और वेनेबिल्स को शीघ्र ही आजमगढ़ को लौटना पड़ा। १८ जून को पूरी तैयारी के साथ पलवारों पर फिर चढ़ाई की गई। इस बार पलवार फिर जीते। यदि वे कुछ ढीले न पड़ जाते तो आज़मगढ़ शहर पर उनका अधिकार हो जाता फिर भी वे शहर में घुस आये। गलियों में घमासान लड़ाई हुई। कुछ समय बाद वे शहर के बाहर चले गये। शहर में भोजन की कमी थी। इसी समय सिगौली (चम्पारन) और दीनापुर से विद्रोह का समाचार आया। अत:

गोरों ने आजमगढ़ शहर फिर खाली कर दिया। जिले का प्रबन्ध आजमगढ़ के राजा को सौंप दिया। चिड़िया कोट में रात को विश्राम किया गया। शहर में बड़ी गड़बड़ी मच गई। पलवार नेता पृथिवीपाल सिंह एक सेना लेकर शहर पर चढ़ आया। २५ अगस्त तक उसी का अधिकार बना रहा। २६ अगस्त को गुरखों की सेना यहां आ गई। इसके बाद यहां फिर अंग्रेज़ी अधिकार हो गया। फिर भी जिले के उत्तरी और पश्चिमी भाग में विद्रोह की आग धधक रही थी। इसी बीच में गोरखपुर के विद्रोही घाघरा के किनारे बरहज में एकत्रित हो गये। यहां उन पर आक्रमण किया गया। दोहरी घाट की रक्षा का भार ज़मीदारों को सौंप दिया गया। इसके बाद जिले के कुछ विद्रोहियों को दंड दिया गया उनके गढ़ नष्ट कर दिये गये। कोयलसा में पलवार सरदारों की सभा की गई और उनसे मित्रता का व्यवहार किया गया। नवम्बर में बाहर के विद्रोहियों ने अतरौलिया के किले पर अधिकार कर लिया। पर शीघ्र ही जौनपुर से सहायता मिल गई। ९ नवम्बर को विद्रोहियों ने किला खाली कर दिया। किला नष्ट कर दिया गया। १८५८ के मार्च मास तक शान्ति रही। १८ मार्च को कुअंर सिंह ने अतरौला में विद्रोही सेना इकट्ठी की। मार्ग में अंग्रेज़ी सेना को हरा कर कुंअरसिंह सिंह ने आजमगढ़ शहर और जिले को घेर लिया। कुछ सहायता बनारस से भी आई थी पर कुंअरसिंह ने मिलोन की सेना को बुरी तरह से हराया। २७ मार्च को इलाहाबाद से शीघ्र सहायता मांगी गई। लार्ड केनिंग इस समय इलाहाबाद में ही था। इलाहाबाद और लखनऊ से सहायता भेजी गई। १५ अप्रैल को टोंस के पास लड़ाई हुई। वेनेबिल्स मारा गया। लेकिन कुअँर सिंह अपने सिपाहियों को लेकर पीछे हट रहा था। नगही, नगरा आदि स्थानों में मुठभेड़ हुई। घाघरा को पार करके कुअँरसिंह गाज़ीपुर जिले में चला आया। गंगा को पार करके वह अपने जगदीशपुर गांव में चला गया। गंगा पार करते समय मेग्ना नाम गनबोट से छोड़ी गई गोली उसके लग गई थी। इसी से वह मर गया। कुछ ही समय में आजमगढ़ जिले में शान्ति स्थापित हो गई। जिन लोगों ने अंग्रेज़ों की सहायता की थी उन्हें जब्त की हुई ज़मीन दी गई। नाज़िर अली बख्श खां को ३५०० रुकी वार्षिक मालगुजारी वाली और सरिश्तेदार मुंशी सफदर हुसेन को २००० रु० वार्षिक की मालगुज़ारी वाली ज़मीन दी गई। और भी कई लोगों को तरह तरह के इनाम मिले।

अहरौला का छोटा गांव फैजाबाद जिले की सीमा के पास आजमगढ़ शहर से २१ मील दूर पर स्थित है। यह महुल या अहरौला तहसील का केन्द्र स्थान है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। रामलीला का उत्सव होता है।

अतरौलिया जिले के उत्तरी-पश्चिमी कोने पर आजमगढ़ से फैजाबाद को जानेवाली सड़क पर आज़मगढ़ से २६ मील की दूरी पर स्थित है। गांव के उत्तर में गदर के पूर्व पलवार राजपूत की कच्ची गढ़ी बनी थी। इसके पास ही कुंवर सिंह ने कर्नल मिलमैन को हराया था। विद्रोह के बाद गढ़ी तोड़ दी गई और जायदाद जब्त कर ली गई। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। आज़मगढ़ जिले का केन्द्र स्थान है। यह २६°५१ उत्तरी अक्षांश और ८३°१२ पूर्वी देशान्तर में स्थित है। आज़मगढ़ अवध तिरहुत (बंगाल नार्थ वेस्टर्न) रेलवे की शाखा लाइन का एक बड़ा स्टेशन है। इलाहाबाद से गोरखपुर को जानेवाली प्रान्तीय सड़क यहीं होकर जाती है। जौनपुर और दोहरी घाट इसी सड़क के मार्ग में हैं। आज़मगढ़ से दक्षिण-पूर्व में गाज़ीपुर और मऊ को और पश्चिम की ओर शाहगंज को पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़कें जिले के कई स्थानों को गई हैं। आज़मगढ़ शहर के तीन ओर सांप की तरह टेढ़ी बहने वाली टोंस नदी है। एक किनारे से दूसरे किनारे तक नदी की औसत चौड़ाई २३० फुट है। इसके किनारे ऊंचे और सपाट हैं। लेकिन वर्षा ऋतु में भयानक बाढ़ प्रायः दूर तक पहुँच जाती है। शहर को हानि पहुँचाती हैं। शहर मरिया, ऐलवल, सिउली, अरज़ी, बघान, हीरा पट्टी और कोएडार

अजमतपुर मौजों की भूमि में बसा है। इस शहर को १६६५ ईस्वी में राजा आजम खां ने बसाया था। पहले यहां राजा की राजधानी रही कुछ समय तक यहां अवध के नवाब के एक चकले का यह केन्द्र स्थान रहा। गदर में यहां पहले पलवार राजपूतों से फिर कुंअरसिंह से लड़ाइयां हुई। यह जिले का सब से बड़ा नगर है। गौरी शंकर का मन्दिर प्रायः २०० वर्ष का पुराना है। यहां अस्पताल, टाउन हाल, मिशन हाई स्कूल, कोतवाली कचहरी है। अनाज, गुड़, घी, पशु (कटने के लिये) तेल, ईंधन, धातु और कपड़ा बाहर से आता है। शक्कर और कपड़ा बाहर को भेजा जाता है।

अजमतगढ़ आज़मगढ़ से दोहरी घाट को जानेवाली प्रान्तीय सड़क पर सिलौना ताल के पास स्थित है। कुछ समय तक यह सगरी तहसील का केन्द्र स्थान था। यह जिले का एक बड़ा कस्बा है। इसे आजम के भाई अजमत ने बसाया था। पड़ोस में ही उसके बनवाये हुये किले के खंडहर हैं। यहां डाकखाना और अंग्रेज़ी स्कूल है। सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। रामलीला का मेला लगता है। बांकट गांव आज़मगढ़ से दोहरी घाट को जानेवाली सड़क पर आज़मगढ़ से ७ मील दूर है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। पश्चिमी भाग से जो कपास आती है वह यहीं से दूसरे भागों को भेजी जाती है। मंगल और शुक्रवार को बाजार लगता है। क्वार में रामलीला का उत्सव होता है। बड़ा गांव घोसी से डेढ़ मील उत्तर में गाजीपुर से दोहरी घाट को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। गांव से आध मील दक्षिण की ओर रेलवे स्टेशन है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

भगतपुर आज़मगढ़ से ११ मील की दूरी पर बिलरिया गंज से आध मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। कहते हैं सैयद सालार मसूद गाजी ने यहां विश्राम किया था। बैशाख सुदी तीज को उसकी स्मृति में यहां मेला लगता है।

बिलरियागंज सगरी तहसील के प्रायः मध्य में आज़मगढ़ से १० मील की दूरी पर समुद्र-तल से २६० फुट की उंचाई पर स्थित है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहां शक्कर बनाने और कपड़ा बुनने का काम होता है।

केप्टेनगंज आज़मगढ़ से फैजाबाद को जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से ११ मील दूर है। यहां एक छोटा स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

चिड़िया कोट कस्बा गाजीपुर से आज़मगढ़ को आनेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। कच्ची सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर बेल्हा और देवगांव को और उत्तर में मुहम्मदाबाद को गई हैं। यह एक प्राचीन स्थान है। गांव के बाहर हातिम खां नामी एक शेख का मकबरा है जो अठारहवीं सदी में मुगल बादशाह का एक कर्मचारी था। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। क्वार में रामलीला और जेठ में सैयद सालार मसूद का मेला लगता है। बढ़ालगंज में मंगल और शनिवार को मेला लगता है। यहां कुछ शक्कर बनाने का काम होता है।

देवगांव आजमगढ़ से २८ मील की दूरी पर बनारस को जाने वाली पक्की सकड़ पर स्थित है। यह स्थान पुराना है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, पड़ाव और मिडिल स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को छोटा बाज़ार लगता है। यहां से ४ मील की दूरी पर लालगंज में अधिक बड़ा बाज़ार लगता है।

दीदारगंज आजमगढ़ से २९ मील पश्चिम में जौनपुर जिले की सीमा के पास स्थित है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। इसी से यहां थाना बनाया गया। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल भी है। दोहरी घाट घाघरा के किनारे पर उस स्थान पर बसा है जहां इलाहाबाद और गाजीपुर से आने वाली सड़कें मिलती हैं।

मऊ से आने वाली बंगाल नार्थ वेस्टर्न अवध तिरहुत रेलवे की शाखा लाइन का यह अन्तिम स्टेशन है। कहते हैं वर्तमान कस्बा आजमगढ़ के राजा जहानखां ने बसाया था। राजा ने इसके चारों ओर एक खाई बनाई थी आसफुद्दौला के समय में स्थानीय अफसरों से एक और (दोहरी) खाई बनवा दी इसी से इसका नाम दोहरी घाट पड़ा। कुछ लोगों

का कहना है कि यहां गाय दुही जाती थीं। इसका पुराना नाम दोहनी घाट था। इसी से बिगड़ कर दोहरी घाट नाम पड़ा। घाघरा का किनार यहां कड़ा और कंकड़ीला है। यहां घाघरा की धारा भी तंग है। इससे यह लकड़ी, अनाज, नमक, तम्बाकू, गुड़, शक्कर और दूसरी वस्तुओं के व्यापार का केन्द्र बन गया। बाजार प्रतिदिन लगता है। नवाबी समय में १८२३ तक यही व्यापार की चुंगी एकत्रित की जाती थी। यहां के एक धनी जुलाहे ने बनारस से भागे हुये वज़ीर अली को शरण दी थी। इस अपराध में उसे भारी दंड मिला था। यहां थाना, तार-डाक घर, पड़ाव और स्कूल है।

दुबरी घाघरा के पास आज़मगढ़ से ३६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। यह गांव जिले के बड़े गांवों में से एक है। गदर में यह गांव जब्त कर लिया गया था और वेनेबिल्स साहब को दे दिया गया था। लेकिन यह साहब गदर में मारे गये। अतः यह उनके वारिसों को मिला। १८९५ ईस्वी तक यह उन्हीं के साथ में रहा। इस के बाद यह बेच दिया गया।

गम्भीरपुर आज़मगढ़ से जौनपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर आज़मगढ़ से साढ़े सोलह मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

घोसी गाजीपुर से दोहरी घाट को जानेवाली पक्की सड़क पर आज़मगढ़ से २४ मील दूर है। मऊ-दोहरी घाट शाखा लाइन का रेलवे स्टेशन है। घोसी पुराना कस्बा है। इसके पास में एक पुराने कच्चे किले के खंडहर हैं। यहां तहसील, थाना, पड़ाव, डाकखाना और मिडिल स्कूल है रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है क्वार में दशहरा का मेला लगता है।

इमला खास में गाज़ीपुर से दोहरी घाट को जानेवाली पक्की सड़क से जगदीशपुर से आनेवाली कच्ची सड़क मिलती है। यहां शक्कर बनाई जाती है। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। पास ही भूमिहार जमीदारों के पूर्वजों के बनवाये हुये कच्चे किले के खंडहर हैं।

जगदीशपुर आज़मगढ़ से शाहगंज को जानेवाली सड़क पर आज़मगढ़ से २० मील दूर है। यहां के जुलाहे अच्छा गाढ़ा बुनते हैं। एक प्राइमरी स्कूल है।

जहानगंज आज़मगढ़ से गाजीपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर आज़मगढ़ से ११½ मील दूर है। रेलवे स्टेशन उत्तर की ओर ४½ मील दूर है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। जुलाहे अच्छा कपड़ा बुनते हैं। सोमवार और मंगलवार को बाज़ार लगता है।

जियानपुर आज़मगढ़ से दोहरी घाट को जानेवाली पक्की सड़क पर आजमगढ़ से १२ मील दूर है। यह सगरी से २ मील दूर है और सगरी तहसील का केन्द्र स्थान है। एक सड़क पूर्व की ओर अजमतगढ़ को जाती है। यहां थाना, डाकखाना, मिडिल स्कूल और पड़ाव है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है।

कोयल्सा आजमगढ़ से फैजाबाद को जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से १७ मील दूर है। गदर तक यह एक तहसील का केन्द्र स्थान था गदर में यहां लड़ाई हुई थी। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। शक्कर बनाने का काम होता है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

कोपागंज गाजीपुर से दोहरी घाट को जानेवाली पक्की सड़क पर आजमगढ़ से २४ मील और मऊ से ६ मील दूर है। यहां अवध तिरहुत बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे की शाखा लाइन का स्टेशन है। यह प्राचीन स्थान है। पुराना गांव कोवा कहलाता था।

एक मन्दिर के द्वार पर एक पत्थर पर १५२९ सम्वत (१४७२ ई०) खुदा हुआ है। वर्तमान कस्बे को आज़मगढ़ के राजा इरादत खां ने १७४५ ई० में बनाया था। उसने इसका नाम इरादगंज रक्खा। लेकिन कोपागंज नाम ही प्रचलित रहा। यहां एक किला बनाया गया। नगर के चारों ओर एक ऊंचा बांध बनाया गया। यहां के जुलाहे बढ़िया कपड़ा बुनते हैं। शक्कर शोरा और अनाज का व्यापार होता है। यहां डाकखाना और स्कूल है।

लालगंज बनारस को जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। इसे कटघर के मुसलमानों को एक बलोच रिश्तेदार लाल खां ने बसाया था। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। बुधवार और रविवार

को बाजार लगता है। अनाज और कपड़े का व्यापार होता है।

मधुबन आजमगढ़ से २८ मील और घोसी (तहसील) से १०३ मील दूर है। यहां से सूरजपुर, नगरा आदि स्थानों को सड़कें गई हैं। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। मंगल, वृहस्पति और शनिवार को बाजार लगता है।

महराजगंज आज़मगढ़ से १४ मील और जौनपुर से १५ मील दूर छोटी सरजू के किनारे परिस्थित है। यहां दो सड़कें मिलती हैं। यहां भैरों का पुराना मन्दिर है। गांव का पुराना नाम विष्णु पर था। आजमगढ़ के राजाओं ने बदल कर इसका नाम महाराज गंज रख दिया। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। गुरुवार और रविवार को बाज़ार लगता है। यहां के जुलाहे अच्छा कपड़ा बुनते हैं। पूर्णमासी को भैरों के मन्दिर पर मेला लगता है।

महुल गांव के नाम से ही महुल परगने और तहसील का नाम पड़ा है। यह आज़मगढ़ से मवई को जानेवाली सड़क पर स्थित है। अहरौला से दीदार गंज जानेवाली सड़क इस सड़क को महुल में पार करती है। महुल तहसील के केन्द्र स्थान अहरौला से ६ मील और आजमगढ़ से २५ मील दूर है। महुल प्राचीन गांव है। सोमवार और शुक्रवार को बाज़ार लगता है।

मऊनाथ भंजन टोंस नदी के दाहिने किनारे पर मुहम्मदाबाद (तहसील) से १३ मील और आजमगढ़ शहर से २५ मील दूर है। यहां से दोनों को पक्की सड़क गई है। यह बनारस-भटनी लाइन का एक स्टेशन है। शाखा लाइन आजमगढ़ होकर शाहगंज को गई है। मऊ आजमगढ़ से भी अधिक पुराना है। यहां मलिक ताहिर का मकबरा है। शाहजहां ने मऊ अपनी लड़की जहान आरा बेगम का जागीर में दे दिया था। उसने यहां एक कटरा (बाजार) बनवाया। पहले यहां कपड़ा बुनने का काम बहुत होता था। इस समय भी जुलाहे कुछ कपड़ा बुनते हैं। जुलाहे कुछ कट्टर हैं। इस से हिन्दू मुसलमानों में यहां कभी कभी बकरीद के अवसर पर खटपट हो जाती है। यहां थाना, अस्पताल, डाक-तार घर, मिशन स्कूल और लड़कियों के स्कूल हैं। यह एक प्रसिद्ध रेलवे जंकशन है। यहां इंजीनियर और डिस्ट्रिक्ट ट्राफिक सुपरिन्टेण्डेण्ट और लाकोमोटिव सुपरिन्टेण्डेण्ट का दफ्तर है।

मेहनगर मुहम्मदपुर या रामजीत पट्टी से बेल्हा को जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से २१ मील दूर है। यहां गौतम राजपूतों का प्रथम निवास था इन्हीं से आजमगढ़ के राजाओं की उत्पत्ति हुई। यहां उस गढ़ के खंडहर हैं जिसे इस राजवंश में संस्थापक राजा हरवंश ने १७ वीं शताब्दी में बनवाया था। प्रथम राजधानी यहीं थी। आजमगढ़ के बस जाने पर मेहनगर में राजधानी न रही। इसके पड़ोस का विशाल हर बन्ध भी सिंचाई करने के लिये राजा हरवंश ने बनवाया था। यहां एक बड़ा मकबरा है। इसके भीतर इस वंश के कई सदस्य गड़े हैं। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है।

मेहनाजपुर जिले के धुर दक्षिण में देवगांव (तहसील) से १० मील और आजमगढ़ से २८ मील दूर है। यहां ख्वाजा मेहनाज का मकबरा है जो बैस राजपूतों के पहले यहां अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुका था। यहां मिडिल स्कूल है।

मुबारकपुर आजमगढ़ से ८ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। कहते हैं कड़ा के राजा सूफी राजा मुबारक ने इसे बसाया था। यहां के जुलाहे गाढ़ा और दूसरा बढ़िया कपड़ा बुनते हैं। जुलाहे कुछ कट्टर हैं। इससे कभी कभी हिन्दुओं और मुसलमानों में झगड़ा हो जाता है। यहां थाना, डाक तार-घर और अपर प्राइमरी स्कूल है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है। बैसाख के प्रथम वृहस्पतिवार को सोहबत का मुसलमानी मेला लगता है।

महम्मदाबाद टोंस नदी के किनारे पर आज़मगढ़ से १२ मील दूर है। यहां शाहगंज मऊ लाइन का स्टेशन है। यहां होकर आजमगढ़ से मऊ को पक्की सड़क जाती है। कच्ची सड़कें मबारकपुर, ।जयानपुर, घोसी, कोपागंज और चिड़ियाकोट को

गई हैं। इसका पूरा नाम मुहम्मदाबाद गोहना है। कहते हैं पहले यहां सिंहल राजपूतों का अधिकार था। ठकराही नाम का ताल यहां एक ठकुराइन की आज्ञा से खोदा गया था। अलीकुली खां ने अकबर के प्रति विद्रोह करते समय इस पर अधिकार कर लिया था। यहां कपड़ा बुनने और शक्कर बनाने का काम होता है। यहां मुंसफी, तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है।

निजामाबाद टोंस नदी के किनारे आजमगढ़ से ८ मील पश्चिम की ओर है। यह एक पुराना स्थान है। मुसलमानों के आने से पूर्व यहाँ हिन्दुओं की बस्ती थी। यहां शेख निजामुद्दीन का मकबरा है। उसी की स्मृति में इस नगर का यह नाम पड़ा। कहते हैं अलीकुली खां को भगाने के बाद अकबर ने अपने जन्म दिन को यहां पड़ाव डाला था। १७६३ में नवाब वजीर के एक अफसर ने आजमगढ़ के राजा जहान खां को यहां मार डाला और उसके सिपाहियों ने नगर को लूट लिया। इसके बाद इस नगर की अवनति होती गई। यहां मिट्टी के बर्तन अच्छे बनते हैं। शक्कर भी बनाई जाती है। सोमवार और वृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

पवई जिले के धुर पश्चिम में आजमगढ़ से ३० मील और अहरौला (तहसील) से ११ मील दूर है। राजभार यहां के मूल निवासी थे। उनके कच्चे गढ़ के खंडहर इधर उधर फैले हुये हैं। सैयदों ने राज भारों को भगा दिया। यहां थाना, डाकखाना, और प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

फूलपुर आजमगढ़ से २५ मील पश्चिम में अहरौला (तहसील) से ८ मील दक्षिण की ओर है। यहां अवध तिरुहुत लाइन का स्टेशन है। पक्की सड़क यहां से शाहगंज को गई है। फूलपुर के पड़ोस में बढ़िया गन्ना होता है। इसलिये यहां शक्कर भी अच्छी बनती है। मंगलवार और शनीवार को बाजार लगता है। महुल के राजा ने १७३३ में पहले पहल बाजार लगवाया था। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

रौनापार जिले के उत्तरी सिरे पर घाघरा की एक शाखा नदी के किनारे आजमगढ़ से १८ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

सगरी तहसील का केन्द्र स्थान जियानपुर है। यह पक्की सड़क पर स्थित है। यहां से सगरी गांव दो मील दूर है। जियानपुर से कच्ची सड़कें रौनापार घोसी इमला आदि स्थानों को गई हैं।

सराय मीर आजमगढ़ से शाहगंज को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह अवधतिरहुत रेलवे की शाहगंज शाखा लाइन का एक स्टेशन है। इसका पुराना नाम खरवां था। पन्द्रहवीं सदी में यहां मुसलमानों का अधिकार हो गया था। यहां शाह सैयद अली का मकबरा है। वह शेरशाह का मित्र था। उसने शेरशाह के सम्बन्ध में पहले ही भविष्य-वाणी की थी। मकबरे के पास साल में एक बार मेला होता है। दूसरा मकबरा लालखां नाम के एक व्यक्ति का है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

रानी की सराय आजमगढ़ से जौनपुर को जाने वाली सड़क पर आजमगढ़ से ६ मील दूर है। यहां का बाजार राजाहरबंस की रानी रानीरतनजोत (रत्नज्योति) ने बनवाया था। यहां डाकखाना स्कूल और पड़ाव है। बाजार के अतिरिक्त यहां दशहरा का मेला होता है।

सूरजपुर दोहरीघाट से सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क पर घोसी (तहसील) से ९ मील और आजमगढ़ से ३२ मील दूर है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। रामलीला का मेला लगता है।

तरवाह जिले के दक्षिणी सिरे पर आजमगढ़ से सीधी रेखा में २० मील और सड़क द्वारा २८ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

वलीदपुर भीरा टोंस नदी के किनारे पर आजमगढ़ से १२ मील और मुहम्मदाबाद (तहसील) से डेढ़ मील दूर है यहां से घोसी, कोपागंज, मुहम्मदाबाद और आजमगढ़ को सड़कें गई हैं। यहां के जुलाहे अच्छा गाढ़ा बुनते हैं। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।